'ज्योतिष्मती' त्रैमासिक पत्रिका, माघ-फाल्गुन-चैत्र सं० २०३८ वि०

ज्योतिष्मती



सम्पादक व संचालक - हरदेव शर्मा त्रिवेदी

वार्षिक मूल्य १५/-रु०

इस अङ्कका मूल्य ४/-रु०

विषय-सूची

आवश्यक निवेदन

जो पुराने और नये ग्राहक गत २४वें वर्षके तीसरे अङ्कसे (अप्रैल ८१ से) वर्ष भरके लिए ग्राहक बने थे उनका वार्षिक मूल्य इस अङ्क २५/२ में समाप्त हो रहा है। उन्हें छपा मनीआर्डर-फार्म साथ भेजा जा रहा है—वे अपने आगामी चार अङ्कोंका वार्षिक मूल्य पन्द्रह रुपये शीघ्र भेज दें ताकि वैशाखसे आषाढ़ सं० २०३९ वि० तकका अङ्क उन्हें समय पर भेजा जा सके।

यह अङ्क निश्चित तिथि पौषी पूर्णिमा (९-१-८२) से दो सप्ताह पहले २८ दिसम्बरको प्रकाशित करके सब ग्राहकोंको भेजा जा रहा है। १ जनवरी ८२ तक सब ग्राहकोंके पास पहुँच जावेगा। डाक विभागकी गड़बड़से किसीको ९ जनवरी ८२ तक भी यह अङ्क न मिले तो तुरन्त पत्र लिखें, हम दूसरा अङ्क बेरंग भेज देंगे। १० जनवरी ८२ के बाद दुबारा नहीं मिलेगा।

'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' नये वर्षका स्थानीय पुस्तक विक्रेता या धर्मतत्त्व-प्रकाशन नई सड़क देहली—६ से प्राप्त करें। इस वर्ष सम्पादककी अस्वस्थता और प्रूफ आने जानेमें डाक विभागकी अव्यवस्थाके कारण पंचांग छापनेमें एक मासका विलम्ब हो गया। गत 'रजतजयन्ती अङ्क' अब किसी मूल्यमें उपलब्ध नहीं है। पचांग प्रेमी जिज्ञासू सज्जन शीघ्र खरीद लें अन्यथा विलम्ब करने पर 'रजतजयन्ती अङ्क' की भांति पञ्चाङ्गसे भी वञ्चित रहना पड़ेगा। —व्यवस्थापक

❀ श्री: ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)
अध्यक्ष—हिमाचल-प्रान्तीय विश्वहिन्दू-परिषद्, सोलन (हि०प्र०)

व्यवस्थापिका

श्रीमती गोविन्दी देवी एवं श्रीमती शिक्षा त्रिवेदी

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

Telegram—'Jyotishmati'

Telephone–696

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिः-शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १५१) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १५.०० पन्द्रह रुपये और एक प्रतिके ४.00 चार रुपये मात्र हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं—चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—
ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(माघ-फाल्गुन-चैत्र, दि० १० जनवरी से ८ अप्रैल ८२ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष २५ | सोलन, पौष शु० १५ शनिवार, सं० २०३८ वि० १९ पौष, शाके १९०३ (९ जनवरी १९८२ ई०) | संख्या २

सूक्ति-सुधा

तं देशकालौ शक्तिं च विद्यां चावेक्ष्य तत्वतः।
यथार्हतः संप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्तिषु ॥ (मनु० ७,१६)

समीक्ष्य स धृतः सम्यक्सर्वा रञ्जयति प्रजाः।
असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः ॥ (मनु० ७।१९)

(राजा) देश, काल, शक्ति और विद्याकी दृष्टिसे ठीक-ठीक विचार करके (पूर्व वर्णित) उस (दण्ड) को अन्याय करने वालों पर यथायोग्य उपयोग करे। (देश और कालादिके अनुसार) सोच-समझकर प्रयोगमें लाया हुआ वह (दण्ड) सारी प्रजाको प्रसन्न रखता है। बिना सोचे-समझे प्रयोगमें लाया हुआ (दण्ड) सारी प्रजाका सभी तरहसे विनाश कर देता है।

कितवान् कुशीलवान् क्रूरान् पाखण्डस्थांश्च मानवान्।
विकर्मस्थाञ्छौण्डिकांश्च क्षिप्रं निर्वासयेत् पुरात् ॥ (मनु० ९।२२५)

एते राष्ट्रे वर्तमानाः राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः।
विकर्मक्रियया नित्यं बाधन्ते भद्रिकाः प्रजाः ॥ (मनु० ९।२२६)

जुआरियों, चापलूसों, क्रूर, पाखण्डी, समाजविरुद्ध कर्म करने वालों तथा सुरापान करने वालोंको तत्काल अपने राष्ट्रसे निकाल देना राजाके लिए उचित है। (ऊपरके श्लोकमें वर्णित) ये मनुष्य राज्यमें रहते हुए छिपे चोर हैं। ये अपने कर्मोंसे सदा भद्र प्रजाको पीड़ित करते हैं।

सम्पादकीय विचार

राष्ट्र-चिन्तन

भारती-संस्कृति

(गताङ्कसे आगे)

सरस्वतीकी उपासनाके सम्बन्धमें भारतके महान् द्रष्टा की सत्यपूत वाणी है—

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ (ऋ० १।३।१०)

सरस्वती ज्ञानदेवी विद्या-माता पवित्र कारिणी है। बुद्धि, एवं अनेक बलों व शक्तियों की जननी है। हमारे वाणीके यज्ञको पूर्ण करे।

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनां।
यज्ञं दधे सरस्वती॥ (ऋ० १।३।११)

उत्तम भावनाओंकी प्रेरक सरस्वती देवी सुमतिको जागृत, उद्‌बुद्ध करने वाली माँ। हमारे वाक् यज्ञको पवित्र करे।

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति॥
(ऋ० १।३।१२)

विद्या एवं ज्ञानका अनन्त सागर लहरा रहा है, ज्ञान-विज्ञानकी विभिन्न धारायें प्रगति का मार्ग बना रही है। चेतना व उत्साहका जनक ज्ञान विश्वासका राज्य स्थापित करे॥

प्रणो देवी सरस्वती बाजेभिर्वाजिनीवती।
धीनामवित्र्यवतु॥ (ऋ० ६।६१।४)

नाना बलोंसे बलवती सरस्-वती! हमारी बुद्धियोंको बढ़ाओ, हमारे राष्ट्रकी अज्ञानसे रक्षा करो।

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि।
रदा पूषेव नः सनिम्॥ (ऋ० ६।६१।६)

हे सरस्वती! बलवानोंमें भी बलवान् पोषक-पालक पूषाके समान धन-धान्यसे हमें समृद्ध कर।

यस्या अनन्तो अह्रुतः त्वेष चरिष्णुरर्णवः।
अमश्चरति रोरुवत्॥ ऋ० ६।६१।८)

ज्ञान व विद्याका चल रहा वेगवान् अनन्त चक्र, वक्र-कुटिल धाराको छोड़ सरल सीधी धारा गहो। यह है अत्यधिक तेजवती और वेगवती भारत राष्ट्र और भारतीय जन शक्ति-मती ज्ञानसे हो शक्तिमान्॥

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वती तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वीर्यं दात्॥ (ऋ० १०·१७·७)

देव होनेके इच्छुक द्युलोकमें रहनेकी वांच्छा करने वाले सरस्वतीकी उपासना करें। ज्ञानका विस्तार एवं प्रसार सरस्वतीकी सहायतासे नानाविध यज्ञोंका निरन्तर विस्तार हो। शुभ कर्म सुकृत कार्योंका अनुष्ठान विद्या का सार्वत्रिक विस्तार करते हुए करें। ज्ञान-बल प्राप्त होने पर ही राष्ट्रमें एवं जनतामें सामर्थ्य और शक्ति बढ़ती है।

नीतिकारने कहा है—

विद्या ददाति विनयं,
विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति,
धनाद् धर्मः ततः सुखम् ।।

अपि च—

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य
निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
पश्य सिंह मदोन्मत्तः
शशकेन विनाशितः ।।

तक्षशिला उज्जैन (सुदामा-कृष्णकी ज्ञान-शाला) नासिक और कांचीके महान् विश्व-विद्यालय कालके गर्भमें क्यों समा गए ? दस-दस हजार छात्र जहां शिक्षा पाते थे, १०० आचार्य और १००० उपाध्याय (वृत्ति लेकर शिक्षकका काम करने वाले) जहां शिक्षा सत्र चलाते थे, वह विस्मृतिके गहरे अन्धकारमें क्यों विलुप्त हो गए ? क्या कभी हम इस पर भी विचार करेंगे ? विश्वविद्यालय विलुप्त हो गए । पर, ब्राह्मण धर्म (पौराणिक धर्म) सामान्य जनताके विद्या-प्रेमको नष्ट नहीं कर सका । ईस्ट इण्डिया कम्पनीको दीवानी मिलनेसे पहले कोई व्यक्ति निरक्षर नहीं था । सार्वत्रिक साक्षरता थी । यूरोपमें उस समय १७वीं शती तक निरक्षरताका साम्राज्य था । यहां प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क थी । शासनकी ओरसे यह व्यवस्था नहीं थी । यह जनताकी अपनी व्यवस्था थी । चिट्ठी-पत्री लिखना आना, १०० तक गिनती-पहाड़े, वृक्ष पर चढ़ना, घुड़-सवारी, तैरना, और सारे राष्ट्रमें पहाड़ पर चढ़ना आना आवश्यक था । ब्रिटिश शासनने इस देशको निरक्षर बना दिया । १८७७ में इस देशमें १ रु० का ४० सेर चावल बिकता था । काश्मीरमें वर्षा और हिमपातसे फसल नष्ट हो जाने पर लोग १०-१२ सेर चावल मांगते थे । ब्रिटिश शासन इस देशमें अकाल, दुर्भिक्ष और निरक्षरता लाया । उस शासनके अवशेष जब तक मिटाए नहीं जाते भारती संस्कृति भी तब तक वेगवती शक्तिमती और प्रसरण-शील न होगी ।

भारती आर्य जातिकी संस्कृतिका आधार भूमि एवं भूमि प्रेम था । पारस व ईरानकी फारसी संस्कृतिका आधार देश-प्रेम न था । इस वास्ते ईरानने इस्लामकी तलवारके आगे बौद्धोंके समान सिर झुका दिया और इस्लाम अंगीकार कर लिया । भारती संस्कृतिका आधार राष्ट्रप्रेम है, अतः भारत इस्लामके आगे सिर उठाए रही और हालीके शब्दोंमें कारडोबा (स्पेन) तक फैला इस्लाम संगम पहुंच कर गगामें रह गया ।

भारती संस्कृति सूर्यके समान तेजस्वी, सविताके समान उन्नायक, बलवर्द्धक और विजयशील हैं । वह पराजयकी कल्पना ही नहीं कर सकती । उसका जय घोष है—

इतो जयतो विजय संजय जय स्वाहा ।।
(अथर्व० ८।८।२४)

प्राची दिशामें बढ़ा पग विजय करता बढ़ता रहे । इसी प्रकार पश्चिममें हमारा विजय-पथ अप्रतिहत हो ।। उत्तर दक्षिण दिशाएं गूंजे भारती जनोंके जय निनादसे । दसों आशाओं-उपदिशाओंमें सर्वत्र विजयी हों भारत राष्ट्र महान् ।।

इस वास्ते सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् परमात्माके समान तेजस्वी वीर्यवान् बलवान् और

विजयी बननेकी प्रार्थना है—

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि॥
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि॥
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि।
सहोऽसि मयि धेहि॥

वैदिक प्रार्थना है—

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय॥

द्यावा-पृथिवी और चराचर जगत्की आत्मा सूर्य है। आदित्यकी उपासनाके मन्त्र हैं–
एते आदित्योपस्थान मन्त्राः भवन्ति –

विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः
प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः।
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवे दिवे
ज्योक् जीवाः प्रति पश्येम सूर्य!
(ऋ० १०।३७।७)

हम नीरोग सुमन सन्तानवान् हे सूर्य! तुझको प्रतिदिन उदय होता देखें। क्योंकि तू श्रेष्ठ मित्र है, हम प्राणधारी तुझको बार-बार देखें॥

महि ज्योतिः बिभ्रतं त्वा विचक्षण!
भास्वन्तं चक्षुषे चक्षुषे मयः।
आरोहन्तं बृहतः पाजसः परि,
वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य॥
(ऋ० १०।३७।८)

सम्पूर्ण विश्वको भली-भांति देखने वाले विशाल ज्योति-प्रकाश पुंज! आंखोंको सुखदायी प्राणी मात्रके लिए सुखकारक सूर्य! बलवान् सामर्थ्यवान् तुझको गगनमें चढ़ते-बढ़ते नित्य देखें। उदय होते हुए द्युलोक पर चढ़ते हुए तुझको बार-बार देखें॥

यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना
प्रचेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः।
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्य!
अह्ना अह्ना नो वस्यसा वस्यसा उदिहि॥
(ऋ० १०।८।९)

तेरा विश्व भरमें प्रकाश फैलने पर नर-नारी पशु पक्षी प्राणधारी यत्र-तत्र विचरते हैं। सूर्यास्तके बाद सब लौट आते हैं और अपने घरोंमें विश्राम करते हैं। स्वर्णिम केशों वाले स्वर्ण रश्मियोंसे संयुक्त सूर्य! सर्वदा निरावरण उदित हो। नित्य तू नए-नए रूपोंमें उदय हो। उदय होता तू हमको सुन्दर स्वास्थ्य दे।

शं नो भव चक्षसा शंनो अह्ना
शं भानुना शं हिमा शं घृणेन।
शं अध्वन् शम् असद् दुरोणे,
तद् सूर्य! द्रविणं धेहि चित्रम्॥
(ऋ० १०।३७।१०)

हमारी दृष्टिके लिए सुखकारी और शक्ति-वर्धक हो, दिन और रातमें कल्याणकारी हो। शीतकालमें एवं ग्रीष्म ऋतुमें हमारे लिए सदा सुखकी वर्षा करने वाला हो। हे सूर्य! तू हमें वह अद्भुत धन, उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर यात्रामें मार्गमें देश-विदेशमें घर-बाहर हम सुखी रहें, नीरोग रहें॥

एकः सुपर्णः समुद्रम् आविवेश
स इदं विश्व भुवन विचष्टे।
तं पाकेन मनसा अपश्यम् अन्तितः,
तं माता रेढि स उरेढिमातरम्॥
(ऋ० १०।१४।४)

सुनहरे पंखों वाला एक पक्षी सुनहरी किरणोंका जाल फैलाता सूर्य अन्तरिक्ष आकाश में प्रविष्ट हुआ गगनमें चमका।

सूर्य ! तूने समस्त भुवनोंको जग-मग प्रकाशसे भर दिया। एकाग्र मनसे और समीप से देखा भूमि माता उसको चाटती है, सूर्य पृथिवी माताको जल देता है, बदलेमें सूर्य भूमि माताको चाटता है रस खींचता है॥

आर्य जातिका जीवन यज्ञमय होता है। आदि पूर्वजने जीवनको यज्ञ-नौका कहा है। उस पर आरोहण कर, चढ़ कर जीवन-यात्रा विजय-यात्रा पूर्ण करनेके लिए कहा है। वह भावनापूर्ण महासागरोंको पार कर वसुधा पर राज्य स्थापित करने वाली अमर ऋषि वाणी है—

सुत्रामाणं पृथिवीं द्याम् अनेहसं,
सुशर्माणम् अदितिं सुप्रणीतिम्।
नावं स्वरित्राम् अनागसम्,
असुवन्तीम् आरुहेमा स्वस्तये॥

महासागरोंकी विश्व यात्रामें पूर्ण समर्थ भूमिके समान लम्बी-चौड़ी, द्यौके समान प्रकाशमान् सुन्दर, निर्दोष उत्तम रीतिसे बनी अखण्ड, टूटी-फूटी नहीं। दिनरात चप्पुओंसे चलने वाली, न रिसने वाली, यज्ञ-जीवन नौका पर हम सवार होते हैं।

नावका यह सुन्दर वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण न माना जाय। दूसरे बाजीराव पेशवाने १८१८ में आत्मसमर्पण किया, इससे एक साल पहले १८१७ में वाडिया गोदीने ब्रिटिश नौसेना के लिए फ्रिगेट शैपका जंगी जहाज बनाया। यह युद्धपोत दोनों महायुद्धोंमें लड़ा। आज यह ब्रिटिश नौसेनाके केडरोंको शिक्षा देनेके काम आता है। युद्धपोतका नाम ब्रिटिश कर दिया गया है। यह टीक या सागवान लकड़ी का बना हुआ है। इसकी पालिश (श्लेषा) किस रीतिसे तैयार की गई। यह अभी तक अज्ञात है। इतना सत्य है, सागरके पानीने १६४ साल बीतने पर भी युद्ध-पोतको खाया नहीं। यह युद्ध-पोत वीर्यवती बलवती विजयिनी भारती संस्कृतिका साक्षी है।

ब्रिटिश शासनने भारतीय नौ-निर्माण विद्या एवं नौ-विद्याका अन्त कर दिया। इस पर भी अंग्रेजीको बनाए रखनेका प्रबल आग्रह है। यह स्वाधीनता है या पराधीनता?

फलतः हम अपने आद्य पूर्वजोंको भूल गए और उनकी यह अमर सत्यवाणी भी विस्मृत हो गई—

वेदा यो वीनां पदम् अन्तरिक्षेण पतताम्।
वेद नावः समुद्रियः॥
(ऋ० १।२५।७)

जो गगनमें निवास करता हुआ अन्तरिक्ष व आकाशमें उड़ने वाले विहगाकार व्योम यानोंके मार्गको जानता है। जो समुद्रमें विचरता हुआ सागरोंके मार्गको जानता है।

वेद वातस्य वर्तनिम् उरोः ऋष्वस्य बृहतः।
वेदा ये अधि आसते॥
(ऋ० १।२५।९)

वह भूमिके चारों ओर वायुके घूमनेको जानता है। जो दूर तक फैली वायुको जो महान् प्रतीक्षा वाली और गुणोंसे बड़ी है जानता है। वह उनको जानता है, जो इस वायुमण्डलकी पहुंचसे ऊपर है और जहां सब लोक और तारागण रहते हैं।

स्पष्ट है रूसी और अमरीकी अन्तरिक्ष-वैमानिक उस लोक तक अभी नहीं पहुंचे जहां प्राचीन भारत पहुंचा हुआ था।

आज तो हम ऋषिके समान यही कह सकते हैं।

कदा क्षत्रश्रियं नरम् आ वरुणं करामहे।
मृडीकाय उरुचक्षसम्॥
(ऋ० १।२५।५)

कब हम इस क्षत्र-ऐश्वर्य सम्पन्न वीर वरुणका स्वागत करेंगे। वह वरुण जो सुख ऐश्वर्यदाता है और जिसकी विशाल दृष्टि सर्वत्र फैली हुई है। भारती संस्कृतिको गौ-संस्कृति भी कहते हैं। क्योंकि गौके तीन अर्थ प्रचलित हैं। गाय, गा-वाणी, वेदवाणी और पृथिवीको। भूमिके समान इस वास्ते गायको भी माता कहते हैं।

जो लोग अपनी भूमिकी, मातृ-भूमिकी रक्षा करनेमें असमर्थ हैं जिन्होंने भूमि माताके टुकड़े, खण्ड-खण्ड होते निर्विकार भावसे देखे वे जब गो-हत्या विरोधी कानून बनानेमें विघ्न डालते हैं तब सहसा कहाकविको यह उक्ति स्मरण हो आती है—

अल्पस्य हेतोः बहुहातुमिच्छन्,
विचार मूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥

गौ भूमि, माताकी प्रतीक है। यह बात महान् ऐतिहासिक महाकवि कालिदासके समय तक प्रसिद्ध थी। रघुवंशके दूसरे सर्गके पहले तीन श्लोकोंको पढ़नेसे गौके प्रति महाकविकी भक्तिका ही नहीं, प्रत्युत चतुःमहासागर व्यापी भारती साम्राज्यके प्रति कविकी जागरूकता भी प्रकट है। यथा—

अथ प्रजानामधिपः प्रभाते,
जाया प्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्।
वनाय पीतप्रतिबद्धवत्साम्,
यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥१॥

तस्या खुरन्यास पवित्र पांसु-
मपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी,
श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्॥२॥

निवर्त्य राजा दयितां दयालुः
तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयोधरीभूत चतुःसमुद्रां
जुगोपगोरूपधरामिवोर्वीम्॥३॥

अर्थात्—

यशोधन सम्राट् दिलीपने ऋषिकी गाय नन्दिनीको वन जानेके लिए छोड़ दिया। इससे पहले सम्राट्ने भरपेट दूध पीये बछड़े को फिर खूंटसे बांधा एवं साम्राज्ञी सुदक्षिणाने नन्दिनीकी चन्दन और मालासे पूजा की। साम्राज्ञी सुदक्षिणा, जो पतिव्रता, यशस्विनी नारियोंमें अग्रणी है, नन्दिनीके खुरोंसे उड़ी धूलिके पीछे-पीछे उसी प्रकार चलने लगी, जैसे श्रुतिके पीछे स्मृतियां चलती हैं।

दयालु राजाने यशस्विनी सुन्दरी अपनी प्रियतमा पत्नीको लौटा दिया। आपने गौरूप धरा पृथिवीकी, जिसके चार स्तनोंको चार महासागरोंके समान माना, सुरक्षाका भार सम्भाला।

महाकविने रघुवंश महाकाव्य लिखनेका एक कारण बताया है।

आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्म नाम् (१-५)

सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट् है और इन्द्रके मित्र हैं । यह है, भारती-संस्कृति जिसका विजयगीत इस मंत्रसे प्रारम्भ होता है ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो,
घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एक वीरः
शत सेना अजयत् साकमिन्द्रः ।।

भारत राष्ट्रका सेनापति बलवान् व पराक्रमी है इन्द्र । बुद्धिमान् कुशल और सर्वत्र व्यापक है । उत्तम सांडोंके समान उग्र शूरवीर व उत्साही है । इनके घोर प्रहारसे विश्व कम्पित है । इसको देख शत्रु चीख रहे और अपलक हैं । अद्वितीय अनुपमेय है जगमें महावीर, सहस्रों सेनायें आवें चढ़ यह अकेला वीर है समर्थ ।।

यह है, विश्व विजयी भारती-संस्कृति । क्या यह शत-शत बार वन्दनीय नहीं, इसमें भारत राष्ट्रकी अ श और उसका विश्वास निहित है ।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

सन् १९८२ विश्वमें अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न करेगा

प्रकृतिप्रकोप दुर्घटना दुर्भिक्ष युद्ध महामारीकी स्मरणीय घटनाएं

राष्ट्रपति रीगन, ब्रेझनेव और मुस्लिम राष्ट्रोंके प्रधान पुरुषों, वैज्ञानिकोंको अपघात

भारतीय गणतन्त्रका ३३वाँ वर्षलग्न

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

गतवर्षसे देशविदेशके कुछ ज्योतिर्विदों तथा-कथित तांत्रिकों और वैज्ञानिकोंकी सन् १९८२ में प्रलय या विश्व-विनाश जैसी भयंकर भविष्यवाणियोंसे श्रद्धालु जनता भयभीत है । इसका समाधान मैंने गतवर्ष अपने दोनों पंचांगों और 'ज्योतिष्मती' तथा गुजराती 'सन्देश प्रत्यक्ष पञ्चाङ्ग' में किया है । मेक्सिकोके एक विख्यात ज्योतिषी "अर्नाल्ड हेलर" ने भविष्यवाणी की है कि "१० जुलाई ८२ को परमाणु युद्ध प्रारम्भ होगा । यह युद्ध केवल १२ मिनट चलेगा । युद्धके बाद एशिया अफ्रिका यूरोप और आस्ट्रेलियामें कुल ७० हजार लोग जीवित बचे रह जायेंगे ।" इसका समाधान मैंने 'ज्योतिष्मती' के गत रजतजयन्ती अङ्कमें (अक्टूबर १९८१ में) पृष्ठ १९२–९३–९४ पर किया है । उक्त ज्योतिषीने यह भविष्यवाणी भी की थी कि–"१० जुलाई के प्रलय तक मैं जीवित नहीं रहूंगा । १९८१ में हार्टफेलसे मर जाऊंगा ।" परन्तु आज १५ दिसम्बर ८१ तक तो हेलर साहबके मरनेकी कोई सूचना नहीं है । अब सन् ८१ के शेष १५ दिनमें यदि उनका हार्टफेल हो जावे तो भगवान् जाने ।

१५ वर्ष पहलेकी भविष्यवाणी

ये विदेशी ज्योतिर्विद तो विश्वयुद्धकी भविष्यवाणी अब तीन चार वर्षोंसे करने लगे हैं, परन्तु भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके आधारसे मैंने आजसे १५ वर्ष पूर्व सं० २०२४ वि० (१९६७ ई०) के 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' में पृष्ठ २० पर 'युद्ध अनिवार्य है" शीर्षकसे एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी । पाठकोंके स्मरणार्थ उक्त भविष्यवाणी यहां पुनः उद्धृत की जा रही है—

"………सन् १९८० के आसन्न (लगभग) संसारमें विश्वयुद्ध भड़क उठेगा । विश्व शान्तिके सभी प्रयत्न विफल होंगे । हमारे शस्त्रोंकी धार तेज रहनी चाहिए । आवड़ीमें पैटन टैंकोंसे बढ़चढ़ कर टैंक तैय्यार हों, नाट और हण्टर जेट, सेवर जेट विमानोंके समकक्ष ही नहीं उनसे बढ़चढ़कर हों । पश्चिमसे बुद्धि उधार न लें । अपनी बुद्धिसे सोचें ।" ………हमारे उक्त विचारकी पुष्टि सन् १९८२ से आने वाला तुला-वृश्चिक धनुः राशिका शनि कर रहा है । आगामी सं० २०३९ आश्विन कृ० ३ मंगलवार ५ अक्टूबर १९८२ को शनि तुलाराशि में प्रवेश करेगा । ५ नवम्बर ८२ को तुला राशिमें शनि प्लुटोकी युति होगी । सं० २०४१ पौष कृष्णा १३ गुरुवार दि. २० दिसम्बर १९८४ को शनि वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा और आगे सं० २०४४ पौष कृ० १० बुधवार दि. १६ दिसम्बर १९८८ को धनुः राशिमें प्रवेश करके सं० २०४६ चैत्र कृष्णा १० गुरुवार दि. २२ मार्च १९९० ई० तक इसी अग्नितत्वात्मक धनु राशिमें रहेगा । तुला वृश्चिक धनुः राशिका शनि संसार में युद्ध, महामारी, दुर्भिक्षादिसे प्रजाको पीड़ित करने वाला है । यथा—

तुला वृश्चिकचापेषु
यदा याति शनैश्चरः ।
त्रिभागशेषा पृथिवी
मांसशोणितकर्दमैः ॥

यों तो प्रत्येक ३० वर्षोंके बाद शनि उक्त राशियोंमें भ्रमण करता । किन्तु, कुम्भ युगमें शनि-यूरेनस-नेपच्यून का युद्ध शताब्दियों बाद जब युद्धकारक अग्नितत्व राशिमें आता है तब "त्रिभाग शेषा पृथिवी मांसशोणितकर्दमै" उक्ति चरितार्थ होती है । निष्कर्ष यह है कि यदि १९८२ तक विश्वके बड़े मदान्ध राष्ट्र रूस, अमेरिका, चीन आदिने भारत के विश्वकल्याणकारी आदर्शको मानकर घातक शस्त्रास्त्रोंकी होड़ समाप्त न की

तो आगे विश्वशान्तिके सभी प्रयत्न निष्फल होंगे और धनुःराशिके शनिमें विश्वविनाशक तृतीयमहायुद्ध फूट पड़ेगा। ईश्वर आसुरी शक्तिसम्पन्न राष्ट्रोंको सद्बुद्धि दे।"

गणतन्त्रका ३३वां वर्षलग्न

प्रकृतिप्रकोप दुर्घटनाका भीषण आतङ्क

नये वर्ष स० २०३६ वि० की वर्षलग्न जगल्लग्न कुण्डली और भारतीय गणतन्त्रके ३३वें वर्षलग्नकी ग्रहस्थिति पर सम्यक् विचार करनेसे प्रतीत होता है कि यह वर्ष समस्त संसार और भारतके लिए अभूतपूर्व रोमाञ्चक घटना-कारक सिद्ध होगा। स्थानाभावके कारण यहां वर्षलग्न जगत्-लग्न कुण्डलियां न देकर केवल भारतीय गणतन्त्रके ३३वें वर्षकी कुण्डली दी जा रही है, जो दि. २६ जनवरी मंगलवार १९८२ ई० को भा० स्टे० टा० १५।१२ (इष्ट घटयादि १९।५१) पर मिथुन लग्नमें प्रवेश होगा।



लग्नसे पंचम तकके अधिपति बु. चं. सू. शु. अष्टममें षष्ठेश अष्टमेश मंगल शनिसे दृष्ट हैं। मंगल शनिका इत्थशालयोग भी बन रहा है। यह योग भारतके लिये सुखशान्ति समृद्धि-कारक नहीं है। राजनैतिक गतिरोध, मन्त्रि-मण्डलोंमें उलटफेर, आर्थिक सामाजिक साम्प्र-दायिक असन्तोष और प्रकृतिप्रकोप, पार-स्परिक अविश्वास, अनैतिकता, भ्रष्टाचारसे वर्षभर प्रजा पीड़ित रहेगी। केन्द्र और प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंमें उलटफेर होगा। ३ महामानवों का जीवन संकटग्रस्त होगा। ३ दिसम्बर १९८१ से २२ जुलाई ८२ तक कन्याराशिमें मंगल साढ़े सात मास तक शनिके साथ रहेगा।

कुछ विद्वान् भारतकी कन्या राशि मानते हैं, राजधानी दिल्ली और भारत पर वृषभ मकर कन्या राशिस्थ शुभाशुभ ग्रहोंका प्रभाव विशेष रूपसे पड़ता है। अभी दिसम्बरके प्रारम्भमें ३ दि. को मंगलने शनिके साथ कन्यामें प्रवेश किया और ४ दिसम्बरको दिल्ली की ऐतिहासिक कुतुबमीनारमें अभूतपूर्व रोमांचक दुर्घटनामें ४५ के प्राण गये। इसके दो दिन बाद अहमदाबादके भीषण अग्निकाण्ड में जनधनका भारी विनाश हुआ। ११ दिसम्बर को दिल्लीके समीप यमुनामें बस गिरनेसे ३० व्यक्ति मरे। यह सब मंगल शनिका दुष्प्रभाव नहीं तो क्या है। अभी देखिये आगे-आगे क्या होता है। इसी कालावधिमें अमान्त मार्गशीर्ष मासमें ५ शनिवार, पौषमें ५ रविवार और माघमें पांच मंगलवार हैं, ये विश्वमें–विशेषकर पश्चिमी एशिया और अमेरिकामें भूकम्प दुर्भिक्ष ज्वालामुखी स्फोट युद्ध महामारी और ईशानकोण (पूर्वोत्तर) में किसी देश भङ्गके द्योतक हैं। यथा—

शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभङ्गश्च वन्हिदाहो महार्घता॥

२१ फरवरीसे ११ मई ८२ तक कन्या राशिमें मंगल शनि दोनों ग्रह वक्री रहेंगे, ये संसारमें युद्ध विग्रह प्रकृतिप्रकोपादिसे जनधन हानिकारक लिखे हैं। यथा–

कन्यायां मीन सिंहे धनुषि च यदा वक्रगौ भौममन्दौ।
पृथ्वीशाः क्रूररूपा बहुरिपु दलिता विग्रहश्चैव पीड़ा॥

भारतीय गणतन्त्रका पूर्वार्ध (२६ जुलाई तकका समय) कठिन कसौटीका है। उग्र आन्दोलन, दुर्घटनाएं एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। शासनतन्त्र किंकर्त्तव्यमूढ़ स्थितिमें होगा। एकदूसरेके दोष अनावृत करनेकी होड़ लगेगी। आगामी वर्ष सं० २०३९ वि० में पौष क्षयमास है और द्वि० आश्विन कृष्णपक्ष १३ दिनका है, ये दोनों योग विश्वसंकटके द्योतक हैं। किसी राष्ट्रका युद्ध भूकम्पादि से भारी विनाश होगा। जुलाई मासमें शनि-मंगल और मंगल-प्लुटोका युद्ध और सूर्य-राहु शुक्र-राहुकी युति होनेसे यह मास विश्व भरके लिए अभूतपूर्व युद्ध प्रकृतिप्रकोप प्रज्ञापराध दुर्घटनाओंके लिए रोमाञ्चक सिद्ध होगा। शास्त्रकारोंने लिखा है—

"यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः।
भवेल्लोकक्षयोघोरो मुण्डमालायुतार्महि॥
क्षयमासो भवेद्यस्मिंस्तस्मिन्वर्षेऽतिविग्रहः।
दुर्भिक्षं वाऽथवा पीड़ा राष्ट्रभङ्गं करोति वै॥"

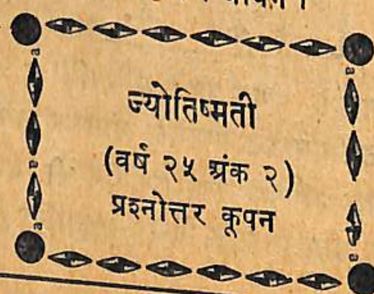
महाभारत युद्धसे पूर्व भी १३ दिनका पक्ष और शनिका रोहिणी शकट भेदादि कुयोग बने थे। अब इस दशकमें सन् १९८३ से ९० तक एक बार पुनः अनार्य म्लेच्छ यवन राष्ट्रों में महाभारतका दृश्य उपस्थित होगा। १९८५ से आगे भारत उत्तरोतर विशेष प्रगति करेगा। विस्तृत विवेचन 'श्रीविश्व-विजयपञ्चाङ्ग' में देखिये।

'ज्योतिष्मती' प्रश्नोत्तर कूपन

विगत २३वें वर्षसे ग्राहकोंके लाभार्थ यह योजना प्रारम्भ की गई है। इससे अनेक पाठकों ने लाभ उठाया उसका संख्या विवरण गत 'नववर्षाङ्क' में दिया जा चुका है।

एक कूपन पर एक प्रश्नका उत्तर बन्द लिफाफेमें भेजा जाता है। उत्तरके लिए ३५ पैसेका पता लिखा लिफाफा या डाक टिकट और नीचे दाहिनी ओर छपा कूपन काटकर नीचे बाँई ओर छपे जोधपुरके पत्ते पर भेजें। नित्य अनेकों प्रश्न-कूपन आते हैं, उन सबका तत्काल उत्तर नहीं दिया जा सकता। एकसे डेढ़ मास तक प्रश्नकर्ताको अपने उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। इस अङ्कके कूपन १५ फरवरी ८२ तक स्वीकार किये जावेंगे।

प्रश्नोत्तर कूपन भेजनेका पता—
पं० श्री अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
(ज्योतिष्मती-प्रश्नोत्तर विभाग)
पं० मानचन्द मार्ग, पूंगलपाड़ा,
जोधपुर (राजस्थान)



आगामी क्षय अधिमासमें घोषित सरकारी छुट्टियां मान्य नहीं

[आगामी वर्ष सं० २०३९ वि० (१९८२-८३ ई०) के दशहरा दीपावली आदि प्रमुख त्यौहारोंके अवकाश दिन (छुट्टियां) भारत सरकारने अपने कलकत्ता स्थित पोजीश्नल-एस्ट्रानामी सेण्टर द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी पंचांगके अनुसार घोषित कर दी है—उसका सर्वत्र विरोध हो रहा है। केन्द्रीय सरकारको अ०भा० ज्योतिषपरिषद, और श्रीसनातन धर्मप्रतिनिधिसभा पंजाबने इस सम्बन्ध में विरोधपत्र भेजे हैं। मरुधरा ज्योतिर्विज्ञानपरिषद्के अध्यक्ष और मंत्रीने एक संयुक्त प्रेसविज्ञप्ति निकाली है जो राजस्थानके कई पत्रोंमें प्रकाशित हुई है—उसे हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं–सम्पादक]

मरुधरा ज्योतिर्विज्ञान परिषद्, जोधपुरके अध्यक्ष ज्योतिषी पं० शिवनारायण दवे तथा मन्त्री पं० अमरचन्दने एक संयुक्त वक्तव्यमें आगामी संवत् २०३९ (सन् ८२-८३) में भारत सरकारके कलकतास्थित पोजीश्नल एस्ट्रानामी सेण्टर द्वारा प्रकाशित सन् १९८२ के इण्डियन एस्ट्रानामीकल एफेमेरीजके अनुसार जो प्रमुख त्योहारोंकी तिथियां घोषित की है उन्हें अमान्य ठहराया है। इन तिथियों के प्रमाणमें कोई शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत नहीं किये हैं। श्री दवे व अमरचन्दने इस सम्बन्ध में कुछ शंकाएं प्रकट कर उनके स्पष्टीकरणकी मांग की है। उनका कहना है कि जो स्थिति इस बार हो रही है ठीक वही स्थिति तीन सौ वर्ष पूर्व संवत् १७३८, एक सौ साठ वर्ष पूर्व संवत् १८७९ व एक सौ इकतालीस वर्ष पूर्व संवत् १८९८ में आई थी। उपलब्ध पंचांग साक्षी हैं कि उपरोक्त तीनों वर्षोंमें द्वितीय आश्विन शुक्लमें नवरात्रि व दशहरा तथा कार्तिक कृष्ण अमावसको दीपावली सम्पन्न हुई थी। जब स्थिति वही है तो इस बार प्रथम आश्विन शुक्लमें नवरात्रि व दशहरा तथा द्वितीय आश्विन कृष्ण अमावसको दीपावली क्योंकर होगी? क्या हमारे पूर्वज गलत थे जो आज उनका मत स्वीकार नहीं किया जा रहा है।

१६ अक्टोबर ८२ द्वितीय आश्विन कृष्ण अमावसको जो दीपावली घोषित की गई है उस दिन सूर्य कन्या राशि पर ही रहता है। प्रश्न यह है कि तुला संक्रान्तिके बिना भी क्या कभी दीपावली हुई है। अगर हुई है तो कब? और नहीं हुई है तो अबकी बार यह क्यों और कैसे?

गत २५ जुलाईको अहमदाबाद वेधशाला में इसी प्रश्न हेतु अखिल भारतीय पंचांगकर्ता सम्मेलन हुआ था। मारवाड़का प्रतिनिधित्व चण्डू पंचांगकर्ता पं० सूरजराजजी जोशी एवं बालोतराके पंडित श्री पृथ्वीराजजी द्विवेदीने किया। इस सम्मेलनमें नाटीकल-सम्पादक भी उपस्थित थे। वहां सर्वसम्मतिसे यह निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष द्वितीय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (१७-१०-८२) को नवरात्रि, शुक्ला दशमी (२७-१०-८२) को दशहरा व कार्तिक अमावस (१५.११.८२) को दीपावली मनाई जाय। इस सर्वसम्मत निर्णयकी अव-

हेलना क्यों कर की गई है ?

श्री दवे और अमरचन्दका कहना है कि पोजीशनल एस्ट्रानामी सेण्टर केवल शुद्ध ग्रह स्थिति बता सकता है। धार्मिक त्योहार निर्धारणका उसे अधिकार नहीं। विवादास्पद विषयों पर धर्माचार्योंकी सम्मति ही प्रधान होती है। इन धार्मिक त्योहारों हेतु पूज्य श्री करपात्रीजी महाराज व चारों पीठोंके जगद्गुरु शंकराचार्यों तथा अन्य धार्मिक पर्वोंके लिए सम्बन्धित धम-प्रधानाचार्योंका मत प्राप्त करना क्यों जरूरी नहीं समझा गया ? क्या सरकारी अंग्रेजी पंचांगके विधाता श्री ए० वंद्योपाध्यायजी अपनेको सब धर्माचार्योंके ऊपर मानते हैं, जो उन्होंने बिना किसी धर्माचार्योंकी सम्मतिके अपना निर्णय घोषित कर दिया। अतः सरकार इस विषय पर पुनः विचार कर धर्माचार्योंकी सम्मतिसे अपने निर्णय में उचित संशोधन करें।

एक अनन्य मित्र कमठ विद्वान्को श्रद्धाञ्जलि

ये पंक्तियां अत्यन्त दुःखके साथ लिख रहा हूं। अभी-अभी यह दुःखद सूचना मिली कि राजस्थान संस्कृत-विद्यापीठ भीलवाड़ाके संस्थापक पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्रीका ५-१२-८१ को देहावसान हो गया। पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री मेरे परम स्नेही बालमित्र कर्मवीर सहृदय सज्जन थे। हम दोनों एक ही भीलवाड़ा-मण्डल मेवाड़के निवासी स्वजातीय बन्धु आजसे ५६ वर्ष पूर्व पठनार्थ उज्जैन पहुंचे थे। मैंने सान्दीपनवंशावतंस सिद्धान्तवागीश ज्योतिषाचार्य श्रीनारायण गुरुदेव (स्व० पद्मभूषण डा० सूर्यनारायण व्यासके पिताश्री) की बड़े गणेश स्थित राजकीय ज्योतिष पाठशालामें अध्ययन प्रारम्भ किया और चन्द्रशेखरजीने उज्जयिनी रामघाट स्थित श्रीगजाधर संस्कृत पाठशालामें सुप्रसिद्धव्याकरणाचार्य पन्नालालजी शास्त्रीके संरक्षण में पढ़ना प्रारम्भ किया। चन्द्रशेखरजी नित्य ही सहपाठियोंके साथ सायंकाल महाकाल दर्शनार्थ आते तब भेंट हो जाती थी। उन्हीं दिनों पंजाबसे एक प्रतिभावान् छात्र भी ज्योतिषाध्ययनके लिए उज्जैन आकर उक्त राजकीय-ज्योतिष-पाठशालामें प्रविष्ट हो गये, ये हैं—कुराली पंजाबके सुप्रसिद्ध राजज्योतिषी वयोवृद्ध विद्वान् श्रद्धेय मुकुन्दवल्लभजी। इन पंडितजीसे मेरा कुछ ऐसा जन्मान्तरीय स्नेहसम्बन्ध हो गया था कि उज्जैनके बाद मैं भी उनके पास अध्ययनार्थ जयपुर पहुंच गया और वहाँसे वि० सं० १९८३ वि० (१९२६ ई०) में कुराली पहुंचकर श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग प्रकाशन कार्यमें जुट गया। इसके उपरान्त जब कभी स्वदेश (मेवाड़) जाने पर बालमित्र चन्द्रशेखरजी शास्त्री मिलते तो यही उपालम्भ देते थे—"हम स्वदेशी मित्रोंको छोड़कर आप पंजाबी मित्रके पास चले गये।" परन्तु मैं तो अब अपने सन्मित्र शास्त्रीजीकी आत्माको उपालम्भ दूंगा कि मैं तो पंजाब जाकर भी आपसे यदाकदा मिल लेता था, पर आप तो अब बिना कहे ऐसी महायात्रा कर गये कि कभी नहीं मिल पावेंगे "ते हि नो दिवसा गताः।"

शास्त्रीजीके सुपुत्र (डा० शिवकुमार श्यामकुमार इन्द्रकान्त त्रिवेदी) सर्वथा सुयोग्य प्रतिभासम्पन्न हैं। डा० शिवकुमार त्रिवेदीने साहित्यिक सामाजिक एवं पत्रकारिताके क्षेत्रमें अच्छा यश प्राप्त किया है। ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे समस्त दुःख-सन्तप्त परिवारको स्नेह सान्त्वना और उस दिवंगत दिव्यात्माको श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित है। —ह० श० त्रिवेदी

नये वर्षकी देशविदेश सम्बन्धी भविष्यवाणी

[लेखक :—श्री पं० हरिदेव द्विवेदी राजज्योतिषी]

[यह लेख एक अभिनव युवा ज्योतिषीका हमारे पास प्रकाशनार्थ आया है। इन्होंने अपनी अनेक भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध होनेका दावा किया है। यद्यपि लेखकसे हमारा पूर्व परिचय नहीं है। इनका नाम भी पहली बार देखनेमें आया। जो भविष्यवाणियां इन्होंने लिखी हैं—उनमें अधिकांश वैसी ही हैं, जैसी भारतीय ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों एवं अमेरिका और यूरोपके ज्योतिर्विदों सन्त योगियोंकी पत्रोंमें छप चुकी हैं। भविष्यवाणियोंके साथ ग्रह योगायोगका कोई उल्लेख नहीं है। तथापि हमने हर उत्साही अध्ययनशील नवयुवक शास्त्राभ्यासी व्यक्तिको प्रोत्साहन दिया, इस दृष्टिसे इनका यह लेख यहां प्रकाशित कर रहे हैं। यदि पाठकोंको रुचिकर लगा तो आगामी अङ्कोंमें इनके लेख और पूरा परिचय प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक]

१९८२ में विश्वमहायुद्धका कोई योग नहीं है। १९९५ से २००० के करीब विश्व-महायुद्ध होगा जिसमें सात दिनका अणु युद्ध होगा। विश्वमहायुद्ध पश्चात् विश्वमानव आबादीके ४०-५० करोड़ मानव शेष रहेंगे। सन् २००० ई० पश्चात् २०० वर्षके लिये प्राचीन क्षत्रिय चक्रवर्ती राज्य शुरु होगा। इसी राज्यमें सतयुगके चिह्न प्रकट होंगे। सर्वत्र गोभक्ति होगी। माता-पिता-विप्र-गुरुजनोंका पूजन होगा, एवं राम-शिव-कृष्ण-गणेश जगदम्बा एवं हनुमान्के भक्तोंमें वृद्धि एवं मन्दिरोंकी परम्परा बढ़ेगी। नृपति राज्य इन्द्रप्रस्थ (देहली) में शुरु होगा एवं हिमालय गंगोत्रीके परम पावन प्रदेशसे सन्त-ऋषिगण-राज्याधिकारी सूर्य-क्षत्रि वंशी वीरशासक तपस्वी राजपुरुषको साथ लेकर पधारेंगे एवं उन्हें चक्रवर्ती राज्यपद प्रदान करेंगे। इक्कीसवीं सदीके आरम्भकाल से सत्यसनातन धर्म विश्वमानवका एक मात्र मानवीय धर्म होगा।

१९८२ में कई देशोंमें पारस्परिक गृहयुद्ध एवं खूनी कांड, बाढ़-भूकम्प-दुर्भिक्ष, महामारीसे जनधनकी हानि होगी। प्रकृति अपना रूप बदल लेगी एवं बहुत सी यान दुर्घटनाएं होंगी। १० जुलाई सन् १९८२ से १५ नवम्बर १९८२ के बीचमें १०-२० लाख जनोंकी हानि होगी। देश एवं विदेशके सत्ताधारियोंको ग्रहण लगना शुरु हो जायेगा—जिससे सरकारके विरुद्ध रेलियां एवं कर्मचारियोंमें असंतोष सारे संसार में बढ़ जायेगा। मँहगाई एवं बेकारी उग्र रूप धारण कर लेगी। भारतमें प्रजा सरकारके बिरुद्ध हो जायेगी, ऐसे हालात बिगड़ जायेंगे-जिससे सरकारकी नीति खोखली हो जायेगी। एवं पुलिसका पूर्ण नियन्त्रण न होगा। ऐसी स्थितिमें सरकार आपात स्थिति जैसे कानून बनावेगी, एवं सख्तीसे कार्य लिया जायेगा।

आसामकी समस्या हल न होगी एवं सुलगती हुई आग पूर्ण रूपसे भड़कती रहेगी। सन् १९८२ में भारत एवं पाकका युद्ध होगा उसमें पाकका सर्वनाश होगा। सन् १९८३ से १९८५ के करीब भारतमें नवीन आविष्कार

होंगे तथा अन्तरिक्षमें नवीन उपग्रह छोड़ा जायेगा, जिसमें पूर्ण सफलता होगी। पाक, बंगला देश, ईरान - ईराक- अफगानिस्तान रूस-अमेरिका लंका एवं मुस्लिम राष्ट्रोंका सर्वनाश होगा। अमेरिकाके नवीन राष्ट्रपति रीगन पूर्ण राज्य न कर पायेंगे, यह वर्ष उनके लिये शस्त्रसे आघात कराने वाला होगा। चीनके प्रधान मंत्री हुआको पद छोड़ना पड़ेगा, एवं १९८२ में नवीन प्रधानमन्त्री बनेगा।

पाकमें गृहयुद्धके पश्चात् जनरल जियाका पतन होगा एवं पाक तीन स्थानोंमें बदल जायेगा। बेगम नुसरत भुट्टो पाककी बड़ी नेता बनेगी। इगलैंडमें भी अव्यवस्था फैल जायेगी। जिस कारण श्रीमती मारग्रेट थैचर अपने कुछ स्कैण्डलोंके कारण पद त्याग देगी।

पता—१३१ बी. अर्जुननगर, नई दिल्ली

श्रीहर्षका आगमशास्त्रीय वैभव एवं उनके

चिन्तामणि मन्त्रका स्वरूपान्वेषण (२)

[डा० शशिधर शर्मा वाचस्पति (डी० लिट्) प्राध्यापक पंजाब विश्वविद्यालय
श्रीसाहित्यसुधासदनम्, ई० २८ सेक्टर १४, चण्डीगढ़ १६०१४]

(गताङ्कसे आगे)

अन्य अनुपपत्ति—

इस प्रकारसे प्रणवपुटित माया बीजकी चिन्तामणि सरस्वती मन्त्रतामें प्रामाण्य सन्देह का हेतु कोई एक ही नहीं। उपसंहारसे पूर्व नारायणने 'सकलं' पदके आधार पर 'क्लीँ' को मध्यबीज मानते हुए प्रणव-पुटित इस कामराज बीजकी चिन्तामणि सरस्वती मन्त्ररूपता द्योतित की है।[1] प्रमाण कोई नहीं दिया। इससे एक दूसरे ही सन्देह को जन्म मिलता है कि प्रणवगर्भित माया (ह्रीँ) बीज को सरस्वतीका चिन्तामणि मन्त्र माना जाए या कामराज (क्लीं) को। पूर्ववर्ती किसी आचार्यने यह पक्ष नहीं रखा। अतः लगता है कि आगम वचनकी अपेक्षित चिन्ता किए बिना, केवल 'सकलम्' पदके आधार पर नारायण पण्डितने यहां 'क्लीँ' मध्यताकी कल्पना कर ली है। ऐसे ही पूर्ववर्ती आचार्यों ने भी श्रीभुवनेश्वरी मन्त्रके उपसंहारमें सामान्य रूपसे प्रयुक्त–'जगन्मातुः सरस्वत्या रहस्यं परमं मतम्' इस वचनसे भ्रान्त होकर श्रीभुवनेश्वरीके चिन्तामणि मन्त्रका ही प्रकृत पद्यमें 'उद्धार' सिद्ध कर दिया। शुद्ध सारस्वत चिन्तामणि मन्त्रके रूपमें प्रणव गर्भित माया या काम बीज वाला मन्त्र अब तक पर्याप्त अन्वेषणसे लब्ध नहीं हो पाया है।

सम्प्रदायलोप और टीकाओंका महत्त्व—

बात ऐसी प्रतीत होती है कि जिस प्रकार अनेक सिद्ध वैद्योंके अमोघ नुस्खे उनके साथ ही चले जाते हैं, कई बार तो—'अन्तिम समय में अपने शिष्य या पुत्रको इसे बताएंगे' ऐसी

१—नैषधीयप्रकाश पृष्ठ ४४८

पटनाकी नै० पाण्डुलिपि और 'नैषध काव्यमन्त्रोद्धार'।

डा० जानीने इस पर लिखा—It will be clear from this that according to this explanation, the formula is not ॐ ह्रीं ॐ, but ॐ क्लीं ह्रीं, which is given by the Chandu Pandit also, as one of the alter native explaynations (vide Prof. Handiqni p. 441)–"Critical Study of sriharsa's Naisadhiya Charitam PP. 7, p.17)

पर ध्येय रहे कि चाण्डूपण्डितने ॐ क्लीं ह्रीं को चिन्तामणि मन्त्रका विकल्प नहीं, अपितु यन्त्रके अन्दर लेख्य भर बताया है—'अयमभिप्रायः षट्कोणयन्त्रमध्ये पूर्वं प्रणवस्ततः, क्लीं ह्रीं।

धारणा बनाए हुए वैद्यराज पुत्र या शिष्यकी अनुपस्थितिमें ही परलोकका निमन्त्रण पाकर अपनी अतुल कीर्ति और भूतिके आधारभूत योगोंको अपने साथ ही लेजानेको बाध्य होते देखे जाते हैं। इसी प्रकार श्रीहर्ष अपने इस महान् मन्त्रको किसी अधिकारी पुत्र शिष्यको समर्पित करनेसे पूर्व ही ब्रह्मीभूत हो गए। इधर, टीकाकार कोश काव्य—व्याकरण आदि विद्याओंके पारङ्गत थे ही। अपने प्रतिभा-वैभवसे जो जो अर्थ उन्होंने समझे सिद्ध कर दिए। उक्त विद्याए इतनी अनन्त और अनेक-विध हैं कि किसी भी पदवाक्यका कुछ भी अर्थ कर देना कठिन नहीं। यह दूसरी बात है कि सत्य और कृत्रिम स्वर्णको स्वर्णकार दूरसे ही जैसे पहिचान लेता है, वैसे ही परीक्षक, इन अर्थोंकी काल्पनिकता और साहजिकताको सहज पहिचान लेते हैं। पर सामान्य जनके तो वशकी बात नहीं। भामतीकारने तभी तो लिखा था—परीक्षकाः खल्वेवं विवेचयन्ति, न प्रतिपत्तारः।[1] कुछ सौ वर्षोंके भीतर ही 'नैषधीयचरितम्' में जो पाठभेद होगए[2] वे सम्प्रदाय विलोपकी ओर ही इंगित करते हैं। प्रकृतपद्यमें ही एक अर्थको एक-एक पदसे निकालता है तो दूसरा दूसरेसे। 'ई' की प्राप्ति कोई 'वामा' पदं से कर रहा है, कोई 'हरमयं' के 'य' से तो कोई सेन्दुसे। श्रीहर्षके दूसरे पद्योंमें इस प्रकारकी शब्दक्रीड़ा तो समझमें आ सकती है, पर मन्त्रनिरूपण तो संशय और विपर्यासकी सीमाओंसे परे रखकर ही किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि आगमोंमें मन्त्रनिरूपण सदा साङ्केतिक शैलीमें ही किया जाता है, पर उस शैलीके अनुशीलकोंके लिए वह पूर्ण निश्चित हुआ करता है। पर जब कि इन टीकाओंमें—यहां तक कि एक-एक टीकामें भी तो एक आध पदार्थकी बात नहीं, पूरा मन्त्र ही अनेक रूपोंमें दिया गया है।[3] अतः टीकाकारों पर इस विषयमें अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता।

किन्तु, फिर भी हमारी दृष्टिमें टीका-कारोंकी आदरणीयतामें अन्तर नहीं आता। सम्प्रदाय लुप्त था—और ग्रन्थ गूढ़ ग्रन्थियोंसे भरा हुआ। अतः उन ग्रन्थियोंको अपनी बुद्धि-भर खोलनेका उन्होंने प्रयास किया और आगे के लिए कुछ न कुछ मार्ग दर्शन भी। भ्रम और प्रमाद तो मनुष्यका धर्म हैं। हां, विप्रलिप्सा नहीं होनी चाहिए। उससे ये विज्ञवर विदूर हैं। रही बात सर्वज्ञताकी, उसका तो मीमांसक

१—ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य पर भामती।

२—A Critical study of Sri harsa's Naisadhiyacharitam.

३—सिंहावलोकनन्याय स्मरणीय है कि आदि टीकाकार विद्याधरके अनुसार मन्त्रका स्वरूप है 'ॐ ह्रीं' 'प्रणवपूर्वको ह्रींकारो भवति'। आगे यह प्रणव सम्पुटित ह्रीं—ॐ ह्रीं ॐ" बताया गया। पर चाण्डू पण्डितने यन्त्रके भीतर लेख्य मन्त्रका स्वरूप इसी पद्यसे ॐ क्लीं ह्रीं बनाया, जिसे नैषधीयप्रकाशकारने एक रूपमें ॐ क्लीं ॐ ऐसा मानकर जिज्ञासुओंको संशयान्धकारमें डाल दिया। मल्लिनाथ और नारायणने तो प्रकृतपद्यकी व्याख्या करते हुए पौर्वापर्य्यको बिल्कुल ही भुला दिया।

पूर्णतः निराकरण कर चुके हैं। सारांश इनका उपादेय अंश अवश्य स्वागताई हैं—

सारस्वत चिन्तामणिमन्त्रकी लब्धि—

जैसा कि हमने उपक्रममें देखा है चिन्तामणिमन्त्र वैदिक अवैदिक दोनों प्रकारके अनेक उपलब्ध होते हैं। वैदिकोंमें भी शिव विष्णु इत्यादिके चिन्तामणि मन्त्र भी हैं और नारायणके समयमें अन्य टीकाकारों द्वारा इस पद्यके अर्थ रूपमें वे दिखाए भी गए थे—यह नारायणने स्पष्ट ही लिखा है।[1] भुवनेश्वरी चिन्तामणिमन्त्र, मल्लिनाथ और नारायणका लिखा है ही। पर, वह कौन चिन्तामणि मन्त्र कौनसा है—जिसके प्रसादसे श्रीहर्षने 'नैषधीय चरित' का निर्माण किया और जिसकी देवता सर्वात्मना भगवती सरस्वती हों—इस बातकी ललक बनी ही रहीं। अन्ततः यह मिल ही गया—निःसन्देह उन्हीं भगवतीके अहैतुक वात्सल्यसे।

श्री ऋषिकुल हरिद्वारमें इन पंक्तियोंका तुच्छ लेखक उन दिनों संस्कृतविश्वविद्यालयीय मध्यमा परीक्षाके चतुर्थ वर्षमें पढ़ता था, महामहोपाध्याय परमेश्वरानन्द महाराजके श्रीचरणोंमें। वे सर्वतन्त्रोंमें स्वतन्त्र थे और वर्तमान समयके मम्मटाचार्य माने जाते थे। उन्होंने अपने निर्व्याज स्नेह और कारुण्यवश उस वर्ष सूर्योपराग पर्व पर पावन नीलधाराके तट पर सारस्वत-चिन्तामणि मन्त्रसे दीक्षित किया और इसके पुरश्चरणकी विधि भी बतलाई। मेरे साथ अन्य साथी भी थे—किन्तु उस दिनके अनन्तर किसीने इस मन्त्रको जपा हो—इसका ध्यान नहीं। पुरश्चरण पर उनका बड़ा बल था।

महाराजश्री पवित्रतम हिमालयभूभागसे सम्बद्ध थे, जहां आज भी तन्त्र और ज्योतिषकी ज्योति अनपढ़ोंमें भी जागृत है। यद्यपि बंगाल तन्त्रभूमि कहा गया है और लोगोंने इसी कारण श्रीहर्षके तान्त्रिक लेखोंको देखते हुए इन्हें बंगाली तक बताया है,[2] पर छोटेसे पर्वतीय भूभागके कण-कणमें फैले श्रीपीठों, चन्द्रबदनी, कालीमठ, श्रीनगर आदिसे जो परिचित हैं, वे ऐसे तर्कों पर केवल स्मित-वितरण ही करते हैं। अन्ततः आगम-तन्त्रकी उद्गमभूमि तो हिमालय ही है। वहीं—

> आगतं शिववक्त्रात्तु
> गतञ्च गिरिजा मुखे।
> मतं श्रीवासुदेवस्य
> तस्मादागममुच्यते ॥[3]

यह आगमशास्त्रकी व्युत्पत्ति चरितार्थ हुई थी। गुरुश्री तर्क-वितर्क और प्रदर्शनसे बड़े दूर, सौजन्य, सहृदयता, भोलापन और

१—अस्मिंश्लोके टीकान्तरकृतो बहूनां शैववैष्णवादि मन्त्राणामुद्धारो ज्ञेयः—पूर्वोक्त ही। इस वचनसे भी सिद्ध होता है कि विभिन्न टीकाकार मूलसारस्वत मन्त्रकी परवाह किए बिना अपने-अपने इष्टके अनुसार इससे भिन्न-भिन्न अर्थ निकालते रहे।

२—Naisadha Charita and Siri harsa: Sarasawati Bhawan studies.

३—शब्दार्थ चिन्तामणिः भागः १, पृष्ठ २४३

'आगम' पद और उसके विशेषणोंका पुंल्लिग प्रयोग तथा तृतीय चरणमें 'मतः श्रीहृदयाम्भोजे' ऐसा पाठ भी उपलब्ध होता है। भाव तो अभिन्न प्राय है।

करुणासे सर्वाङ्ग स्नात थे। मादृश अनधिकारी को भी स्नेहातिरेकवश ही उन्होंने इस महा-मन्त्रके उद्धारसे भी कृतार्थ किया। वह यूँ है—

तारं मायाञ्च हसरा —
नैकाराढ्यान् सबिन्दुकान्।
पुनर्मायां पुनस्तारं—
वदेद् ङेऽन्तां सरस्वतीम्-हृदयान्तः इति।[1]

'ॐकार ह्रीं ह् स् र् और बिन्दु सहित ऐ— अर्थात् "ह्स्रैं पुनः ह्रीं, पुनः ॐ तथा सरस्वत्यै नमः" यह है सरस्वतीका चिन्तामणि मन्त्र, क्योंकि उपक्रममें ही कहा गया है—

अथादौ सम्प्रवक्ष्यामि
चिन्तामणि सरस्वतीम्।[2]

श्रीहर्षीय पद्यमें चिन्तामणि मन्त्रोद्धार—

इस चिन्तामणि मन्त्रकी पृष्ठभूमिमें श्री-हर्षका पद्य अनवद्य भावसे खुल जाता है, क्योंकि इस मन्त्रका बीज रूप सारभाग पूर्व और पर अर्धमें पूर्ववत् 'अवा+मा' अर्थात् 'ओम्' से उपलक्षित है—इसके दोनों ओर 'ओम्' विराजमान है—यह 'ओम्' दो आकार धारण करनेसे द्विरूप बना हुआ है—उभयाकार घटनाद्द्विधाभूतम् (क्योंकि 'ह्रीं' भी प्रणव है। इसे देवी-प्रणव कहा जाता है)।[3] भगवती इस मन्त्रकी प्रतिपाद्या (देवता) हैं—यह मन्त्र 'ह' और 'र' मय है, क्योंकि 'ह्रीं' ह्स्रैं ह्रीं—तीनोंमें 'ह' और 'र' मुख्य हैं। 'हरमयं' में प्राचुर्यार्थक मयट प्रत्ययकी भी इस व्याख्यामें सम्यक् उपपत्ति हो जाती है, [4]—क्योंकि तीन तीन पदोंमें 'ह' और 'रेफ' का लाभ होगा। केवल दो 'ह' और 'र' की अपेक्षा तीनमें प्राचुर्य का व्यपदेश अधिक सङ्गत होगा। अस्तु।

'ओम्' और 'ह्रीं' तो सभी टीकाकारोंने किसी न किसी तरह माने ही हैं। हमारे अर्थ में "ह्स्रैं" बीज नया है। 'हरमयं' से इसके लिए भी 'ह' और 'र' तो मिल ही रहे हैं। 'सकलं' में 'स' भी छिपा है। उसकी व्युत्पत्ति होगी—'स्' से कल अर्थात् मधुर।[5] मधुर अर्थमें भी 'कल' शब्दका प्रयोग महाकवियोंने किया है। यथा कादम्बरीमें—

स्फुरत्कलालापविलास कोमला—
करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता
कथाजनस्याऽभिनवा वधूरिव ॥[6]

१—पुरश्चर्यार्णव दशम तरग तृतीय भाग (पृ० ८७०)

२—पुरश्चर्यार्णव दशम तरङ्ग (तृतीय भाग पृ. ८७०)
किञ्च इस सम्बन्धमें परम मूलके जिज्ञासुओंके लिए मेरुतन्त्र (वेकंटेश्वर प्रकाशन) पृ० ८७१ विलोकनीय है। इस मन्त्रकी फल श्रुतिमें वहां कहा गया है—
'वाचां सिद्धिमवाप्नोति वाचस्पतिरिवापरः।'
तभी तो श्रीहर्षने लिखा था कि—'वाचा स वाचस्पतिः'।

३—इसी हेतुसे प्रणवका जिन्हें अनधिकार बताया गया है 'ओम्' के स्थानपर आगमसम्प्रदाय विज्ञ जन उनसे 'ह्रीम्' का प्रयोग करवाते हैं।

४—सेन (सकारेण) कलं (मधुरं, सुन्दरम्) तत्प्रकृतवचने मयट्—पाणीनिः।

५—सेन (सकारेण) कल (मधुर, सुन्दर) म्—इति व्युत्पतिः।

६—कादम्बरी २.३

ऐसे ही सुन्दर अर्थमें भी यह पद कवियों को बहुत प्रिय है। 'सेन्दुम्'में ईच इन्दुश्च इन्दू ताभ्यां सहितम्' इस व्युत्पत्तिसे ई और विन्दु अनुस्वारका लाभ पूर्ववत् होगा ही। 'यस्य येनाऽपि सम्बन्धः' इस न्यायके अनुसार 'ई' का 'ह' के साथ योग हो जाएगा और 'हरमयम्' का रेफ दोनों ह्रीं और 'ह् स्रैं' पदोंकी सिद्धि करेगा। श्लोकमें 'अमलं' पद सामान्य निर्मल अर्थके लिए नहीं, अपितु 'स्रैं' में 'ऐ' की सिद्धिके लिए निगूढ़ आशयसे प्रयुक्त किया गया है, क्योंकि इसके पर्याय 'विमल' शब्दका आगमोंमें 'ऐं' के वाचकोंमें परिगणन है—

'ऐः' महेश्वरो द्वादशी च
विमलश्च सरस्वती।
कामकोटो (टी) वामजानु—
रंशुमान् विजया जटा ॥[1]

'ह' और 'र' की भांति 'स' में भी 'अ' कार उच्चारणार्थ माना जाएगा। 'अकारश्च अकारश्च अकारश्च आकारा :—निर्गता आकारा यस्मात्तत् 'निराकारम्' यह कल्पित तीन स्थानोंमें आए हकार और दो स्थानोंमें आए 'रेफ' की भांति, 'स' कार का भी संग्रह कर सकती है। इस भांति 'चिन्तामणि' मन्त्रके सर्व बीजोंका संग्रह इस श्लोकमें मनोहरतासे हो गया है। और, यह तो कहनेकी आवश्यकता नहीं कि बीजमन्त्र पूरे मन्त्रका प्रतिनिधित्व करते हैं। यथा बत्तीस अक्षरोंके बगलाम्बाके श्रीमन्त्रका एकाक्षरी स्थिरमाया ह्लीं, या श्री भगवन्महामृत्युञ्जयके सुप्रसिद्ध विशाल मन्त्र का उनके तीन बीजोंमें[2] मालूम पड़ता है कि कविने 'अन्तर्मन्त्रं' यह पद न्यास[3]—यह ध्वनित करनेके लिए ही रखी हैं, कि यद्यपि वे श्लोकमें चिन्ताणि सरस्वती मन्त्रके बीजों को ही लिख रहे हैं, पर इन्हींमें पूरा मन्त्र समाहित है।

टीकाओंसे तुलना—

हमने मान्य पूर्व टीकाकारोंकी व्याख्याएं अविकलप्राय पहिले दी हैं, जिससे आग्रहमुक्त युक्तायुक्त विवेकी महानुभाव उनकी और हमारी व्याख्याकी तुलनाके अनन्तर कौन अधिक सहज है—इस तथ्यको अनायास समझ सकें। शब्दक्रीड़ाको छोड़ करके प्राचीन टीकाओंके उपादेय अंशका हमने यथावत् उपादान करके आदर दिया है। 'सकलं' के साथ 'सेन्दुममलम्' के हमारे अर्थके सम्बन्धमें इतना अवश्य निवेदनीय है कि चाण्डू और नारायण इन दो पण्डित प्रवरोंने प्रथम पाद 'गड सकलं' शब्दकी कामबीज (क्लीं) के रूप में व्याख्या की है। अपने अर्थमें अपेक्षित अनुस्वार और बिन्दु उन्होंने तृतीयचरण स्थित 'सेन्दु' पदसे लिए हैं और मिल भी वहींसे सकते हैं। अतः हमारे अर्थमें तृतीय बीज

१—श्रीतन्त्राभिधाने ४०—४१ पृ० ६

२—द्र० शारदा तिलक १८ १०८

३—नारायणने भी अन्तर्मन्त्रको एक अर्थमें एकपद माना है—यद्यपि व्याख्या उसने प्राकारान्तरसे की।

(ह्स्रैं) की सिद्धिमें 'ह्' 'र्' और 'अनुस्वार सिद्धि हेतु 'हरमयं सेन्दुममलम्' यह पद कदम्बक तृतीय चरणसे प्राप्त किया गया तो दोनों अर्थोंके योगक्षेम समान ही होंगे। जैसी कि भट्टपादकी उक्ति है—

ययोरेव समोदोषः परिहारस्तयोः समः।
नैकः पर्यनुयोक्तव्य स्तादृगर्थ विचारणे ॥[1]

उनके उस अर्थकी भांति ही हमारे अर्थ में चतुर्थ चरणस्थित 'निराकारं' पदका योग प्रथम चरणस्थ 'सकलं' पदके साथ निर्बाध हो सकेगा। इस अर्थमें सबसे अधिक श्रद्धेयता तो हमें इसलिए लगी कि चिन्तामणि सरस्वती देवताके इस मन्त्रराजको आगम वचनका असंशयरूपसे समर्थन प्राप्त है। और दूसरे देवता का इससे दूरका भी सम्बंध नहीं। वह पूर्ण रूपसे सरस्वतीका ही मन्त्र है।

श्रीमहावीरप्रसाद द्विवेदी और चिन्तामणि-मन्त्र—

श्री पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी खड़ी बोली हिन्दीके जन्मदाता माने जाते हैं। वे हिन्दीके शिरोमणि वैयाकरण तो थे ही, सहृदय भी बड़े थे। उन्होंने 'नैषधचरितचर्चा' शीर्षकसे एक विचारोतेजक पुस्तिका नैषधीय चरितम् पर लिखी—जिसमें चिन्तामणि मन्त्र पर भी कतिपय विचार प्रकट किए। मन्त्रके स्वरूपके विषयमें इन्होंने नारायणका ही अनुगमन किया। उसमें मौलिकता कुछ नहीं। किन्तु, मन्त्रके फलके सम्बन्धमें महाकविने जो लिखा है, उस पर उन्होंने सन्देह प्रकट किया है-- क्योंकि उनकी जानकारीमें एक व्यक्तिने इस मन्त्रका अनुष्ठान किया था, पर उसे फल कुछ नहीं मिला।[2] किन्तु यहां मौलिक प्रश्न तो यह उठता है कि उक्त व्यक्तिने जो मन्त्र जपा था, क्या वह यथार्थमें चिन्तामणि सरस्वतीका ही मन्त्र था? फिर दूसरे स्तर पर जो प्रश्न सामने आता है वह यह कि कर्ता कर्म, और साधन, इनमेंसे कोई वस्तु विगुण तो नहीं थी?

भगवान् गोतमने न्यायदर्शनमें वेदके प्रामाण्यकी परीक्षा हेतु पूर्वपक्षमें, 'पुत्र एवं वृष्टि इत्यादि फलोंके लिए प्रसिद्ध पुत्रेष्टि, कांरीरी आदि यागानुष्ठान करने पर भी पुत्र एवं वृष्टि आदि फल नहीं मिलते—अतः वेद मिथ्या है...' इत्यादि प्रश्न उठने पर[3] समाधान में कहा था कि उक्त दृष्टान्तोंमें फलाभाव तो कर्म, कर्ता या साधनकी विगुणताके कारण है, अतः वेद मिथ्या नहीं—

न कर्मकर्तृ साधन वैगुण्यात्।[4]

विधिमें त्रुटि रह जाए वह कर्म-वैगुण्य है, कर्ता अपवित्र रह जाए या ऐसी ही अन्य स्थिति कर्तृवैगुण्य हैं और हवि आदि प्रोक्षित किए बिना ही प्रयोगमें लाई जाए वही साधन

१—श्लोकवार्तिक

२—नैषधचरित चर्चा पृ० ५१—५२ (लखनऊ प्रकाशन १९३३)

३—तदप्रामाण्यमनृत व्याघात पुनरुक्त दोषेभ्यः—न्यायदर्शन २.१.५६

४— वही २.१.५७

वैगुण्य है। इनमेंसे कोई एक भी रह जाए तो फल नहीं मिलने पाता, विवरणकारने तो आगे पुन: प्रश्न उठाया कि जहां कर्मादि सब अनुगुण हैं, फिर भी कहीं पर फल नहीं होता, अतः वेदको मिथ्या ही क्यों न माना जाए ? और उत्तरमें कहा कि वहां भी तीनोंमेंसे एकका वैगुण्य अवश्य है, पर किसी दोषके कारण उसका ज्ञान नहीं हो पाता। अनेक स्थलोंमें पुत्रेष्टि आदिसे पुत्रादिका लाभ प्रत्यक्ष होता है, अतः इनमें कार्यकारण भावका ग्रहण जब हो गया, तब यदि कहीं फल नहीं दीखता तो कर्मादिके वैगुण्यका अनुमान होता है—

'नच यथोक्त कर्मादिस्थलेपि फलानुत्पत्ति ईष्यत इति वाच्यं तथा (त्रा) पि कर्मादि वैगुण्यमस्ति किंतु तदज्ञानं दोषादेवेति निर्णयात् । तत्र व्यभिचारसंशयेऽपि तस्य कारणताग्रहाविरोधित्वात् । अनेकत्र पुत्त्रेष्ट्या-दित: पुत्त्रादिफलदर्शनात् तादृशकार्यकारणभाव-ग्रहोत्तर फलादर्शनेन कर्मादिवैगुण्यमनुमीयत इति भाव:'।[1]

इतिहास और अनुभव—

सारस्वत मन्त्रकी साधनासे वाक्प्रकर्ष प्राप्तिकी बात केवल श्रीहर्षने लिखी हो—ऐसा नहीं। अन्य दिग्गज विद्वानोंके भी साक्ष्य इस प्रसंगमें इतिहासके भाण्डागारमें सुरक्षित हैं। उदाहरणार्थ—राजशेखरने अमरचन्द्र सूरि और हरिहरको 'सिद्ध सारस्वत' बतलाया है।[2] इसी प्रकार 'वसन्त विलास'के रचयिता त्रयोदश क्रिस्तुशताब्दीके प्रथमार्धजात बालचन्द्रने भी उदयसूरिसे सारस्वत मन्त्र प्राप्त किया था।[3] कलकत्ताके स्वर्गीय प्रसिद्ध श्रेष्ठि श्रीनिवासदास पोद्दारने, जिन्हें धर्म और धार्मिक साहित्यसे अच्छा लगाव था और जिन्होंने 'पुरश्चर्यार्णव' इत्यादि उत्कृष्ट आगमग्रन्थोंका संग्रह भी अपने पास कर रखा था, मुझे लिखा था कि उन्हें वाराणसीके एक ऐसे चोटीके विद्वान्का पता था जिन्होंने इस एकदशाक्षर चिन्तामणिमन्त्र को सिद्ध कर रखा था। परन्तु चूंकि वे सभाओंमें प्रायश: विद्वानोंका मान-मर्दन किया करते थे, अत: उनकी मृत्यु कष्टसे हुई थी।

जनवरी १९६२ में मुझे पञ्जाब विश्व-विद्यालयमें आनेका अवसर प्राप्त हुआ, वह भी वन्दनास्पद गुरुश्रीके पद पर ही। दर्शना-चार्यका एक छात्र उन श्रीचरणोंसे भी पहिले पढ़ता रहा था। उन श्रीचरणोंकी आज्ञासे मैंने उसको सारस्वत मन्त्रकी दीक्षा दी। दर्शनाचार्यमें सर्वप्रथम रहनेके बाद उस छात्र ने रायपुर विश्वविद्यालयसे संस्कृतमें एम० ए० परीक्षा दी। अन्तिम वर्ष उसकी तैयारी बिल्कुल न थी। लखनऊके प्रसिद्ध ज्योतिर्विद श्री भास्करानन्द लोहिनीने उसे लिखकर दे दिया था कि वह अनुत्तीर्ण हो जायेगा। निराश होकर वह इस मन्त्रके जापमें लग गया और वहां भी सर्वप्रथम रहा। इसी प्रकार होशियार पुरके एक अन्य डाक्टरने इस मन्त्रको जपा था। वे प्रतिभा और प्रैक्टिस दोनोंमें बृद्धिका अनुभव बताया करते थे। आजकल वे कपूरथला

१—न्यायसूत्र विवरण पृ० ११८

२—द्र० प्रबन्धकोशे अमरचन्द्रप्रबन्ध और हरिहरप्रबन्ध।

३—अमरचन्द्र सूरि और बालचन्द्र सूरि पर विवरणार्थ द्रष्टव्य:—Paros 105 and 124 'The literary cerole of mahamatya vastupala, Dr. Sondesara.

हैं। मन्त्र जापसे मानसिकशान्ति तो उन्हें सद्यः अनुभूत होती थी। ये सब बातें प्रकाशनीय न होने पर भी, चूंकि श्रीहर्षने चिन्तामणिमन्त्रका जो प्रभाव लिखा है—उसकी प्रामाणिकतामें सन्देह किया गया है–और वह भी एक अत्यन्त प्रतिष्ठा-प्राप्त विद्वान् द्वारा, अतः अपरिहार्य समझकर लिखा गया। देशकाल जैसा विपरीत है उसके कारण आज श्रीहर्ष जैसी साधना नहीं हो सकती। फिर भी मन्त्रराजका महाप्रभाव तो दृष्टिमें आता ही है।

हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक आचार्य चतुरसेन ने एक बार लिखा था कि अर्धरात्रिमें गले-गले तक नदी—जलमें खड़े होकर जपने पर भी उन्हें मन्त्र विशेषसे तनिक भी लाभ न हुआ! पर कौन कह सकता है जि उन्होंने जो विशाल ग्रन्थ राशि प्रसूत की और वाञ्छित से कहीं बढ़ कर यश पाया उसमें उनके जपे मन्त्रका अनुग्रह हेतु नहीं ? इस सम्बन्धमें दो बातें सदा स्मरणीय हैं। प्रथम तो यह कि श्री-गुरु और इष्टदेवके विशेषानुग्रहके अभावमें मन्त्र की परीक्षामें प्रवृत्त व्यक्तिकी असफलता निश्चित है। दूसरी यह कि जो भाव (निष्ठा) के अभावसे पीड़ित हो—

फलाभावश्च नियतं

भावाऽभावात् प्रजायते। (कु० तन्त्र)

फिर श्रीहर्षने चिन्तामणि मन्त्रके प्रभाव से ही नैषधीयचरितका निर्माण किया था—इस बातकी पुष्टि तो अन्य स्रोतोंसे भी हो जाती है। गदाधरने स्पष्ट ही लिखा है कि—

'प्रथमतश्चास्व कवेः काव्यमिदं निर्मातु-मिच्छतः 'कोऽत्र प्रगति तथाविधः खलु धीर-ललितः क्षितिपतिरभूद् यमिह जितसुधारसं कथं कथानायक करोमि' इति भूयश्चिरं चिन्तयतः सम्यगुपासितस्य चिन्तामणिमन्त्रस्य प्रसादाद्यः किलाऽर्थोऽन्तः प्रास्फुज् स एव निपीय' (नैषधीयचरितम् १.१) इत्यादावादिमश्लोके बहिरुपनिबद्धः।

उपसंहारमें हम पुनः निवेदन करें कि—

यद्यपि मन्त्रशास्त्रीय रहस्य सामान्यतः प्रकाशनीय नहीं होते, तथापि जहां वह प्रकाशित होने जा रहा है, ऊँचे अधिकारी ही उसके पाठक होंगे और उनमें भी प्रयोक्ता तो कोई सुकृतशाली ही, जिसका हृदय श्रद्धाकी लोक-पावनी धारासे एकान्त धौत हो चुका हो। निःसन्देह ऐसा व्यक्ति उस तत्वसे भी अपरिचित न होगा कि आगमीय मन्त्रोंके पूर्ण फल प्राप्ति के लिए उनका सम्प्रदायज्ञ गुरुके श्रीमुखसे ग्रहण किया जाना अति वाञ्छित है, क्योंकि जिस किसी भांति गृहीत मन्त्र निर्वीर्य वर्णमात्र रह जाते हैं। वे 'मन्त्र' कोटि तक नहीं पहुंच पाते।

[इस निबन्धके विद्वान् लेखक डा० शशि-धर शर्माके दीक्षागुरु स्व० महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्दजीसे मेरा ४२ वर्ष पुराना स्नेहसम्पर्क है—जब वे श्री सनातधर्म कालेज लाहौरमें प्रिन्सिपल थे तब श्रद्धेय स्व० गोस्वामी गणेशदत्तजीने मेरा परिचय कराया था, तबसे वे मेरे अभिन्न मित्र बन गये थे। "छायैवमैत्री खलु सज्जनानां" के अनुसार यह स्नेहवल्ली उत्तरोत्तर बढ़ती गई। 'श्रीविश्वविजयपंचांग' का प्रथम प्रकाशन उन्हींकी सत्प्रेरणासे सं० २००२ वि० में श्री मेहरचन्द्र-लक्ष्मणदास संस्कृतपुस्तकालय लाहौर द्वारा हुआ था। २२ वर्ष पूर्व वे एक बार ग्रीष्मकालमें मुझसे और म० म० श्री मथुराप्रसादजी दीक्षितसे मिलने सोलन भी पधारे थे। ऐसे सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र सन्मित्रोंका अभाव खटकता है।

—ह० श० त्रिवेदी (सम्पादक)]

नामका वैज्ञानिक रहस्य

[ले०—श्री विक्रमसिंह जी]

भगवन् नाम स्मरणसे मुक्तिमें सन्देह हो सकता है, हमारे नामकी पुकार हमें चौंका देगी इसमें सन्देह नहीं है। क्योंकि वह नाम खास सूरतमें हमारी पहिचानके लिये ही रखा गया है।

लोक परिपाटीके अनुसार नाम ही नहीं जाति, गोत्र, शाखा इत्यादिका बोध भी नामसे हो जाता है। उदाहरणार्थ—देवदत्त ब्राह्मण है, देवसिंह क्षत्रिय है, देवाराम जाट है, देवलाल वैश्य, देवदास गुसांई, देवगिरि, देवानन्द विभिन्न शाखाओंके साधु सन्यासी हो सकते हैं, क्योंकि इनमें उपसर्ग प्रत्ययोंका प्रयोग विशेष उद्देश्यसे किया गया है।

भारतीय मनीषियोंने नामके महत्त्वको समझकर "नामकरण संस्कार" को विशेष महत्त्व दिया है। जो जीवनके १६ मुख्य संस्कारोंमेंसे एक हैं। यह संस्कार प्रसवके सूतकसे निवृत्त होने पर ११वें दिन प्राय: किया जाता है।

नामकरण संस्कारके मंत्रोंसे प्रकट है कि नाम यशका प्रतीक है (लोकोक्ति है—"अमुक दुनियांमें नाम कर गया" जिसका अर्थ है प्रसिद्ध हो गया") साथ ही मधुर रोचक और सुवाच्य होने पर नाम तदनुरूप गुण भी व्यक्तिमें उत्पन्न करता है। नाम करणके विभिन्न उद्देश्य हो सकते हैं, अर्थात् कर्ण-मधुर हो, भाव मधुर हो, माता-पिताकी व्यक्तिगत रुचिका परिचायक हो, प्रसिद्ध महापुरुषोंके अनुरूप अनुकरणीय ज्योतिषके अवकहोडानुसार नक्षत्र चराणाक्षरों पर हो, नक्षत्र-तिथि वार आदिके अधिष्ठातृ देवताओंके ऊपर हो, या ऋतु-मास आदि पर (वसन्त कुमार, श्रवण कुमार आदि) हो। इसके अतिरिक्त कुछ विचित्र लोकमान्यताओंके आधार पर हास्यास्पद नाम भी रख दिये जाते हैं, अर्थात् जिनके बच्चे जीवित नहीं रहते वे बच्चोंके अवाञ्छनीय नाम पर भी रख देते हैं, जिससे मृत्यु देवता बच्चेकी उपेक्षा कर जावें। ऐसे नामोंमें छीतरिया, फकीरिया, घसीटा, कूड़ामल, नाथू लाल आदि प्रचलित हैं। तथ्य यह है कि "आप दुनियांमें अपना नाम करें, या न करें, दुनिया समय पर आपका नाम अवश्य कर देती है।

जब नामकरण अनिवार्य है तो युक्तियुक्त आधार लेना ही बुद्धिमानी है। धार्मिक संस्कारों में आस्था हो या न हो, ज्योतिषमें विश्वास करें या न करें, नामकरणका आधार तो आत्मसंतोषके लिये हैं। इसलिये तत्संबन्धी जानकारी दे देना यहां उचित होगा। कर्ण-मधुर, भाव-मधुर नाम प्राय: रुचिके अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं, अत: उन्हें यहां नहीं गिनाया जा सकता है। नामकरण की मुख्य परिपाटी अवकहडा चक्रके अनुसार नक्षत्र चरणाक्षरोंसे है जो आगेकी तालिकासे स्पष्ट होगी।

भारतीय ज्योतिषशास्त्रका यह विधान परम वैज्ञानिक एवं चमत्कारिक है। नक्षत्र स्वामियों के चरण भेदसे बदलते हुए प्रभावको स्वरोंकी मात्राएं प्रकट करती हैं। समस्त २८ नक्षत्र देवगण

मनुष्यगण व राक्षस गणोंमें विभक्त हैं और स्वभावानुसार उनकी लघुक्षिप्र, चरचल, मृदुमैत्र, ध्रुव स्थिर, उग्रक्रूर, तीक्ष्ण दारुण व मित्र संज्ञायें हैं, जिनके कारण जातकमें ये गुण विद्यमान रहते हैं।

अवकहडा चक्रके अनुसार नक्षत्र चरणाक्षर व नक्षत्र स्वामी

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
स्वामी	अहिर्बुधन्य	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्रमा	शिव	अदिति	गुरु	सर्प
चरणाक्षर	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो क की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
नक्षत्र	मघा	पू. फाल्गुनी	उ. फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
स्वामी	पितर	भग	अर्यमा	रवि	त्वष्ट्रा	वायु	इन्द्राग्नि	मित्र	इन्द्र
चरणाक्षर	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू
नक्षत्र	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उ. षा. अभि.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भाद्रपद	उ. भाद्रपद	रेवती
स्वामी	राक्षस	जल	विश्वदेवा ब्रह्मा	विष्णु	वसु	वरुण	अजैकपाद	अहिर्बुधन्य	पूषा
चरणाक्षर	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जू जे जा जी जो खा	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची

संक्षेपमें यह कह सकते हैं कि देवगणके नक्षत्रोंमें अश्विनी पुष्य हस्त लघुक्षिप्र हैं। पुनर्वसु स्वाती श्रवण चर चल हैं। और मृगशिरा अनुराधा रेवती मृदु मैत्र हैं, जबकि मनुष्यगणके नक्षत्रोंमें अभिजित् लघुक्षिप्र हैं, रोहिणी और तीनों उतरा ध्रुव स्थिर हैं, तीनों पूर्वा उग्रक्रूर हैं और आर्द्रा तीक्ष्ण दारुण स्वभाव हैं।

राक्षस गणके नक्षत्रोंमें धनिष्ठा शतभिषा चर चल हैं, चित्रा मृदु मैत्र हैं, मघा उग्रक्रूर हैं, आश्लेषा ज्येष्ठा मूल तीक्ष्ण दारुण हैं, विशाखा कृत्तिका मिश्र हैं।

अक्षरोंके साथ स्वरोंकी मात्राएं अशुभत्वको कम करती हैं।

इससे कुछ स्थूल विधि इष्टदेव संबन्धी तिथि वार या मास संबन्धी नाम रखनेकी है। चैत्रादि १२ मासोंकी क्रमशः १ वैकुण्ठ, २ जनार्दन, ३ उपेन्द्र, ४ यज्ञपुरुष, ५ वासुदेव, ६ हरि, ७ योगीश, ८ पुण्डरीकाक्ष, ९ कृष्ण, १० अनन्त, ११ अच्युत, १२ चक्री संज्ञायें हैं। तिथियोंके अधिष्ठातृ देवता निम्न हैं—प्रतिपदाका अग्नि, द्वितीयाका ब्रह्मा, तृतीयाकी गौरी, चतुर्थीका गणेश, पंचमीका सूर्य, षष्ठीका गुह, सप्तमीका रवि, अष्टमीका शिव, नवमीकी दुर्गा, दशमीका यम, एकादशीका विश्वेदेव, द्वादशीका हरि, त्रयोदशीका काम, चतुर्दशीका शिव, पूर्णिमाका चन्द्रमा व अमावस्याके पितर हैं।

चरणाक्षरोंके अतिरिक्त नक्षत्र पर भी नाम रखे जाते हैं, जैसे अश्विनी कुमार, रोहिणी कुमार,

कार्तिकेय आदि, लेकिन उत्सव और संस्कारोंमें गुरुजनोंका आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिये नक्षत्र चरणाक्षरके नामसे ही अभिवादन किया जाना चाहिये, क्योंकि जातकके जन्म समय निर्धारणमें चरणाक्षरसे अधिक स्थिरता प्राप्त होती है। और शुभाशुभ भी शीघ्र प्राप्त होता है। इसलिये बाल्यावस्थामें मौञ्जीबन्धन या उपनयन तक वास्तविक नामको गुप्त रखकर मुन्ना, लल्ला, राजू, भय्या, काका, बाबा, नन्हा, छोटा, बच्चा, गुड्डू आदि नामोंसे लिंगानुसार (मुन्ना या मुन्नी) पुकारते थे।

संस्कार विधिके अनुसार वर्गके प्रथम द्वितीय अक्षरोंको छोड़कर अन्तस्थ (परलव) युक्त लड़केका २-४ आदि सम अक्षर युक्त और लड़कीका ३-५ आदि विषम अक्षर युक्त नाम रखा जाना चाहिये।

इसके कारणको जाननेके लिये शब्दके स्वरूपकी विवेचना करनी होगी। विषयान्तर होतेहुए भी प्रसंग आ जानेसे कुछ विचार कर लेना अनुचित न होगा। हिन्दुधर्म शास्त्रमें शब्दको ब्रह्मका स्वरूप माना गया है, वहां "नाद ब्रह्म" इसकी संज्ञा है इसके चार स्तर हैं–परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी।

अव्यक्त रूपसे नाभि-प्रदेशमें रहने वाली वाणीकी परा संज्ञा है। भाव संयोगसे स्वरूप धारण कर लेने पर उसे हृदयमें देखा जा सकता है, इसलिये इसे पश्यन्ति कहते हैं। वर्णका रूप धारण करके कण्ठ कूपमें आजाने पर वह ध्वनि रूपसे व्यक्त की जा सकती है और मस्तिष्कमें भी स्वरूपसे धारण की जा सकती है, इसलिये इसे मध्यमा कहते हैं और कंठ तालु मूर्धा दन्त ओष्ठका स्पर्श पाकर जब वाणी रूप-विशेष धारण करती है तब वैखरी कहलाती है। अनाहत नादकी एकाग्रतासे योगी अनेक सिद्धियोंकी उपलब्धि करते हैं। आहत-नाद ध्वन्यात्मक और भावात्मक दो प्रकारसे अपना भौतिक प्रभाव दिखाता है।

जैसे किसीका विलाप या करुण पुकार रोमाञ्च और अश्रु उत्पन्न कर सकते हैं और क्रोधमें कहे गए शब्द नेत्रोंमें रक्तिमा, शरीरमें कम्प और प्रत्याक्रमणके लिये जोश पैदा कर देते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक ध्वनिमें भी एक उद्बोधक भाव होता है जिसका पता हमें ऐसी ध्वनिसे लग सकता है जिसका कोई अर्थ न निकले। इस श्रेणीमें पशुपक्षियोंकी अव्यक्त ध्वनियां, शंख ध्वनि, रणभेरी, बैण्ड का मार्च पास्ट आदि हैं। शेरकी दहाड़ मेघगर्जनसे भय उत्पन्न होता है। मोर कोयल पपीहाकी ध्वनि आकर्षण पैदा करती है। ध्वनिका यह भावात्मक प्रभाव मानव शरीरके यौगिक चक्रों (मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूर अनाहत विशुद्ध आज्ञा सहस्रार) पर प्रतिक्रिया करता है, जिसके फलस्वरूप अंतर्ग्रन्थियां रस छोड़ती हैं और शरीरका संतुलन बनाये रखती हैं।

उक्त सप्तचक्रोंसे जैसे सप्त ग्रहोंका सात रंगोंका संबन्ध है उसी प्रकार सप्त स्वरोंका भी सम्बन्ध है, जिसकी तुलना निम्न तालिकामें की जा रही है—

सप्त ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र	शनि
सप्त वर्ण	इन्द्रधनुष	श्वेत	लाल	हरा	पीला	श्यामल	काला
सप्त रस	कटु तिक्त	नमकीन	कड़वा	फीका	मीठा	खट्टा	कसैला
सप्त स्वर	षडज	ऋषभ	गन्धर्व	मध्यम	पंचम	धैवत	निषाद
प्राणी स्वर	मोर	चातक	अज	काक	पिक	अश्व	गज

ध्वनि तरंगित रूपमें गतिमान् है जिसके कारण इसे ताप प्रकाश और चुम्बककी शक्तियोंमें परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे मिट्टीके ढेलेको गोफिया (रस्सीके दो टुकड़ोंमें रखकर) घुमाने से मिट्टीमें पक्षीके प्राण लेनेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार शब्द-गुम्फन भी लक्ष्यवेधमें हेतु है।' "कीट भृङ्गि-न्याय" का उदाहरण साहित्यमें दिया जाता है।

भृङ्गी दीवार पर मिट्टीका घर बनाने वाला एक कीड़ा (बड़ी मक्खीके समान) है वह प्रजनन द्वारा वंश विस्तार नहीं करता अपितु ईलट जैसे छोटे कीड़ेको उठा लाता है, अपने मिट्टीके घरमें बन्द करके निरन्तर गुन्जन करते हुए मिट्टीका स्तर चढ़ाता रहता है इस निरन्तर गुन्जन के प्रभावसे ईलट भृङ्गिके रूपमें बदल जाती है।

भौतिक शास्त्रने इस दिशामें पर्याप्त प्रगति की है, ऐसे यन्त्रोंका निर्माण हो चुका है जिनसे ध्वनिको तापमें बदल कर धातुओंकी ढलाईका काम लिया जाता है। प्लास्टिक धागोंका निर्माण किया जाता है। "सुपरसोनिक रेडियो मीटर" यंत्रके द्वारा अन्तरिक्षमें व्याप्त ध्वनि तरंगोंको ग्रहण करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। "राडार यंत्र" के द्वारा हवाई हमलेकी दिशा व गतिका ज्ञान आधुनिक युगका चमत्कारिक आविष्कार है। "ट्रान्सडयूसर" यंत्रके द्वारा अल्ट्रा साउण्डकी गति को ८० साइकिल प्रति सैकिण्ड तक बढ़ाकर लाइलाज़ रोगोंका उपचार किया जाता है। श्रवण शक्तिके नष्ट होने पर आंख दांत त्वचा द्वारा ध्वनिको मस्तिष्कमें पहुँचाकर श्रवण शक्तिके प्रभाव की पूर्ति कर ली जाती है।

कर्णातीत ध्वनिका गुन्जन वह भाव संवहन शक्ति उत्पन्न करता है जो मारण मोहन उच्चाटन आदि तांत्रिक प्रयोगोंमें काममें लिया जाता है। ध्वनिकी निरन्तरतामें भाव संवहनकी जो शक्ति है वही वैदिक सूक्तों व स्रोतोंकी सफलताका रहस्य है। राग मेघ-मल्हारसे असमयमें वर्षा करना और दीपकरागसे बुझे दीपकोंको प्रज्वलित करनेका चमत्कार ध्वनि पर विजयका सूचक है।

भौतिक विज्ञानमें ध्वनि मापक ईकाईको "डेसीवेल" से व्यक्त करते हैं। संस्कृत व्याकरण में इसके लिये ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, उदात्त, अनुदात्त, अल्पप्राण महाप्राण शब्दोंका प्रयोग हुआ है। प्राणियोंकी बोलीमें इसे समझाया गया है, जैसे मुर्गेकी आवाज़में "कु कड़ूं कूँ" में प्रथम कु ह्रस्व है

द्वितीय "वडू" दीर्घ है और प्रथमसे दुगना समय लेता है, जब कि तीसरा "कू" प्लुत है जो तिगुना समय लेकर विराम दिया जाता है । दूरस्थ व्यक्तिको पुकारनेमें जो दीर्घ विराम दिया जाता है वही प्लुत है ।

प्रत्येक वर्ण कण्ठ तालु मूर्धा दन्त और ओष्ठका स्पर्श पाकर एक स्वरूप बनाता है, यह स्वरूप ही मानवीय गुणोंके विकासका हेतु है, इसलिये इनका परिचय निम्न तालिकासे दिया जा रहा है :—

उच्चारणस्थान	स्वर	व्यञ्जन	अनुनासिक	अन्तस्थ	उष्म
कण्ठ	अ आ ए ऐ	क वर्ग	ङ	×	ह
तालु	इ ई	च वर्ग	ञ	य	श
मूर्धा	ऋ ॠ	ट वर्ग	ण	र	ष
दन्त	लृ	त वर्ग	न	ल	स
ओष्ठ	उ ऊ ओ औ	प वर्ग	म	व	×

उच्चारण पर ध्यान देनेसे स्पष्ट प्रतीत होगा कि प्रत्येक वर्गका प्रथम द्वितीय वर्ण श्वास के साथ विना घोषके बाहर उच्चरित हो जाता है। संभवतः इसीलिये नाम करणमें प्रथम इन्हें लेनेका निषेध किया गया है कि उच्चारणमें अस्पष्टता न रहे। वर्गके शेष तीन वर्ण श्वासको रोक कर आवाज़के साथ बाहर निकलते हैं इसलिये इन्हें संवार, नाद, घोष कहा जाता है। नाम इन्हींमें से रखनेका विधान है। अन्तस्थ (य र ल व) का संयोग कर्ण मधुर व प्रिय बनानेके लिये, मालूम होता है कि लोक व्यवहारमें हम ऐसा ही देखते हैं। मांगीलालको प्यारसे मांग्या और गौरीलाल को गोरया पुकारते हैं, अर्थात् अन्तस्थ वर्णोंका संयोग हृदयस्थ आत्मीयता या अन्तरंगताका द्योतक है।

इस विवेचनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक वर्ण अपना एक विशेष स्वरूप रखता है जिसका शरीरस्थ चक्रोंसे विकसित गुणोंके साथ निकट सम्बन्ध है और जातकमें सौम्य या क्रूर संस्कार उत्पन्न करता है। इसे गुणात्मक संस्कार उत्पन्न करना भी कह सकते हैं, क्योंकि सत्व रज तम गुणोंसे ही इसका संबन्ध है।

सत्य लोम विलोम सदा स्थिर रहता है, इसलिये यदि उक्त नियम सत्य है तो इसका विलोम भी सत्य होना चाहिये कि—"ध्वनिके द्वारा गुणविकासके लिये वर्णोंका प्रयोग किया जा सकता है" यही नामका महात्म्य है।

विचारको पूर्ण करनेके लिये उपसंहारके रूपमें नाम-करण संबन्धी विधानका संकेत देना भी उचित होगा।

संस्कार-विधिके अनुसार प्रसव सूतक निवृत्तिके बाद ब्राह्मणका ११, १२ या १३वें दिन क्षत्रियका १६वें दिन, वैश्यका २०वें दिन, शूद्रका ३२वें दिन नाम-करण मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रोंमें

पर्व व रिक्ता तिथियोंको छोड़ कर रवि मंगल बुध गुरु वारोंमें पूर्वाह्नके समय करना चाहिये। यदि संस्कार समय पर न किया जा सके तो १०० दिन ६ मास या एक वर्षमें शुभ मुहूर्त निकाल कर करना चाहिये।

नाम वर्गके ३, ४, ५ वर्णोंमेंसे अन्तस्थ (य र ल व) युक्त लड़केका सम अक्षर (२, ४) वाला और लड़कीका विषम अक्षर युक्त (३, ५) रखना चाहिये।

नाम करणके मुख्य स्रोत ४ हैं—१ इष्टदेव संबन्धी, २ जन्म मास सम्बन्धी, ३ नक्षत्र संबन्धी, (अर्थात् नक्षत्रके अधिष्ठातृ देवताका या नक्षत्र चरणाक्षर संबन्धी) ४ व्यवहारिक प्रचलित नाम रुचि अनुसार।

नामके आदि अक्षरमें वर्गका प्रथम द्वितीय अक्षर न लेकर ३, ४, ५ अक्षर व हकार लेना चाहिये, अन्तस्थ (य र ल व) का संयोग आवश्यक है। ऋ लृ वर्जित अन्तमें विसर्ग वाला, कदन्त प्रत्ययान्त पुरुषका युग्माक्षर युक्त, स्त्रीका अयुग्माक्षर युक्त रखा जाना चाहिये। सम या विषम संख्याका प्रतिबन्ध स्वरकी मात्राओंके लिये है, व्यञ्जनाक्षरका कोई नियम नहीं है। नामकरणमें यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि वह नाम माता पिता या गुरुजनोंका वाचक न हों, तद्धित प्रत्ययान्त न हो, नामके अंतिम अक्षर र व ल नहीं होने चाहिये। नामकी अक्षर संख्याका प्रभाव जातकके जीवनके उद्देश्य पर पड़ता है, अर्थात् प्रतिष्ठा चाहने वाला दो अक्षरका, ब्रह्मजिज्ञासु चार अक्षरका नाम रखे।

इस विषयमें पाश्चात्य अङ्क पद्धति भी रुचिकर है, जिसे "न्युमरोलाँजी" कहा जाता है। इसमें अंग्रेजी वर्णमालाको नौ अंकोंकी आवृतिमें लिखनेसे प्रत्येक अक्षरका अंक हो जाता है जैसे :—

1	2	3	4	5	6	7	8	9
A	B	C	D	E	F	G	H	I
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
S	T	U	V	W	X	Y	Z	

पाश्चात्य प्रभावसे भारतका मध्यम वर्ग भी अब लड़कोंके नाम लिन्टू पिंकू चिन्टू बन्टू सोनू मौनू टौमी रोमी वुली गोल्डी आदि और लड़कियोंके डाली जूली स्वीटी बाबी सोनी सिल्वी शाई प्रेटी रूबी रोजी लिली वेबी आदि रखने लगे हैं।

पाश्चात्य अंक शास्त्र ध्वनि पर जोर नहीं देता, वहां नामके अक्षरोंके योगका फलित कहा जाता है। इस दृष्टिसे हिज्जों (स्पेलिंग) का विशेष महत्व है, अर्थात् अशुभ फलको टालनेके लिये A को घटाने या बढ़ानेसे एक अंककी न्यूनाधिकता हो सकती है।

कुल अक्षरोंका जोड़ नौ से अधिक होने पर ९ का भाग देनेसे जो शेष रहेगा वही अंक नाम का माना जावेगा।

पाश्चात्य अंक शास्त्र के अनुसार अंकोंका फलित निम्न है :—

१ बौद्धिक सामाजिक राजनैतिक आर्थिक वैज्ञानिक दृष्टिसे अग्रणी महत्वाकांक्षी व साहसी।
२ संतुलित व्यक्तित्व, ग्रहणशील, अस्थिर स्वभाव।
३ स्वाभिमानी परिश्रमी हर क्षेत्रमें सावधान चौकन्ने रहने वाले।
४ परिवर्तनशील विचारधारा वाले, सावधान और विपरीत पक्ष से स्नेह रखने वाले।
५ स्थिर स्वभाव, गणित विज्ञानमें विशेष प्रतिभा-संपन्न, तेज व चालाक।
६ शृंगार विलास प्रिय, व्यय विशेष करने वाले, अहंकारी किन्तु स्नेही।
७ स्वाभिमानी, परिश्रमी, सावधान एवं दुःखी।
८ अध्ययनशील, भाग्यशाली, समयका सदुपयोग करने वाले पदाधिकारी, पूर्ण मनोरथ।
९ वाचाल, चंचल, परिश्रमसे सफलता प्राप्त करने वाले, आकर्षक व्यक्तित्व वाले भाग्यशाली।

इस पद्धतिमें नामाक्षरोंके अंकोंके योगके अतिरिक्त दूसरी विधि जन्मकी तारीख, या तारीख माह सन्‌का योग करके नौके अन्तर्गत पिण्ड बना लेते हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य

फरवरी-मार्च-अप्रैल १९८२ ई०

[लेखक :—श्री ओंकार नाथ त्रिवेदी, बाराबंकी २२५००१]

मेष

(च. चे, चो. ला, ली, लू, ले, लो, अ)

फरवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है। उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि होगी। यदि आप व्यसनों-विलासोंमें समय नष्ट न करें तो इसे उपलब्धियोंका मास बना सकते हैं। कामनाएं पूर्ण होंगी, प्रयासोंमें सफलता पानेके लिए ३-१२-२२ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिए ४-१३-२३ ता० अच्छी हैं। २३ तारीख को कोई शुभ घटना घटित हो सकती है। सामान्य रूपसे धन लाभके लिए ६-१५-१७-२५ ता० भी अच्छी हैं, नवीन वस्त्र-वैभवकी प्राप्ति। सहयोग देने वाले मित्र मिल जायंगे। व्यापारको बढ़ानेके लिए ऋण लेनेका विचार कर सकते हैं। समाजमें प्रतिष्ठाकी वृद्धि होगी। पत्नीसे सुख-सहयोग प्राप्त होता रहेगा। किसी दूरके सम्बन्धीको कष्ट संभाव्य। ७-१६-२६ तारीखें नेष्ट।

मार्च—मास अच्छा है किन्तु द्विविधापूर्ण स्थितिमें रहेंगे, अस्वाभाविक-सी समस्यायोंको सुलझानेमें समय बीतेगा। आलस्य और थकानका अनुभव। व्यसनों-विलासोंमें मन भटकेगा। कार्यकारी जीवनसे संबंधित आवश्यक कार्य सामने आवेंगे, पर उन्हें सम्पन्न कर सकेंगे—इसमें संदेह है। सफलता पानेके लिए द्वितीय सप्ताह महत्वपूर्ण है। धन लाभको ३-४-१२-१३-२२-२३-३१ ता० श्रेष्ठ है, संभव है ५-७-१४-१७-२४-२६ भी अच्छी रहें, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा, २२-२३ ता० में छोटे आकस्मिक लाभ। व्यापारकी स्थितिमें

असंतोष जनक उतार-चढ़ाव आवेंगे। समाज में मान-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति। स्वास्थ्य असंतोष-जनक, १५-१६ तारीखें नेष्ट।

अप्रेल—यह मास महत्वहीन सा है। व्यक्तिगत समस्याओंमें उलझे रहेंगे। कार्यकारी जीवनमें व्यवधानोंके कारण समुचित उद्योग न कर सकेंगे। फिर भी सफलता पानेके लिए ८-१७-२६ ता० अनुकूल हैं। शत्रुओं-बाधाओं पर विजय मिलेगी। अस्वाभाविक भोगोंकी तृष्णामें मन भटकता रहेगा, पर किसी भौतिक सुखकी प्राप्ति पाना कठिन है। मित्रों परि-जनोंसे सहयोग नाममात्र मिलेगा। मासान्तमें अप्रिय उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। धन लाभ के लिए ८-९-१०-१७-१८-१९-२६-२८ तारीखें श्रेष्ठ हैं। आर्थिक दबाव, ऋण या संचित धनका सहारा लेना पड़ेगा। व्यापारकी स्थिति असंतोषजन। भ्रमण मनोरंजनके अवसर, समाजमें जनप्रियतामें कमी। प्रेमसंबंधमें आंशिक सफलता। ११-१२ ता० नेष्ट।

वृष

(ई, उ, ए, ओ, व, वि, वू, वे, वो)

फरवरी—इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। संतानको कष्ट, या किसी पूजनीय व्यक्तिको कष्ट, या नौकरी व्यापारमें बाधा-आदि किसी अप्रिय घटनाकी संभाकना है, जिससे भाग्यवश बच जायेंगे। धैर्य और विवेकपूर्वक चलना और क्रोध वशमें रखना आपका धर्म है। अनायास बौद्धिक उलझनें बढ़ेंगी। मध्य माससे एक व्यक्ति सहयोग देने लगेगा। अस्वाभाविक भोगोंमें मन भटकेगा। १० से १२ ता० के बीच नये साहसका उदय होगा जिसके द्वारा प्रत्येक परिस्थितिका सामना कर सकेंगे। धन लाभके लिए १-१०-१९ ता० श्रेष्ठ। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। पत्नी-प्र-पुत्रादिसे कलह-वैमनस्य-ज्वर या उदर विकारके कष्ट। यात्रा और दौड़धूप अवश्य। १३ ता० नेष्ट।

मार्च—यह मास अच्छा है। विगत मासों से चले आ रहे नेष्ट फल पूर्ववत् रहेंगे। कठिन बौद्धिक उलझनें, व्यसनों-वासनाओंमें वृद्धि, सगे-सम्बन्धियोंसे विवाद। जीवनमें प्रगतिके अव-सर मिलेंगे। उद्योग करने पर अच्छी सफलता मिलेगी। लाभ-स्रोतका विकास होगा। आप प्रयत्न करें तो इसे उपलब्धियोंका मास बना सकते हैं। आर्थिक चिन्ताओंमें कमी आवेगी। धन लाभकी दृष्टिसे १-७-९-१७-१९-२६-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है २-१०-२०-२९ भी अच्छी रहेगी। विशेष अस्वाभाविक व्यय होगा। समाजमें मान-प्रतिष्ठाकी वृद्धि होगी। सन्तानके लिए यह मास कष्टप्रद है। ज्वर-या उदर-विकारसे कष्ट। १२ या १३ ता० नेष्ट।

अप्रैल—इस मासको अच्छा नहीं कह सकते। तुलनात्मक, दृष्टिसे प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है और धन लाभ तथा प्रयासोंमें सफलता की सूचना देता है। १४ या १६ ता० को जीवन में एक अप्रिय मोड़ आयेगा। १४ से २८ ता० के बीच उतार चढ़ाव या किसी अप्रिय घटना के योग हैं। नौकरीसे स्थानान्तरण संभव है। व्यापारमें हानि होगी या किसी व्यवसायमें पूंजी लगावेंगे। पुलिस और टैक्स-विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। २९ ता० से आपका मनोबल बढ़ जायेगा और प्रयासोंमें

सफलता मिलेगी । निकट सम्पर्क वालोंसे कलह विवाद, दिनचर्या अस्तव्यस्त रहेगी और रातमें बुरे सपने दिखाई देंगे । सामाजिक प्रतिष्ठाको उत्तरार्द्धमें एक धक्का लगेगा। संतानको कष्ट । स्वयंको ज्वर या उदर विकार। ४-६-१४-२३ ता० नेष्ट ।

मिथुन

(क, की, कु, घ, छ, के, को, ह)

फरवरी—यह मास आपके लिए मिश्रित फल वाला है । पारिवारिक समस्याएं और बौद्धिक उलझनें आवेंगी । पारिवारिक स्तर पर कोई अप्रिय घटना भी हो सकती है। कठिनाइयोंसे भिड़नेके स्थान पर उनसे दूर भागने या सुसमयकी प्रतीक्षा करनेको जी चाहेगा। धैर्य और विवेकसे काम लेकर आप बुरे फलों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं । धन-लाभके लिए ६-८-१५-१७-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि १-२-१६-२० भी श्रेष्ठ रहें। व्यापारमें कुछ मूलभूत परिवर्तन करनेको सोचेंगे । उत्तराधिकारादिसे धन-लाभ संभाव्य है । पत्नीसे सेवा-सहयोग तथा प्रोत्साहनकी प्राप्ति । किसी प्रियजनसे विछोह । दौड़धूप करनी पड़ेगी। ११ ता० नेष्ट ।

मार्च—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। १७ से ३१ तारीखके बीच परिस्थितियोंमें सुधार होने लगेंगे, पर वे इतने हलके होंगे कि संभव है उनका ज्ञान आपको न हो सके। पारिवारिक समस्या और मानसिक अशान्ति के योग चलते रहेंगे। उनके साथ जीवनके मूल को सुख-शान्तिसे सींचने वाले तत्व भी रहेंगे। उत्साह और आत्म-विश्वासमें वृद्धि होगी। प्रयासोंमें सफलता मिलने लगेगी। धन-लाभके लिए १-७-८-६-१०-१८-१६-२६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, प्राचीन धन या बकाया रकमकी की प्राप्ति । २-३-३०-३१ तारीखोंमें विशेष व्ययके योग हैं । व्यापारमें सुधार होनेकी आशा है। १० ता० नेष्ट ।

अप्रैल—मानसिक चिंताओं और पारिवारिक समस्याओंके योग पूर्ववत् चलते रहेंगे उनकीं पृष्ठभूमिमें उन्नति-प्रगतिके अवसर भी मिलेंगे जो आपके असावधान रहने पर हाथसे निकल जायेंगे। यदि आप पराक्रम और मनोबलसे काम लें तो इस मासको अच्छा बना सकते हैं । प्रयासोंमें सफलता पानेके लिए २-११-२० या २१-२६ ता० अनुकूल हैं। धनलाभके लिए २-३-४-११-१३-२०-२१-२२-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है ५-१५-२४ भी अच्छी रहेंगी, एक छोटा आकस्मिक लाभ। व्यापार को व्यवस्थित करनेके लिए योजनाएं बनावेंगे। हर्षदायक समाचार । पत्नीसे सेवा सहयोगकी प्राप्ति होती रहेगी । प्रेमसंबंधमें सफलता । उदररोगसे कष्ट। ६ तारीख नेष्ट।

कर्क

(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

फरवरी—यह मास अच्छा है । तृतीय स्थानमें बैठे हुए शनि और मंगल आपको उत्साह और स्वबाहुबल पर विश्वास प्रदान करेंगे लेकिन कोई ठोस उपलब्धि न हो सकेगी। यह भी संभव है कि कुछ परिस्थितियां आपको समुचित श्रम और उद्योग न करने दें । विलासपूर्ण प्रवृत्तियोंके कारण या अन्यान्य सामाजिक-पारिवारिक कारणोंसे

घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे। गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे। कार्यकारी जीवनमें उतार-चढ़ाव आनेके योग हैं। धन-लाभके लिए ३-११-१२ ता० श्रेष्ठ हैं, नवीन वस्त्र वैभवकी प्राप्ति संभाव्य। ५ ता० चिन्तनीय हैं। उत्तरार्द्धमें व्यापारमें असंतोषजनक परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। समाजमें खान-पान-भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। स्वास्थ्यमें आकस्मिक खराबी। ६ ता० नेष्ट।

मार्च—यह मास साधारण रूपसे अच्छा है। पारिवारिक समस्याओं और मानसिक चिन्ताओंके कारण आशंकितसे रहेंगे। श्रम और उद्योग करना चाहेंगे किन्तु दृढ़तापूर्वक कर न सकेंगे। बार-बार विलासोंकी ओर मन जायेगा जिसके कारण घर-बाहर विवाद उत्पन्न हो सकता है। श्रम करने पर कई छोटी-छोटी सफलताएं मिल जायेंगी। धन-लाभके लिए २ या ३-११-२१-३० ता० श्रेष्ठ हैं। प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। २-३-४ ता० में विशेष व्यय और हानि। व्यापार को सुधारना चाहेंगे पर सुधार न सकेंगे। नौकरीमें उतार-चढ़ाव आवेंगे। उत्सवादिमें सम्मिलन। एक प्रियजनसे विछोह। पत्नीसे वैमनस्य। ८ ता० नेष्ट।

अप्रैल—यह मास अच्छा है, लेकिन शुभ ग्रहोंके वेधके कारण उपलब्धियोंकी मात्रा बहुत न्यून रहेगी। कर्मण्यता और दृढ़ मनोबलसे काम लें तो इसे सफलताओंका मास बना सकते हैं। यह भी संभव है कि पहली तारीख को ही कोई अप्रिय घटनाके घटित हो जानेसे आपका मन खिन्न हो जाय। धन-लाभके लिए ५-७ या ८-१५-१७-२४-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है १३ और २२ ता० भी अच्छी रहेगीं, उत्तरार्द्धमें लाभ-स्रोतका विकास। विशेष व्यय हानिसे त्रस्त रहेंगे, चोरोंसे सावधान रहें। नौकरीकी स्थितिमें थोड़ा सुधार होगा। व्यापार को सुव्यवस्थित बनानेका प्रयत्न करेंगे। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। पारिवारिक सुखोंमें बाधाएं उत्पन्न होगी। दौड़धूप अवश्य। ४ ता० नेष्ट।

सिंह

(म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

फरवरी—इस मास को आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। श्रम करने की भावना होते हुए भी समुचित उद्योग न कर सकेंगे। तामसी खानपानमें रुचि रहेगी। प्रयत्न करने पर सफलता मिल सकती है, इस दृष्टिसे ३-१२-२२ ता० अनुकूल हैं। एक प्रभावशाली मित्र सहयोग देगा। धन लाभके लिए २-३-४-५-११-१२-१३-१४-२०-२१-२२-२३-२४ ता० अच्छी हैं, ४ या ५ ता० को कोई आकस्मिक लाभ होगा। संभव है किसी विशेष कारणसे ऋण लेने की आवश्यकता पड़ जाय। व्यापार की स्थितिमें थोड़ा सुधार होगा। पत्नीको कष्ट मिल सकता है। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-वैमनस्य। स्वास्थ्य असंतोषजनक, चोट-चपेट संभाव्य। दौड़धूप अवश्य। ७ ता० नेष्ट।

मार्च—लाभ स्थानमें बैठे हुए राहु महत्वाकांक्षा और उद्योगके प्रति रुचि देंगे किन्तु यथोचित श्रम न कर सकेंगे, समस्याओं और संघर्षोंसे दूर भागेंगे। घर बाहर कलह-विवाद के अवसर आवेंगे जिनमें आपकी विजय संदिग्ध है। विलासों भोगोंमें आपका मन

भटकता रहेगा जिनमें न सुख मिलेगा और न सार। धन-लाभके लिए १-२-३-४-१०-११-१२-१३-२०-२२-२३-२९-३०-३१ ता० अच्छी हैं, प्रथम सप्ताहमें एक छोटे लाभकी आशा है। व्यापारकी स्थिति असंतोषजनक रहेगी। समाजमें खानपान और भ्रमण-मनोरंजनके अवसर मिलते रहेंगे। दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। ५-६ तारीखें नेष्ट।

अप्रैल—शुभफलदायक ग्रहोंकी संख्या न्यून है। नेष्ट फल देने वाले ग्रह वेधग्रस्त होने से आपका कुछ बिगाड़ न सकेंगे। गत मासों जैसी ही स्थिति रहेगी। निकट सम्पर्क वालों से कलह-विवादके योग हैं। यह संतोषका विषय है कि २८ ता० से सुधार होने लगेंगे और यह तारीख स्मरणीय रहेगी। धन-लाभ के लिए १-७-८-९-१०-१७-१८-१९-२६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है ६-१६-२५ तारीख भी अच्छी रहें, आकस्मिक लाभ। विशेष व्यय और हानिके योग चलते रहेंगे। खानपान-भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। पत्नीके लिए मास कष्टप्रद। उनसे वैमनस्य रहेगा। १४ तारीखको एक सुन्दर स्त्रीसे भेंट। ३-१२-२१ या २२-२९-३० तारीखें नेष्ट।

कन्या

(टो, पा, पी, पू, ष, ठ, पे, पो)

फरवरी—यह मास बहुत अच्छा है। अब यह आप पर निर्भर है कि इसे आनंद-विनोद का मास बनाते हैं या कार्यकारी जीवनकी प्रगतिका। कई समस्याओंका समाधान १५ तारीख तक हो जायेगा। धन-लाभके लिए ६-८-१५-१७-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १-१०-१९ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ संभाव्य, नवीन वैभव-सम्पदाकी प्राप्ति। विशेष तथा कष्टप्रद व्ययसे बचना मुश्किल है। व्यापारकी दशामें कुछ थोड़ा सुधार होगा। बहुजन समागम, हर्षदायक समाचारोंकी प्राप्ति। पत्नीसे गार्हस्थिक सुख मिलते रहेंगे। घरमें कोई मंगल कार्य। स्वास्थ्य संतोषप्रद रहेगा। स्थानीय दौड़धूप रहेगी। १८ ता० नेष्ट।

मार्च—यह मास आपके लिए पर्याप्त अच्छा है। मनोरंजनों, कार्यक्रमों, व्यसनों तथा विलासोंमें अधिकांश समय व्यतीत होगा। परम्पराओं तथा रूढियोंसे हट कर नयी गति-विधियां सामने आयेंगी। श्रम और उद्योग जम कर न कर सकेंगे। प्रयासोंमें सफलता और शत्रु-बाधाओं पर विजय मिलेगी, पिछली चिन्ताओं और समस्याओं पर ध्यान देनेका अवसर ही न मिलेगा। पहली तारीखसे जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायेगी और मासान्त तक एक सन्तोषजनक स्थितिमें पहुंच जायेंगे। घर और पड़ोसमें मंगलकार्य। धन-लाभके लिए १-५-७-९-१४-१७-१९-२४-२६-२८ ता० श्रेष्ठ हैं।

अप्रैल—यह मास अधिकांशमें अच्छा है। अधिकांश समय व्यर्थके कामोंमें निकल जायेगा। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। महत्व-पूर्ण व्यक्तियोंका सहयोग प्राप्त होगा। व्यसनों-विलासोंके कारण कार्यकारी जीवन पर ध्यान न दे सकेंगे। धन-लाभकी दृष्टिसे २-३ या ४-११-१३-२१-२२-२९ ता० श्रेष्ठ हैं। आकस्मिक लाभ और कोषकी वृद्धि संभाव्य। विशेष और

कष्टप्रद व्यय। असावधान रहने पर संचित धनका सहारा लेना पड़ सकता है। व्यापारको बढ़ानेके लिए नये उपाय करेंगे। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन। घर-बाहर कलह-विवाद के अवसर भी आवेंगे। गृहस्थ सुखोंमें बाधाएं रहेंगी। २७ ता० नेष्ट।

तुला

(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

फरवरी—गत मासोंकी तुलनामें यह मास कुछ अच्छा है। दीर्घकालसे चली आ रही समस्याएं, चलती रहेंगी। बीच-बीच में कष्ट भी देंगी। साथ ही सुखशांतिदायक कुछ तत्व उभरे हुए रहेंगे। अनिद्रा, दुःस्वप्न और अप्रिय समाचार। धन-लाभके लिए १-८-९-१०-२७-१८-१९-२८ ता० श्रेष्ठ हैं। गार्हस्थिक वैभव और सम्पदामें थोड़ी सी वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक आवश्यकतावश नौकरीमें कुछ दिनोंका अवकाश लेंगे। व्यापारके व्यवस्थित करनेको सोचेंगे। पुलिस और टैक्स-विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। समाजमें मान-प्रतिष्ठा। पारिवारिक सुखोंमें वृद्धि। घरमें कोई मंगल कार्य। वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं रहेंगी। प्रियजनोंकी बीमारी संभाव्य। कष्टप्रद यात्राएं। २ या ३ ता० नेष्ट।

मार्च—यह मास वैसा ही है जैसे किसी कठिन लम्बी यात्राके बीच घना छायादार वृक्ष मिल जाये। जो जटिल समस्याएं विगत कई मासोंसे चली आ रही हैं वे पूर्ववत् चलती रहेंगी। उनके रहते हुए भी कुछ ऐसे तत्व जीवनमें आ जायेंगे जो मनको शांति प्रदान करेंगे। आपको वांछित सफलता भले ही न मिले किन्तु परिस्थितियोंमें सुधारकी योजना बना सकेंगे। शत्रुओं विरोधियोंकी सक्रियताके बीच सहयोग देने वाले भी मिल जायेंगे। कुछेक छोटे-छोटे रुके हुए काम चल निकलेंगे। इस अस्थायी ग्रह स्थितिमें आपको अधिकाधिक सुधार करनेका प्रयत्न करना चाहिए। धन लाभके लिए १-९-१९-२८ ता० श्रेष्ठ हैं। विशेष व्यय और हानिसे त्रस्त रहेंगे। ता० २-२९ नेष्ट।

अप्रैल—कुछ विलक्षण सी गंभीर समस्याएं आपको घेरे हुए हैं। अनिद्रा और दुःस्वप्नोंके योग भी आ जाते हैं। इस और अगले महीनेमें ऐसी सम्भावना है कि आप अपने ही लिए कोई अहितकर काम कर बैठें। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्ध अधिक अच्छा है। घर-बाहर कलह-विवाद। व्यसनों-विलासों में विशेष रुचि रहेगी। लाभकी तुलनामें व्यय और हानिके योग प्रबल हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति भरको धन प्राप्त हो जायेगा, इस सम्बन्धमें ४-५-१४-१५-२३-२४ ता० श्रेष्ठ हैं। नौकरी-व्यापारकी स्थिति असन्तोषजनक। समाजमें खानपान तथा भ्रमण-मनोरंजनके कई अवसर मिल जायेंगे। दौड़धूप अवश्य करनी पड़ेगी। स्वास्थ्य असंतोषजनक रहेगा। २५ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यु)

फरवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है। शुभ फलोंमें क्रमशः वृद्धि होती जायेगी। उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे, प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। इस ग्रहस्थितिका अधिकाधिक लाभ उठाना

चाहिए । धन-लाभके लिए १-२-३-४-१०-११-१२-१३-१९-२२-२३ ता० श्रेष्ठ हैं। आशा है ७-१६-२६ भी अच्छी रहेंगी । आकस्मिक लाभ । किन्हीं शुभ कार्योंमें विशेष व्यय होगा। समाजमें प्रभाव वृद्धि, उत्सवोंमें सम्मिलन, भ्रमण मनोरंजनके अवसर, हर्षदायक समाचार । व्यापारमें नयी योजना-व्यवस्था लागू करेंगे । पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति होगी। सन्तानके लिए यह मास कुछ कष्टप्रद है । छोटी-छोटी यात्राएं । ५-१४-२४-२८ तारीखें नेष्ट।

मार्च—यह मास आपके लिए बहुत अच्छा है, विशेषकर प्रथमार्द्ध । शुभफलोंकी जो बहुलता विगत कई मासोंसे दृष्टिगोचर हो रही थी, उसमें प्रत्यक्ष कमी आ जायेगी। १५ या १६ तारीखसे छुट-पुट उलझनें आने लगेंगी। अपने कठिन तथा महत्वपूर्ण कामोंको प्रथमार्द्धमें बना लेना चाहिए। सहयोग देने वाले मिलेंगे। बीच-बीच आलस्यका अनुभव होगा, फिर भी उत्साहपूर्वक उद्योग और श्रम करेंगे। प्रयासों में सफलता मिलेगी। शत्रु और विरोधी पराभूत होंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। धन-लाभके लिए १-२-३-९-११-१९-२१-२८-३० ता० श्रेष्ठ हैं । समाजमें मान-प्रतिष्ठामें वृद्धि । भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। २७ ता० नेष्ट।

अप्रैल—यह मास पर्याप्त अच्छा है। ४ या ५ ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। उलझनें समाप्त हो जायेगी । शत्रु-बाधाओं पर विजय मिलेगी। आनन्दोपभोगमें भी बहुत सा समय नष्ट होगा । आप चाहें तो इसे उपलब्धियोंका मास बना सकते हैं । स्थायी साधन और अन्य रास्तोंसे धन-लाभ, इस संबंध में ५-७ या ८-१५-१७-२४-२६ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है ९-१८-२७ ता० भी अच्छी रहें, आकस्मिक लाभ। किसी शुभ कार्यमें विशेष व्यय होगा। नौकरीमें पदोन्नतिका अवसर मिल सकता है। व्यापार बढ़ेगा, आप चाहेंगे तो इसके लिए ऋण भी सरलतासे मिल जायेगा । समाजमें प्रभाव-वृद्धि, मान और जनप्रियता। सुसमाचार १-२३-२७ ता० नेष्ट।

धनुः

(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा भे)

फरवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है। १२ तारीखसे शुभफलोंमें वृद्धि होगी । इसे आप उपलब्धियोंका मास बना सकते हैं। लेकिन सम्भव है कि आप विलासोंमें पड़कर अपना बहुत सा समय नष्ट कर दें। घर-बाहर विवादके अवसर भी आ सकते हैं। अनैतिकता से सफलता पानेकी इच्छा होगी । कामनाएं पूर्ण होंगी। धन-लाभके लिए १-६-८-१०-१५-१७-१९-२५-२७ तारीखें श्रेष्ठ हैं। आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव सम्पदा, कोषकी वृद्धि। नयी व्यवस्थाके साथ व्यापार बढ़ेगा। समाजमें मान, उत्सवों दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार गार्हस्थिक सुखोंकी प्राप्ति। प्रेम-सम्बन्धमें बाधाएं । २५ या २६ तारीख नेष्ट।

मार्च—यह मास अच्छा है, विशेषकर प्रथमार्ध। अनेक योजनाएं बनावेंगे किन्तु सफलतामें संदेह है । मित्रों परिजनोंसे सहयोग मिलेगा। आनन्द-विनोदमें विशेष रुचि लेंगे। किसी कुपात्रसे प्रेम सम्बन्ध चलता रहेगा और उसमें सफलता भी मिलेगी। धन-लाभके लिए

३-४-५-१२-१३-१४-२२-२३-२४-३१ श्रेष्ठ हैं। आशा है कि १-२-७-९-११-१७-१९-२१-२६-२८-३० भी अच्छी रहेगी। नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। अस्वाभाविक व्यय निरंतर होता रहेगा। व्यापारमें उतार-चढ़ावके योग पूर्ववत् होते रहेंगे। उन्मुक्त होकर प्रगति न कर सकेंगे। समाजमें मान, उत्सवादिमें सम्मिलन, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, सुसमाचार। २५ ता० नेष्ट।

अप्रैल—ग्रहस्थिति अनुकूल है लेकिन अनैतिक कामों, व्यसनों, विलासों और मनोरंजनोंमें पर्याप्त समय नष्ट होगा। बौद्धिक उलझनें जन्म लेंगी और प्रियजनोंसे कलह-विवादके अवसर आवेंगे। उत्साह और सुअवसरोंके होते हुए भी समुचित उद्योग न कर सकेंगे। धन-लाभके लिए १-२-७ से ११-१८-१९-२०-२१-२७-२८-२९ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है ३ या ४-५-१३-१५-२४ भी अच्छी रहेंगी, एक-दो छोटे आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभवकी प्राप्ति। अस्वाभाविक व्यय। व्यापारमें उतार-चढ़ाव आवेंगे। उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। सन्तानको कष्ट। छोटी-छोटी यात्राएं। नौकरीमें उच्चाधिकारीसे विवादकी संभावना है। ३-१२-२१ या २२-३० ता० नेष्ट।

मकर

(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

फरवरी—प्राय: वैसी ही परिस्थितियां रहेंगी, जैसी गत माससे चली आ रही हैं। यथोचित श्रम और उद्योग न कर सकेंगे या उसके अवसर ही न मिलेंगे। आलस्य और थकानका अनुभव। द्विविधापूर्ण स्थिति रहेगी। अनैतिक कामोंमें रुचि। विशेष व्यय और हानिसे न बच सकेंगे, १८ ता. में विशेष सावधान रहें। चालबाज लोगों और शीघ्र धनी बनाने वाली योजनाओंसे बचना चाहिए। धनलाभकी दृष्टिसे ७-१६-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि ८-१७-२७ भी अच्छी रहें। नौकरीमें अप्रिय स्थानान्तरण या पदावनतिकी सम्भावना। उत्तरार्द्धमें व्यापारको व्यवस्थित करनेका प्रयास करेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठाको धक्का लग सकता है। किसी पूजनीय व्यक्तिको कष्ट। २३ तारीख नेष्ट।

मार्च—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। व्यक्तिगत रूपसे द्विविधा पूर्ण स्थितिमें रहेंगे। आलस्य और थकानका अनुभव कार्यकारी जीवन सम्बन्धी योजनाएं बनावेंगे और बिगाड़ेंगे। ९ ता० से सुधार आरंभ होंगे, जो १५ या १६ ता० से बढ़ेंगे। मध्यमाससे आत्म-विश्वासमें वृद्धि। धन-लाभके लिए ६-१५ या १६-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि १-९-१९-२८ भी अच्छी रहें, नवीन वस्त्र-वैभव सम्पदा। विशेष व्ययके योग पूर्ववत् रहेंगे, १७ या १८ ता० चिन्तनीय है। व्यापारमें कुछ उतार-चढ़ावके बावजूद कुछ सुधार होंगे। समाजमें मान, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, सुसमाचारोंकी प्राप्ति। २२-२३ ता० नेष्ट।

अप्रैल—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। परिस्थितियां पूर्ववत् रहेंगी। व्यक्तिगत रूपसे चिन्तित और अव्यवस्थित रहेंगे। किसी काममें मन न लगेगा फिर भी जीवनमें रस घोलने वाला बाहरी वातावरण बन जायेगा।

प्रयासोंमें सफलता पानेके लिए प्रथमार्द्ध और आनन्द-विनोदके लिए उत्तरार्द्ध अच्छा है। एक प्रिय व्यक्तिका सहयोग मिलता रहेगा। दुर्बलता, थकान और आलस्यका अनुभव होता रहेगा। धनलाभके लिए ३-५-१२-१५-२१ या २२-२४-३० ता० श्रेष्ठ हैं। विशेष व्यय होता रहेगा. १४ ता० विशेष चिन्तनीय है। समाजमें मान जनप्रियतामें वृद्धि, उत्सवादिमें सम्मिलन, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। नौकरी व्यापारकी स्थितिमें थोड़ा सुधार होगा। १-१८-१९-२० तारीखें नेष्ट :

कुम्भ

(गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

फरवरी—यह मास संघर्षपूर्ण है। किसी अनिष्टकी संभावनासे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। एक द्विविधा पूर्ण स्थितिमें रहेंगे। गुप्त चिन्ताएं और आशंकाएं मनको परेशान करेंगी। भगवत्कृपा और महापुरुषोंकी कृपासे लाभान्वित होंगे और भविष्यमें सुधारकी आशा बधेंगी, कठिन आर्थिक दबाव और धन-हानिके योग होते हुए भी आवश्यकताओंकी पूर्ति भरको धन मिल ही जायेगा। धनलाभके लिए १-६-७-१०-१५-१६-१९-२५-२६ ता० अनुकूल हैं। २० से २३ तारीखोंके बीच विशेष व्ययके योग हैं। नौकरीमें अप्रिय स्थानान्तरण यदि गतमास नहीं हुआ है तो अब हो सकता है। नयी व्यापार-योजना पर विचार करेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित। यात्रा तथा दौड़धूप। ११ १२ ता० नेष्ट।

मार्च—जीवनमें जो गंभीर अव्यवस्था फैली है तथा जो बौद्धिक उलझनें आपको घेरे हैं उनमें कमीकी आशा है। भविष्यके सम्बन्ध में एक अनिश्चितताकी भावना आपमें व्याप्त है और वह इस मास दूर होने वाली नहीं। किसी कुपात्रके प्रति आपका प्रेमसम्बन्ध चलता रहेगा। धैर्य और शांतिके साथ सुसमयकी प्रतीक्षा करनेके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है, जल्दबाजी करनेसे स्थिति और भी उलझ सकती है। आगामी मासमें सुधारोंकी कुछ आशा दिखायी देने लगेगी। धनलाभके लिए १-८-९-१८-१९-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं। आशा है कि ५-६-१४-१५-१६-२४-२५ ता० भी अच्छी रहेंगी। आर्थिक दबाव। बृहस्पति और शुक्र प्रत्येक क्षेत्रमें आपकी रक्षा करेंगे। २०-२१ ता० नेष्ट।

अप्रैल—यह मास अच्छा है और सुधारों की सूचना देता है। आन्तरिक जीवनमें आप कितने भी दुःखी क्यों न हों पर बाहरी वातावरण बदलने लगेगा और मासके अन्तिम दो दिनोंमें आप देखेंगे कि अनुकूल परिवर्तन हो गये हैं। नयी आशाओंका उदय। मानसिक तनावमें कमी आवेगी। सहयोग देने वाले मिल जायेंगे। भाग्य साथ देगा। धर्म पर आस्था बढ़ेगी। धनलाभके लिए ४-५-१४-१५-२२-२४ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि २-३-११-१२-२०-२१-२२-२९-३० ता० भी अच्छी रहें, आकस्मिक लाभ संभाव्य। विशेष तथा कष्टप्रद व्ययके योग चलते रहेंगे नौकरी-व्यापार की स्थितिमें सुधारके लक्षण प्रकट होने लगेंगे। समाजमें मान-जनप्रियताकी प्राप्ति, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवादिमें सम्मिलन, सुसमाचारोंकी प्राप्ति। सहयोग मिलेगा। १६

ता० नेष्ट।

मीन

(दी, दु, थ, झ, दे, दो, च, चा, ची)

फरवरी—यह मास अच्छा है, किन्तु किसी अप्रिय घटनाकी संभावनाएं साथ लगी हैं। वह घटना आपकी व्यक्तिगत ग्रह स्थिति पर निर्भर हैं। कलह विवाद और अंधाधुंध तेज सवारियोंमें चलनेसे बचना चाहिए। पत्नीको कष्ट। उदर विकार। शुभ फल भी पर्याप्त हैं। कुछ सहयोगी मिल जायेंगे। अप्रिय परि-स्थितियोंसे बचनेके लिए जो प्रयत्न करेंगे, उनमें सफलता मिलेगी। धनलाभकी दृष्टिसे १-३-६-८-१०-१२-१५-१७-१६-२२-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं। छोटे आकस्मिक लाभ भी हो सकते हैं। व्यापारमें बीच-बीच अवरोध आयेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठाको धक्का लग सकता है। पारिवारिक समस्याएं रहेंगी। दिनचर्या अस्तव्यस्त। १८ ता० नेष्ट।

मार्च—यह मास संघर्षपूर्ण है। व्यक्तिगत रूपसे घिराव और द्विविधापूर्ण स्थितिमें रहेंगे। अकारण आलस्य और थकानका अनुभव। स्पष्ट है कि आपके सामने कलह-विवाद और संघर्ष हैं। असावधान रहे तो गंभीर रूप ले सकते हैं। मन अशान्त रहेगा। पारिवारिक समस्याएं उभरेंगी। श्रम और उद्योग करनेके अवसर कम मिलेंगे। एक निकट संबंधी सहयोग देगा। विरोध करने वाले कई रहेंगे। धन लाभके लिए १-२ या ३-६-११-१६-२१-२८-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-१४-२४ भी अच्छी रहेंगी। एक छोटा आकस्मिक लाभ। समाजमें जैसे-तैसे प्रतिष्ठा बनी रहेगी। पत्नी को कष्ट, उदर रोगोंसे कष्ट। दुर्घटना भय। १७-१८ ता० नेष्ट।

अप्रैल—व्यक्तिगत रूपसे घिराव जैसी स्थितिमें रहेंगे और चारों ओर संघर्षणपूर्ण वातावरण रहेगा। ऐसा लगेगा कि जैसे समाज की गतिसे अलग-थलग पड़ गये हों। तृष्णाएं आपको अनैतिकताकी ओर प्रेरित करेंगी। उनके कारण घर-बाहर कलह-विवादके अव-सर आवेंगे। यह स्थिति विगत कई मासोंसे चल रही है और आप इससे परिचित हैं। पत्नीके लिए मास कष्टप्रद है। आपके स्वा-स्थ्यके लिये भी समय अनुकूल नहीं है। उदर-विकार या चोट चपेटसे कष्टके योग हैं। संभवतः आपको भावी जीवनकी कोई नई रूपरेखा बनानी पड़े, जिसके अवसर प्राप्त होंगे। धनलाभके लिए ७ या ८-१७-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है २-५-११-१३-१५-२०-२१-२२-२४-२६ भी अच्छी रहेंगी। दो प्रियजनों का सहयोग मिलेगा। कष्टप्रद दौड़धूप। १४ ता० नेष्ट।

विवाहमुहूर्त निकालनेके दोहे

[प्रेषक :—श्री महेशचन्द ज्योतिषी जोधपुर]

[जैनमुनि श्री मतिकुशल सूरि रचित इन दोहोंमेंसे ३० दोहे गताङ्कमें छप चुके हैं। शेष ३० दोहे अब यहां प्रस्तुत हैं। इनमें कोई विशेष बात नहीं हैं, मध्यममानसे साधारण ज्ञानके लिए उपयोगी है। —सम्पादक

एकार्गल निर्णय—

त्रयोदश आडी युगल सूं लिखियो आड़ी लीह।
रेख एक बिच में हुवो एकार्गल इम दीह॥ ३१॥
विवाह दीह जे योग हुई करियों ठीक बहोड़।
एकी हुवे तो एक टव बेकी अढवीश जोड़॥ ३२॥
पाछे आधा कीजिये अश्विनि ऋक्ष गिणत।
आवे ऋक्ष गिणतां थकां तेहि ज शीश दियन्त॥ ३३॥
अनुक्रम सब ही मांडिये चन्द्र सूर्य तिम दैह।
रेख एक शशि सूर्य हुई तो रंडा दोष तजेह॥ ३४॥

बाण (बुध पञ्चक) निर्णय—

पञ्चेन्दु द्वादश दिन अष्ट चड त्यारे लिखियो अंक।
वीता दिन संक्रान्ति ना भेलो मांही निशंक॥ ३५॥
नवे भाग देता थकां रहे पाञ्च किणि धाम।
रोग अग्नि नृप चोर मृत्यु टालि करो शुभ काम॥ ३६॥

बाण ज्ञानका यह मध्यम स्थूलमान है। सूक्ष्म विचार सूर्यके गतांशोंसे करना उचित है। — सम्पादक]

भरिया बाण निर्णय—

रोग बाण रवि वार हुवे शशि वारे नृप बाण।
भौम अग्नि गुरु चौर गिण मृत्यु शनि वारे जाण॥ ३७॥

चवरि दोष निर्णय—

वेद रुद्र अठारमो पंचविशो वलि जाण।
रवि वार थी ए दोष गिणि चवरि मृत्यु पिछाण॥ ३८॥

क्रान्ति साम्य निर्णय—

त्रिण आड़ी ऊभी "त्रिण मध्य मीन लिख देय।
चन्द्र सूर्य इक रेख हुई तो क्रान्ति साम्य कहेय॥ ३९॥
[यह भी मध्यम स्थूलमान है —सम्पादक]

क्रान्ति साम्य फल ज्ञान—

शास्त्र हएयो बह्नि दाजियो द्रष्टें नाग जीवन्त।
क्रान्ति-साम्यमें परणतां निश्चय मृत्यु करन्त॥ ४०॥

दश दोष निर्णय—

सुन्य प्रथम चड बढ़ वसु रुद्र पक्ष प्रमाण।
अठारे उगणीश तिम आगल वीश मडाण॥ ४१॥
अश्विनी थी तपतो नक्षत्र मृगशिर चन्द्र गिणन्त।
बेऊ अंक भेला करि सतवीश भाग दियन्त॥ ४२॥
शेष अंक आंकां महि कीजो युक्त निशंक।
सतवीश भागें दीय तो किहां रहें दश अंक॥ ४३॥

दश दोष फल ज्ञान—

मरुत मेघ पावक नृपति मृत्यु चोरि बहु रोग।
बढ़े कष्ट अरु हानि दश तजो सयाने जोग॥ ४४॥

इष्ट घटी निर्णय—

छाया आपणि देह की माथो पग सुं जोय।
तामें छव वलि भेलिये एकंठ की ज्यो सोय॥ ४५॥
एक सो इक वीश के दीज्यो भाग पिछाण।
लब्द आंक घटिका करी ऊबरता पल जाण॥ ४६॥

लग्न मान निर्णय—

मीन मेष घटी त्रिहु पल पैंतालीस बखाणी।
च्यार घड़ी वृष कुंभ हुई पल सिणगार पिछाणी॥ ४७॥
मिथुन मकरे जोय घड़ि पांच पल पांच ही।
धन कर्क पांडव घड़ि पांच, पल इकतालीसे॥ ४८॥
सिंह वृश्चिक घड़ि पांच, पल बैतालीस पिछानी।
तुल कन्या पांडव घड़ि पल इगती न बखानी॥ ४९॥

[यह मध्यमोदय है]

रेखद निर्णय—

एकादश षष्ठे अग्नि, वसु भवने रवि जोय।
हुवे रेखद इण स्थान कै अन्ये भंगद होय॥ ५०॥
जिम दिन कर तिम भौम शनि द्वादश इब को राहु।
तिम हा केत पिछाणिये भंगद अन्य अथाहु॥ ५१॥
रेखद चारे सौम्य ग्रह छठो अष्टम टाल।
तिम ही द्वादश टालिये रेखद अन्य संभाल॥ ५१॥

विश्वा निर्णय—

रवि त्रिण साढा पाञ्च शशि सित बुध विश्वा दोय।
त्रिण विश्वा सुर गुरु दिये शेषा डोढज होय॥ ५३॥

गोधूलिक निर्णय—

एकादश द्वितिये अग्नि लग्न थकि शशि होय।
यह गोधूलिक जानिये शेषा रजो मुख होय॥ ५४॥

त्याज्य गोधूलिक—

गोधूलिक माहिं छाडिये पाञ्च दोष ए जाण।
क्रान्ति साम्य कुलिका प्रथम मृत्यु षष्ठे शनि हाण॥ ५५॥
सुरगुरु मंगल बुध शुक्र लग्न थकि वसु होय।
ते गोधूलिक छाड़िये पण्डित कह्यो संजोय॥ ५६॥

गोधूलिक वेला निर्णय—

नभ रातो चिरमी जिसो दीशे किरण पांडूर।
तिण वेला कर-मेलिये हुई दूषण सब दूर॥ ५७॥

दोहा करणेका कारण व कर्त्ता का नाम—

संस्कृत अरु श्लोक तणों पंडित जाणे सार।
मूरख ने समझाईवा एह कह्यो अधिकार॥ ५८॥
दूर करि कच पच सऊ मन में करि विचार।
मति कुशल भाषा करचो ज्योतिष तणोज सार॥ ५९॥

ग्रन्थ करने का समय—

अठारे सो बत्तीस में वदि बैशाख वखाण।
पञ्चमी तिथि गुरुवार दिन कीधो सम्पूर्ण जाण॥ ६०॥

एक विशिष्ट पञ्चदशी यन्त्र

[लेखक :—श्री पं० राधाकृष्ण श्रीमाली]

सचमुच पन्द्रहका यंत्र अपना एक अलग ही महत्व रखता है। मूलतः इसके महत्वके बारेमें जितना भी कहा जाये वह कम ही है। प्रायः बड़े-बड़े व्यवसायियों, धनिकों, पूंजीपतियों, सेठ-साहूकारों, मिल-मालिकोंके पूजास्थल, कार्यालय, घरमें, मिलमें उक्त यन्त्र दृष्टिगोचर होता है। इसीसे इसके महत्वकी परीक्षा भली प्रकार हो जाती है। मैंने अपने जीवनमें कदम-कदम पर इसका प्रयोग किया है, एवं सत्यताकी कसौटी पर पञ्चदशी यन्त्रको सही पाया है।

मैंने लगभग सम्पूर्ण भारत देखा है। बड़े-बड़े मन्दिर, गुफाएं, धार्मिक स्थल देखे हैं। अनेक स्तम्भों व मुख्य मन्दिरोंमें इसे उत्कीर्ण हुआ देखा है।

पन्द्रहके यंत्रका प्रयोग किं वा उपयोग ३—३ राशियोंके लिए होता है। इस प्रकार बारह राशि होनेके कारण १२÷३=४ प्रकारसे यह यन्त्र बनाया जाता है। मेष-वृष-मिथुनके लिए भिन्न प्रकारसे, कर्क-सिंह-कन्याके हेतु अलग तो तुला-वृश्चिक-धनुका, भिन्न मकर-कुम्भ-मीन राशि के लिए भिन्न प्रकारका पन्द्रिया यन्त्र है। जातक अपनी राशि सर्वप्रथम ज्ञात करलें एवं तदनुरूप यन्त्र प्रयोगमें लें। जातक अपनी राशि अपने नामके प्रथमाक्षरसे ज्ञात करलें—जो निम्न प्रकार हैं—

मेष—	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ।
वृष—	इ	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो।
मिथुन—	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा।
कर्क—	ही	हु	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो।
सिंह—	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे।
कन्या—	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो।
तुला—	रा	री	रु	रे	रो	ता	ती	तू	ते।
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू।
धनु—	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे।
मकर—	भो	जा	जी	खू	खी	खे	खो	गा	गी।
कुम्भ—	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा।
मीन—	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची।

इसी प्रकार जन्म तारीखके आधार पर भी आप अपनी राशि ज्ञात कर सकते हैं—

मेष—	२१ मार्च	से	२० अप्रेल	के	मध्य	जन्म।
वृष—	२१ अप्रेल	से	२१ मई	,,	,,	,, ।
मिथुन—	२२ मई	से	२१ जून	,,	,,	,, ।

कर्क—	२२ जून	से	२३ जुलाई	के	मध्य	जन्म	।
सिंह—	२४ जुलाई	से	२३ अगस्त	,,	,,	,,	।
कन्या—	२४ अगस्त	से	२३ सितम्बर	,,	,,	,,	।
तुला—	२४ सितम्बर	से	२३ अक्तूबर	,,	,,	,,	।
वृश्चिक—	२४ अक्तूबर	से	२३ नवम्बर	,,	,,	,,	।
धनु—	२४ नवम्बर	से	२२ दिसंबर	,,	,,	,,	।
मकर—	२३ दिसंबर	से	२० जनवरी	,,	,,	,,	।
कुम्भ—	२१ जनवरी	से	१६ फरवरी	,,	,,	,,	।
मीन—	२० फरवरी	से	२० मार्च	,,	,,	,,	।

पन्द्रह के यन्त्रकी प्राण-प्रतिष्ठा विधि-विधान पूर्वक न होनेसे इसका प्रभाव लगभग शून्य होता है। चीनमें इसका प्रभाव व्यापक प्रचार रूपमें है—

उपयोग—व्यवसाय-वृद्धि, उन्नति, मुकदमेंबाजीमें विजय, शत्रुनाश, दुःख व दारिद्रचका नाश, सन्तान-प्राप्ति, क्रूरग्रह-प्रभाव क्षीणतार्थ, सुसन्तान, नए कार्य व्यवसायके शुभारम्भ, सांझेदारीमें लाभ हेतु।

इस यन्त्रको अमावस्या, ग्रहण, नवरात्रि, होली, दीपावली सिद्धियोगके दिन शुभ मुहूर्तमें भोजपत्र, रजत या ताम्रपत्र अथवा स्वर्णपत्र पर उत्कीर्ण करवाना चाहिए तथा भोजपत्र पर अनार या चमेलीकी कलमसे अष्टगंधकी स्याहीसे लिखना चाहिए।

यंत्रको जिस दिन लिखना प्रारंभ किया है, उससे अगली पूर्णिमा तक नित्य लिखना चाहिए एवं नित्य पंचोपचारसे पूजन भी करना चाहिए। श्रेष्ठ तो यह है कि देवी नवार्ण मन्त्र-उत्कीर्ण किया जाये अर्थात् नं. १–में–ॐ, २–में 'ऐं', ३–में'ह्रीं', ४–में 'क्लीं', ५–में 'चा', ६–में 'मु'. ७–में 'डा' ८–में 'यै', ९–में 'विच्चै' लिखें।

जातक यदि रोग-ग्रस्त है तो नित्य कांस्यपात्र पर इसे अष्टगंधसे लिखकर धो लें एवं वह जल पीनेसे २१ दिनमें जातक अवश्य रोग मुक्त हो जाता है।

जातक यदि नौकरी या धंधेसे वंचित है तो ऐसी स्थितिमें भोजपत्र पर इस यन्त्रको केशरसे लिखकर स्वर्ण तावीजमें पहननेसे निश्चय ही धन-प्राप्त करता है तथा नौकरी-कार्य-व्यवसाय प्रारंभ करनेमें समर्थ होता है।

यदि जातक व्यवसायी है एवं व्यापार जम नहीं रहा है या हानिको प्राप्त हो रहे हैं तो ऐसी स्थितिमें ताम्र पत्र पर यन्त्र उत्कीर्ण करवा कर षोडषोपचारसे पूजन कर नित्य 'श्रीं' बीज मंत्र का पाठ करें एवं दुकानमें यन्त्र रखने पर व्यापारमें अवश्य ही वृद्धि होती है।

अपनी राशिका जो चरण है, उसीसे इस यन्त्रको लिखना आरम्भ करना चाहिए, यथा

अश्विनी नक्षत्रका तृतीय चरण है तो मे. वृ. मि. वाले १५ के यन्त्रको नं. ३ से लिखना प्रारंभ करना चाहिए—अर्थात् ३।४।५।६।७।८।९।१।२।

आपको नित्य 'ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं मम वांछितं देहि मे स्वाहा' का जाप करना चाहिए। १ लाख जप पूर्ण होने पर यन्त्र सिद्ध हो जाता है तथा अपना प्रभाव दिखाने लगता है।

किसी भी प्रकारकी विपत्ति आने पर इसे अनार कलमसे अष्टगंधकी स्याहीसे, भोजपत्र पर लिखकर पूजन कर हर समय अपने पास रखने पर हर संभव-असंभव विपत्ति दूर हो जाती है।

यन्त्रके सिद्ध हो जाने पर उपरोक्त मन्त्रकी दशांश आहुति घी, राल, रक्त चंदन, शहद, दूधके प्रसादसे देनी चाहिए। इस प्रकार दशांश आहुति देने पर पुरश्चरण हो जाता है।

इस यन्त्रको उत्कीर्ण करनेके लिए गुरुपुष्य या रविपुष्य-सर्वोत्तम रहता है। इसके उपरान्त भी निम्न नक्षत्र-तिथि व वार उत्तम माने गए हैं—

नक्षत्र—उत्तराफल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिरा।

वार—रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

तिथि—२।३।५।७।१०।११।१३।१५।

लग्न—लग्नसे १२।८ वां स्थान शुद्ध हो, कोई ग्रह न हो। जन्म लग्न या राशिसे ३।६।१० ११ वां लग्न हो, शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो, शुभ ग्रह युक्त हो।

चन्द्रमा जन्म लग्न व जन्म राशिसे ३।६।१०।११ वें स्थानमें हो। यन्त्रकी नियमित पूजाके बाद निम्न ध्यान-पाठ करें।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ॥ १ ॥
नमस्ते गरुड़ारूढ़े ! कोलासुर-भयंकरि !
सर्वपाप हरे देवि ! महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥
सर्वज्ञे ! सर्ववरदे ! सर्वदुष्ट-भयंकरि।
सर्व दुःख हरे देवि ! महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥
सिद्धि-बुद्धि प्रदे देवि ! भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी।
मन्त्रमूर्ते ! सदा देवि ! महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥
आद्यन्तरहिते देवि ! आद्यशक्ति महेश्वरि !
योगजे योगसंभूते ! महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे ! महाशक्ति महोदरे।
महापाप हरे देवि ! महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ ६ ॥
पद्मासनस्थिते देवि ! परब्रह्म-स्वरूपिणी।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥

श्वेताम्बर-धरे देवि ! नानालंकार-भूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥ ९ ॥
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्य-समन्वितः ॥ १० ॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु-विनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥ ११ ॥

मे० वृ० मि०

८	१	६
३	५	७
४	९	२

क० सिं० कं०

६	७	२
१	५	९
८	३	४

तु० वृ० ध०

२	७	६
९	५	१
४	३	८

म० कु० मी०

४	९	२
३	५	७
८	१	६

चांदीके अचूक चांस

माघ मास सं० २०३८ वि०

१२ जनवरीकी दोपहरसे १४ जनवरीके दोपहर तक चांदी पर तेजीका प्रभाव रहेगा। १४ जनवरीकी शामसे १६ की शाम तक मंदी का प्रभाव रहेगा। १९ जनवरीसे २१ तक तेजी चलेगी। २५ जनवरी से २६ तक तेजी अवश्य आवेगी। २ फरवरीसे ६ तक चांदी पर तेजी जोरदार आती रहेगी।

फाल्गुन मास सं० २०३८ वि०

११ फरवरीसे १३ की रात तक चांदी पर मंदी आवेगी। १४ फरवरीसे १८की शाम या १९ के दोपहर तक तेजी जोरदार आवेगी। २० से २२ फरवरी तक तेजी होगी। २४ से २६ फरवरी तक मंदीका रुख रहेगा। २ मार्च की शामसे ४ की शाम तक चांदी पर तेजी आवेगी। ५ मार्चकी शामसे ७ की दोपहर तक मंदी अवश्य आवेगी।

चैत्र मास सं० २०३८-३९ वि०

१० मार्चकी दोपहरसे १२ की दोपहर तक चांदी पर मंदीका झटका आवेगा। १५ मार्चसे १७ तक तेज रहेगी। १८ से १९ मार्च तक मंदी होगी। २४ मार्च तेज होगी। १९ मार्चसे २ अप्रैल तक तेजी घटाबढ़ीसे आती रहेगी। फिर ५-७ दिन चांदी पर घटाबढ़ी होती रहेगी।

सूचना—ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको १ बार निःशुल्क परामर्श दिया जायेगा।

पता—पं० नरोत्तम देव दीक्षित, ज्योतिषी
मोहल्ला दिल्लीवाला, हाथरस
(उ० प्र०)।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द जैन पोरसा वाले]

गत वर्ष १९८१ व्यापारिक दृष्टिसे बिलकुल घटबढ़ कम होनेसे बेकार रहा। अभी खोज की, उससे ज्ञात हुआ, कि सोना-चांदी के मार्केट सन् १९८२-८३ में बाजार सन् १९८०-८१ की अपेक्षा बहुत ही जोरदार चलेंगे। और सन् १९८४ में तो कभी भी २५ दिन या ३७ दिनमें सोना-चांदीके बाजार-दूने भाव या आधे भाव कर देने वाली तेजी मंदी चलेगी।

जनवरी १९८२

एक जनवरी १९८२ बुध मकरमें ६७ दिनके लिये प्रवेश करेगा—अतः आजसे १०-१२ दिन पूर्व या वाद तक भाव ऊंचे हों तो बेचे, मंदी हो तो खरीदे। लाइन बदल कर १५-२०-२५ दिनमें कोई लाईन चलेगीं। ६ जनवरी १९८२ शुक्र वक्री हैं—अतः साग सब्जी फल इत्यादि सस्ते होंगे। ९ जनवरी ८२ बुध-शुक्र युति होने पर साप्ताहिक लाइन सोना-चांदीके विशेष चलेंगे। एक सप्ताह तक तेजी-मंदी लगाकर व्यापार करें, साथ चन्द्र-ग्रहण—सूर्य केतु नजदीक होनेसे तिलहन दाल-वानामें १०-१२ दिनकी जोरदार लाइन तेजी या मंदेकी निकलेगीं। अतः १० जनवरी या १९ जनवरीसे १०–२२ दिनमें तिलहन सरसों तूअर मसूर चनामें झड़पी भयंकर मंदी आ सकती हैं। यहां मावट वर्षा भी होनेकी उम्मीद है। २९ जनवरी सूर्य गुरु केन्द्र चांदो सोनाके बाजारमें मंदी २-४ दिनको आ सकती है।

फरवरी १९८२

१ फरवरी १९८२ को सूर्य-बुध Inferior Conjuoction (युति) अष्टमी नजदीक होने से तिलहन-दलहनमें मंदी या तेजी (ध्यान मंदीका है) चलेगी। ५ फरवरीसे १३ फरवरी तक चांदी मंदी तो बादमें चांदी सोनामें तेजी आवेगी।

नोट—२०-२२ फरवरी या २०-२५ मार्च के आस पास किसी वर्ष भयंकर मंदी आकर नीचे भाव बने तो तुरन्त भयंकर तेजी आती है, ध्यानसे नोट करें।

२१ फरवरीको मंगल वक्री (२४ फरवरी को गुरु वक्री) का प्रभाव २-४ दिन वादसे १०-१५ दिन इकतरफा चलेगा। इसका प्रभाव तिलहन तेल दालवाने बाजारों और मौसम पर प्रभाव जोरदार पड़ेगा।

नोट :—तुला गुरु वक्रीके आसपास नीचे भाव वनने पर खरीदें—आगे भयंकर तेजी आ सकती है। लाभ-हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी।

मार्च १९८२

९ मार्चको बुध कुम्भ राशिमें प्रवेश करेगा (मकर राशिमें ६७ दिन रहकर) अतः १०-१५ दिन पूर्व या वाद तक नीचे भाव वाली वस्तुएं खरीदें तेज वस्तुयें बेचें। ६ मार्चसे ९ मार्च अलसी तिलहन-सरसोंमें मंदी। फ़िर १९ मार्चसे २४ मार्च तक तिलहनमें मंदी। चांदी सोना १४ मार्चसे २३ मार्च तक ९०) से

१५०) तक तेजी। २७ मार्चसे ८ अप्रेल तक सोना चांदीमें १००) से २००) की एक तेजी आ सकती है। १० मार्च या २० मार्चसे ३१ मार्चके मध्य तिलहन, दालवानामें भयंकर मंदी आवे तो खरीदें आगे तेजी आवेगी। यदि २० मार्चको ऊंचे भाव हों तो बेचें।

स्पेशल नोट :—३१ मार्चको सूर्य मंगल प्रतियुति १ अप्रेलको सूर्यसे शुक्र अधिक दूरी पर होनेसे ६ अप्रेलको शनि सूर्य प्रतियुति होने से चांदी-सोनामें बाजार जोरदार चलेंगे। किन्हीं वस्तुओंके भाव ऊंचे नीचे होकर लाइन बदल कर बाजार चलेंगे।

अप्रेल १९८२

११ अप्रेल सूर्य बुधकी सुपीरियर युति होगी। १५ अप्रेलसे १९ अप्रेल तक चांदी १००) से ३००) की तेजी आ सकती है, तो २८ अप्रेल मंदीका झटका आवेगा।

तिलहन दालवानाकी इकतरफा लाइनें :—

नोट :—यदि तेजी लिखी है, मंदी निकल पड़े तो मंदीका व्यापार करें। यहां इकतरफा लाइनका महत्व है। अतः इन तारीखोंमें जोरदार बाजार चलते हैं। अतः चांसके शुरू व अन्तकी तारीखोंमें तेजी मंदी दोनों लगावें।

(A) १४ जनवरी ८२ से ३१ जनवरी तक तिलहन वायदोंमें जोरदार मंदी तो एक दो दिनमें लाइन बदल चलेगी जोरदार (B) ११ फरवरीसे २३ फरवरी तक अच्छी तेजी की लाइन। फिर भी बाजार लाइन देखें क्योंकि लाइनका महत्व है। (C) ५ मार्च ८२ से १२ मार्च या ५ अप्रेलसे १५ अप्रेल जोरदार मंदीका धमाका तिलहन वायदोंमें हो सकता है। लाभहानिको जिम्मेदारी नहीं होगी।

गुड़ शक्करकी इकतरफा लाइनें—

२५ दिसम्बर ८१ से ८ जनवरी ८२ गुड़ में भयंकर तेजी तो १७ जनवरी तक मंदा, तो १७ जनवरीसे १० मार्च तक भयंकर तेजी आवेगी। घटे भाव फिर वापिस बढ़ जावेंगे। १० अप्रेल तक मंदी आवेगी।

नोट :—यदि बाजार तेजीकी बजाय मंदी चले तब मंदीका व्यापार करें। तेजी मंदीकी समाप्ति जाननेको जबावी पत्र भिण्ड भेजें।

मुहूर्त—विचार

मुहूर्त किसे कहते हैं—मुहूर्तके विषयमें हम आपको यह बताना चाहते हैं कि कार्यकी सफलतामें मुहूर्त भी एक आवश्यक वस्तु है। कहावत है कि "किस शुभ घड़ीमें कार्य आरम्भ किया जो दिन दूना और रात चौगुना फला" तथा "किस बुरी घड़ीमें कार्य आरम्भ किया कि काममें असफलता मिली" अतः मुहूर्तका महत्व सभी मानते हैं तथा सभी बड़े कार्य एवं मांगलिक कार्य शुभ मुहूर्तमें ही आरम्भ किये जाते हैं।

और सुनिए, आजकलकी सभ्यतामें कार्य सफलताके लिये जो Opposit party का Mood देखना आवश्यक समझते हैं, वह भी तो मुहूर्तका ही एक प्रकार है। उदाहरणार्थ "आपको किसी अफसरसे किसी कार्यकी सिद्धि के अर्थ मिलना है तो आप उस आफिसरके चपड़ासी व क्लर्क इत्यादिसे यह जाननेका प्रयत्न करते हैं कि आफिसर किस Mood में है। यदि आफिसर Fair mood याने प्रसन्न मुद्रामें हुआ तो संतोषजनक उत्तर मिलनेकी आशा रहती है।

इसी प्रकार ज्योतिषी मुहूर्त भी आकाशी ग्रहोंके Fair mood याने ग्रहोंकी शुभ दृष्टि देखनेका साधन है। आकाशी ग्रहोंके Fair mood को हो आप शुभ मुहूर्त समझ लीजिये। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार पृथ्वी पर स्थित सभी प्राणी मनुष्य, पशु-पक्षी, आकाशी ग्रहोंसे प्रभावित होते हैं। अतः ग्रहोंकी शुभ दृष्टि प्राप्त करनेके लिये शुभ मुहूर्त देखना आवश्यक है और शुभ मुहूर्तमें कार्य आरम्भ करके सफलता प्राप्त करनेमें ही व्यवहार कुशलता है।

प्राचीन कालमें इस मुहूर्त प्रणालीका अच्छा प्रचार था, पर आजकल बहुत कम हो गया है। इसका कारण कुछ तो मनुष्योंकी अज्ञानता है तथा कुछ समझदार पंडितोंने अंट-शंट मुहूर्त बता कर उसके दुष्परिणामोंसे जनताका विश्वास खो दिया है। अतः हम ज्योतिषके सर्वमान्य सिद्धान्तोंके आधार पर शुभ मुहूर्त बताकर जनतामें ज्योतिष विद्याके प्रति विश्वास पैदा करना चाहते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि महर्षियोंने मनुष्यके जन्मसे लेकर मृत्यु तकके १६ संस्कार बनाये हैं तथा उन संस्कारोंके सम्पन्न करनेके शुभ मुहूर्त भी निर्धारित कर दिए हैं। इन सोलह संस्कारोंमेंसे आजकलकी जनता अधिकांशतः यज्ञोपवीत (जनेऊ) तथा विवाह संस्कारमें ही मुहूर्त पूछती हैं, पर हम आपके पूछने पर सब प्रकारके मुहूर्त बतावेंगे।

मुहूर्त्त पूछनेके लिए आवश्यक सूचना—

मुहूर्त पूछनेके लिए कार्यका नाम, कार्य आरम्भ करने वालेका नाम व जन्म-राशि बतानी चाहिए। यात्रा मुहूर्तके लिये स्थान का नाम या गन्तव्य दिशाका नाम भी बताना चाहिये। विवाह मुहूर्तके लिए वर तथा कन्या का नाम बताना चाहिए। यदि वर कन्या दोनोंकी जन्म-पत्रिका अथवा जन्म-तारीख व समयका पता हो तो अवश्य बताना चाहिए, क्योंकि वर-कन्याके जन्म नामसे जो सावा अर्थात् विवाह संस्कारका मुहूर्त मिलाया जाता है, वह सर्व श्रेष्ठ होता है।

—सत्यनारायण ओझा

भारतीय संस्कृतिके आलोक-स्तम्भ

स्व० भक्त रामशरणदास

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

[भक्त श्रीरामशरणदासजीके देहावसानसे प्राचीन भारतीय संस्कृति और सनातनधर्मकी अपूरणीय क्षति हुई है। 'ज्योतिष्मती' से उनको विशेष अनुराग था। विगत ३६ वर्षोंसे वे 'श्री स्वाध्याय' और 'ज्योतिष्मती' में लेख बराबर भेजते रहे। इन पंक्तियोंके लेखक पर उनकी विशेष श्रद्धा रही। जब भी दिल्लीमें उनसे साक्षात्कार होता तो वे एक बार पिलखुवा चलनेका अनुरोध करते रहते थे। कई पत्रोंमें भी उन्होंने लिखा कि 'एक बार पिलखुवा पधारनेकी अवश्य कृपा करें, आपका बालक शिवकुमार आपको दिल्लीसे साथ ले आवेगा।'' परंतु, समयाभाववश भक्तजी के जीवनकालमें पिलखुवा पहुंचकर उनके अद्भुत संग्रहालयका दर्शन न कर पाया इसका मुझे भारी खेद है। ज्योतिष्मती-परिवार आज अपने एक अनन्य श्रद्धालु सन्मित्र 'भक्त' को खोकर उद्विग्न है। भक्तजी गृहस्थमें रहते हुए भी जीवन्मुक्त सन्तपुरुष थे। उनमें अनेकों अनुकरणीय सद्गुण थे उनमेंसे कुछका उल्लेख श्री सुमनजीने इस लेखमें कर दिया है, अतः श्रद्धाञ्जलि रूपमें यह लेख प्रकाशित करके उनके आत्मजों (चि० शिवकुमार गोयल आदि) से आशा करते हैं कि वे अपने आदर्श पिताके पदचिन्हों पर चलते हुए राष्ट्र और धर्मकी सेवा निरन्तर करते रहेंगे, यही उनको सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। "पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।" —सम्पादक]

भक्त रामशरणदासके निधनसे भारतीय संस्कृतिका आलोक-स्तम्भ ही ढह गया। वे यावज्जीवन सनातनधर्म, भारतीय संस्कृति, संस्कृत तथा हिन्दीके उन्नयनके लिए संघर्ष करते रहे। पूरे पचास वर्षों तक धर्मकी ध्वजा उन्होंने फहराये रखी। १७ वर्षकी अल्पायुसे उन्होंने अपना जीवन धर्म सेवाके लिए समर्पित करनेका संकल्प किया था जिसे उन्होंने आखिरी सांस तक निभाया। इससे उनकी ध्येयके प्रति अनन्य अनुरक्ति और अद्वितीय कर्मनिष्ठाका उदात्त परिचय मिलता है।

भक्तजी कट्टर पुरातनपंथी सनातनधर्मी परम्पराकी कड़ी थे। धर्मशास्त्रों, गाय तथा गो-ब्राह्मणोंके प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। धर्मशास्त्र निष्ठाके कारण वे ब्राह्मणोंके प्रति अति विनम्र व श्रद्धा भाव रखते थे। इस निष्ठाका उन्होंने जीवन भर अविचल भावसे पालन किया। परन्तु सनातनधर्मके अलावा अन्य सम्प्रदायोंके प्रति भी उदारताकी भावना रखते थे। इसी कारण स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, भाई परमानन्द, पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार, महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, पं० बिहारीलाल शास्त्री, श्री अमर स्वामी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री जैसे प्रख्यात आर्यसमाजी संन्यासी तथा विद्वान् उनके पिलखुवा निवास स्थान पर पधारकर, उनके संग्रहालय का निरीक्षण कर आनन्द अनुभव करते थे। अनेक सिक्ख, बौद्ध तथा जैन सन्त भी उनके

निवास स्थान पर पधारकर प्रवचनों द्वारा धार्मिक सन्देश जनताको पहुँचाते रहे।

सनातनधर्मके क्षेत्रमें भक्तजीके विचारों का भारी सम्मान था। प्रख्यात संत उड़िया बाबा, हरि बाबा, आनन्दमयी माँ, स्वामी करपात्रीजी, स्वामी अखण्डानन्दजी सरस्वती, शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी आदिके वे अत्यन्त निकट रहे। धर्मसंघ तथा वर्णाश्रम स्वराज्य संघके प्रत्येक अभियान में उनका सक्रिय योगदान रहा। १९४६ में धर्मसंघके तत्वावधानमें भारत विभाजनके विरुद्ध सत्याग्रह हुआ तो वे 'भारत अखण्ड हो' का उद्घोष करते हुए जेल भी गये। १९६७ में गोहत्याबंदी आन्दोलमें उन्होंने आर्य विद्वान् अमरस्वामीजीके साथ सत्याग्रह किया था।

भक्तजी 'कल्याण' के संस्थापक स्व० भाई हनुमान्प्रसाद पोद्दारके निकट सहयोगी थे। 'कल्याण' के प्रकाशनसे लेकर अब तक उनका उसे सक्रिय सहयोग मिला। भाईजी (पोद्दारजी) उन्हें 'कल्याण-दूत' कहा करते थे। कल्याणके प्रत्येक विशेषांकमें उनका भारी योगदान रहता था तथा उनके संग्रहालयसे संत-महात्माओंके दुर्लभ चित्र, लोक-परलोक, पुनर्जन्म, भूत-प्रेत सम्बन्धी सामग्री उसे प्राप्त होती थी।

पाखण्ड व कुरीतियोंका विरोध :

भक्तजी दृढ़ सनातनधर्मी थे, परन्तु धर्मके नाम पर पनपने वाले पाखण्डके वे प्रबल विरोधी रहे। अपनेको ईश्वरका अवतार बताकर धार्मिक जनताका शोषण करने वाले पाखण्डियोंके खिलाफ जितना उन्होंने लिखा शायद ही किसीने लिखा होगा। उन्होंने ऐसे कलियुगी अवतारोंकी पूरी सूची ही बनाई हुई थी। उनसे स्वयं मिलकर उनके पाखण्ड की प्रत्यक्ष जानकारी लेते थे तथा बादमें उनका भण्डाफोड़ करते थे। भक्तजी सामाजिक कुरीतियोंके भी प्रबल विरोधी थे तथा सादगी, सरलता एवं स्वदेशीके अनन्य समर्थक थे।

वे विवाहों तथा सामाजिक समारोहोंमें भंगड़ा नृत्य, शराबके सेवन तथा भौंडे प्रदर्शन को धर्म विरुद्ध मानते थे। उन्होंने अपने किसी भी पुत्र या पुत्रीके विवाहमें शराब या नृत्यका नंगा नाच नहीं होने दिया। शुद्ध पत्तलों तथा मिट्टीके पात्रोंमें ही भोजन परोसवाकर आदर्श उपस्थित किया। उनकी कथनी करनीमें कभी भी अन्तर नहीं रहा।

दुर्लभ संग्रहालय :

भक्तजीने छोटेसे कस्बा पिलखुवा (उ० प्र०) में अपना चित्र व साहित्य संग्रहालय बनाया हुआ था। इस संग्रहालयमें भारतके धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं, विद्वान् मनीषियों, वीर-वीरांगनाओंके लगभग तीन हजार चित्र उन्होंने श्रद्धाभावसे रखे हुए थे। चित्रोंके अलावा महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, आद्य शंकराचार्य, पद्मिनी आदि सतियों के जन्मस्थानकी पवित्र मिट्टी, पवित्र नदियों का जल, अंग्रेजों द्वारा जब्त दुर्लभ साहित्य, धर्म शास्त्रों, समाचार पत्रोंकी कतरनें आदिका भी उनके पास दुर्लभ संग्रह था।

भक्तजीके इस संग्रहालयमें चारों पीठोंके शंकराचार्य, आनन्दमयी माँ, स्वामी करपात्री जी, महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

आदि पधार कर उसकी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा कर चुके थे। कांग्रेसके वरिष्ठ नेता गोविन्द दास, श्रीमती ललिता-शास्त्री भी पिलखुवा आकर उनसे विचार विनिमय कर चुकी थी। आनन्दमयी मांने पिलखुवा आने पर कहा था "भक्त रामशरणदास सफेद वस्त्रोंमें सन्त हैं।"

भक्तजीका जन्म पिलखुवाके प्रख्यात धनाढ्य वैश्य जमींदार ला० नारायणदास बफैड़ावालोंके घर हुआ था तथा वे अपने पिताके इकलौते पुत्र थे, परन्तु फिर भी उन्होंने स्पष्ट रूपसे जमींदारीके किसी भी काममें रुचि लेनेसे इन्कार कर दिया था। गाजियाबाद के सनातनधर्म स्कूलमें अध्ययनके दौरान वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान् पुरीके शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थके सम्पर्कमें आये। उनसे प्रभावित होकर उन्होंने अपना जीवन अध्यात्मवादके प्रचार व प्रसारमें लगाने का संकल्प लिया। इसके बाद प्रसिद्ध सन्त श्री उड़िया बाबा (स्वामी अखण्डानंदजीके गुरु) के निकट सम्पर्कमें आकर उनके साथ पद-यात्रायें कीं। उन्होंने गृहस्थीके चक्करमें पड़नेसे इन्कार कर दिया था।

बादमें उनके पिता लाला नारायणदासकी प्रार्थना पर उड़िया बाबाने उन्हें विवाह कराने का आदेश दिया। विवाह कराने तथा पुत्र-पुत्रियोंके बावजूद वे घर-गृहस्थके प्रति हमेशा निर्लिप्त ही रहे।

लेखनके क्षेत्रमें

भक्तजीने धर्मके विभिन्न पहलुओं, लोक-परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयों पर तो लिखा ही, साथ ही तम्बाकू, शराब, मांस आदि दुर्व्यसनोंके खिलाफ "सब पापोंकी जड़ चाय तम्बाकू" जैसी पुस्तक भी लिखी। एक मनोरंजक शास्त्रार्थ, गोमहिमा, भारत-महिमा, ब्राह्मण-महिमा, पुराणोंका महत्व, गांधीजीकी विचित्र अहिंसा जैसी पुस्तकें भी बच्चोंके लिए लिखीं। तथा पौराणिक-कहानियां भी वे समय-समय पर लिखते रहे। पुनर्जन्म, लोक-परलोक तथा तन्त्र-मंत्र उनके प्रिय विषय रहे। जब कभी उन्हें पता चलता कि अमुक स्थान पर पुनर्जन्मकी कोई घटना घटी है, तो वे स्वयं वहां पहुँचकर उसकी वास्तविकताकी जांच करते। भूतप्रेतकी घटनाओंका पता लगाकर दूधका दूध-पानीका पानी करनेकी कोशिश करते।

गायके महत्वके प्रति भी उन्होंने भारी खोज की। गोमूत्र, गोबर आदिमें क्या तत्व हैं, गाय पूज्य क्यों हैं, आदि विषयोंके तो वे महान् ज्ञाता थे। गोदुग्ध तथा तुलसीको वे जीवनी शक्ति और अमृतकी संज्ञा देते थे।

व्यक्तिगत आचार-विचार व खानपानमें वे अत्यन्त कट्टर थे। जीवनमें कभी भी उन्होंने घरसे बाहरका भोजन नहीं किया। लखपति परिवारमें होते हुए भी लकड़ीकी खड़ाऊं पहनीं, बिना प्रेसके मोटे वस्त्र धारण किये तथा अपने शरीर व वस्त्रोंको साबुन नहीं लगने दिया।

भारतीय संस्कृतिका यह आलोक स्तंभ कड़े आचार-विचार व नियमों के कारण अनेक शारीरिक व्याधियोंका शिकार होता गया। अन्तमें ६७ वर्षकी आयुमें १६ अक्टूबर ८१ को भगवन्नाम जाप करते हुए गोलोकवास प्रयाण कर गया। निधनसे एक महीने पहले

ही उन्होंने अपने युवा पौत्र चि० नरेन्द्र योयल (सुपुत्र श्री शिवकुमार गोयल) के हाथों "धर्मदूत" पाक्षिकका प्रकाशन शुरु कराया था। निधनसे तीन दिन पूर्व उन्होंने अपने हाथोंसे "श्रेष्ठ मृत्यु किसकी होती है" शीर्षक वाक्य अंकित किये थे जिसमें लिखा था—"ब्रह्मचिन्तन करते हुए मरना अथवा युद्ध क्षेत्रमें मातृभूमिकी रक्षाके लिये जूझते हुए प्राण देने से बढ़कर श्रेष्ठ मृत्यु नहीं हो सकती।"

भक्तजीका मुझसे अत्यन्त निकटका स्नेह था। वे आयुमें मुझसे बड़े थे, परन्तु ब्राह्मणके नाते मुझे बराबर सम्मान ही देते रहे। मैं जब कभी पिलखुवा जाकर उनसे भेंट करता वे अपने पासकी दुर्लभ सामग्री व घटनाओंकी मुझसे चर्चा करते। यह प्रसन्नताकी बात है कि भक्तजीके ज्येष्ठ पुत्र श्री शिवकुमार गोयल ने भी पत्रकारिता तथा साहित्यिक क्षेत्रमें उनका अनुकरण करनेका सफल प्रयास किया है।

उन्हें मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री पं० शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य मोहन नगर फीरोजाबाद आगरा]

त्रैमासिक व्यापार हाज़िर एवं व्यापार वस्तु मात्र वायदा भविष्य ता० १० जनवरी सें ८ अप्रैल सन् १९८२ ई० माघ कृष्णा १ प्रतिपदासे चैत्र शुक्ला १५ पूर्णिमा सं० २०३९ वि० तक। ता० २३ दिसम्बर १९८१ को राहु ने मिथुन राशि पर केतुने धनु राशि पर प्रवेश किया है। राहु केतु उपरोक्त राशि परिभ्रमण-कालमें चांदी व स्वर्णका नीचेसे नीचा भाव बना देगा। चांदी दिल्ली सराफा भाव २९००) २६२०) रु० स्वर्ण विठूर १७१७) १७२५) रु० भाव चल रहा है। चांदी सन् १९८३ ई० तक नीचा भाव १४००) १४५०) रु० सोना १३५०) १४००) रु० ऊंचेमें चांदी २९३०) २९५०) रुपये सोना १८५०) १९००) रु० लगभग भाव बन सकते हैं। मिथुने राहु का प्रभाव सफेद वस्तु मात्र पर मन्दीका विशेष रूपसे पड़ेगा। रुई कपासके जो भाव सितम्बर १९८१ ई० तक बन चुके हैं वह ऊंचे भाव सन् १९८२ ई० में सम्भवत: क्रौस नहीं होने चाहिये। ता० ३ दिस० को मंगलने कन्या राशि में प्रवेश करके शनिसे कन्या राशिमें २२ जु० १९८२ ई० तक परिभ्रमण किया है। उपरोक्त योग विश्वमें युद्धोन्माद अराजकता महंगाईको अपने अधीनस्थ वस्तुओंमें चरमसीमा पर ला देगा। ता० ९ जनवरी १९८२ ई० पौष शुक्ला पूर्णिमा शनिवारा ऐन्द्र योग चन्द्र ग्रहण वस्तु मात्र एवं धान्यादि दालदाना तिलहन तेलबीयां में तेजीको प्रोत्साहन देगा।

पौष शुक्ला पूर्णिमा शनिवार चन्द्र ग्रहण जिन वस्तुओंमें ९ जनवरी तक तेजी बनी है इनमें भविष्यमें मन्दी बनेगी, मन्दी वस्तुओंमें तेजी बनेगी। मार्केटका रुख देखकर व्यापार बढ़ाओ। पौष मासका ग्रहण मन्दी लाकर

भयंकर तेजी लाता है एवं युद्ध अराजकताका प्रतीक है। ता० १० जनवरीको बुध-शुक्रकी युति हुई है, ता० ६ जनवरीको ११ जनवरीके जोटा या नजराने लगादो, माल कमालोगे। मेरा ध्यान मन्दीका है। १३ जनवरीको सूर्य राहु प्रतियुति रुई कपास चांदी सोना गुड़ खांड चीनी प्रत्येक धान्यादि दालवाना तिलहन तेलवीयां समस्त शेयर्सोंमें जनरल रुख मन्दी का रहेगा। ता० ६ जनवरीको बेचो, अथवा आठ दिनके मन्दे लगादो। अगर साधारण भी लाइन खिलाफ चले सौदा तुरन्त काट दो। ११।१२।१३।१४ जनवरीमें मन्दी प्रधान रहेगी। ता० २८ जनवरीको दैत्याचार्य शुक्र का अस्त होकर ता० २२ जनवरीको उदय हुआ है, ओला-हिमपात तूफान अतिवृष्टिका योग सर्वत्र सम्पन्न होगा। धान्यादि दालवाना तिलहन तेलवीयां गुड़ खांड चीनी रुई कपास मिल शेयर्स पाट जूट वारदाना चांदी सोना आदिका बेचान करदो, २५ जनवरी तक मारकेटमें रुख मन्दीका रहेगा। २५ जनवरी को माघ कृष्णा ३० सोमवती अमावस्या सूर्य-ग्रहण है। यह ग्रहण भारतमें नहीं दीखेगा, यहांसे पिछली बनी चालू लाइन पलटेगी। ता० ६ जनवरीसे २३ जनवरी तक मेरा ध्यान ग्रह योगानुसार उपरोक्त वस्तु मात्र पर मन्दी का है। ता० २१ जनवरी में आई मन्दी रुई कपास मिल शेयर्स पाट जूट वारदाना खरीदो, २२।२३ के नजराने तेजीके लगादो, बन्द पर नफा उठा लो। २६ जनवरीको प्लूटो वक्री हुआ है, ३१ जनवरीको शनि वक्री हुआ है, उपरोक्त दोनों योग रुई कपास चांदी सोना धान्यादि दालवाना गुड़ खांड चीनी किराणा खुश्क मेवा आदिमें तेजीकी लम्बी लाइनका परिचायक है। शनि अपने वक्रत्व कालमें अलसी अरण्डामें २५) ३५) रु० तेल मूंगफली सरसों विनौला खली तिल्ली तेल खोपरा करड़ी तेल १० किलो पर १५) रु० २५) रु० की लाइनका संचार करेगा। जिन व्यापारी मित्रोंने जनवरीसे मार्च तक अच्छी कमाई नहीं की तो भविष्यमें इतने तूफानी चांस प्राप्त नहीं होंगे।

स्पेशल चांस—ता० ३० जनवरी तक आई मन्दी रुई कपास चांदी सोना प्रत्येक तिलहन तेलवीयां पाट जूट वारदाना समस्त शेयर्स गुड़ खांड चीनी धान्यादि दालवाना एवं किराणामें हल्दी कालीमिर्च धनियां जीरा लाल मिर्च पोस्ता कत्था आदि वस्तु खरीदो। जनरल लाइन यहांसे तेजीकी चालू हो जाती है। व्यापार वायदाकी वस्तु मात्र खरीदो अथवा १।२ फरवरीकी तेजी लगादो माल कमालोगे। ता० ४ फरवरीको पाट जूट वार-दाना गुड़ खांड चीनी प्रत्येक शेयर्स धान्यादि दालवाना किराणा वस्तु तिलहन तेलवीयां व्यापार वायदा एवं हाज़िरमें खरीदो अथवा वायदेमें ८ दिनकी तेजी लगादो, ५।६।७।६।१० फरवरीमें अच्छी तेजी बनेगी। २० फरवरी तक आई तेजी बेचो, ४ फरवरी तक व्यापार वायदामें उपरोक्त वस्तुओंमें रुख मन्दीका रहेगा।

स्पेशल चांस—ता० १६ जनवरीसे रुई कपास गुड़ खांड चीनी तिलहन तेलवीयां प्रत्येक धान्यादि दालवाना मिल शेयर्स एवं किराणा वस्तु मात्र खरीदो, जनरल लाइन यहांसे तेजीकी चालू होगी। रबीकी फसल नष्ट

होगी । शीत हिमपात ओला तूफान रोली कीड़ा भूकम्प आदि द्वारा फसल नष्ट होगी। व्यापार वायदा वस्तु मात्रमें ता० २० फरवरी को खरीदो, या २१।२२ फरवरीकी तेजी लगा दो । ता० २४ फरवरी में आई मन्दी खरीदो, या २५ की तेजी लगादो । तेजीका नफा वायदा वस्तुका उठालो । ता० १० मार्चको हर्षल वक्री हुआ है, आई मन्दी रुई कपास गुड़ खांड चीनी तिलहन तेलवीयां खरीदो, १३ मार्च तक रुख तेजीका रहेगा । ता० २६ मार्चको नैपचून वक्री हो गया है ३१. मार्च तक उपरोक्त वस्तुओंमें जनरल रुख तेजीका रहेगा । फाल्गुन मासमें मंगल व गुरुका वक्री होना उत्पातोंका सूचक है । फसल नष्ट होगी प्रत्येक तिलहन तेलवीयां धान्यादिमें विशेष तेजी वनेगी, गुड़ खांड चीनीमें रुख तेजीका रहेगा, किसी उच्च कोटिके नेताकी दुर्घटना में मृत्यु होगी । अफगानिस्तान युद्ध स्थल बनेगा ।

★

खग्रास चन्द्रग्रहण

पौष शुक्ल १५ शनिवार दिनाङ्क ६-१० जनवरी १६८२ ई० को अर्द्धरात्रिमें होगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत, नेपाल, भूटान, ब्रह्म-देश, बंगलादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफ-गानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब राष्ट्रमें खग्रास दिखाई देगा । इस खग्रास (पूर्ण ग्रस्त) चन्द्रग्रहणका भारतीय स्टेण्डर्ड टाइममें स्पर्शादि-काल इस प्रकार है--

(स्पर्श ग्रहण प्रारंभ) घं. २३ मि. ४४, ६ जन.
सम्मीलन (खग्रास प्रारंभ) घं. ० मि. ४८, १० „
ग्रहण मध्य घं. १ मि. २७, „ „
उन्मीलन (खग्रास समा) घं. २ मि. ६ „ „
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति) घं. ३ मि. ६,१० जन.
पर्वकाल (ग्रहणका कुल समय) ३ घंटे २५ मिनट है

१० जनवरी ८२ को मध्यरात्रि १२ बज कर ४८ मिनटसे २ बजकर ६ मिनट तक (१ घंटा १८ मिनट) चन्द्रबिम्ब भूछायासे पूरा ढका रहेगा । इसे खग्रासस्थिति कहा जाता है।

ग्रहणका सूतक—इस ग्रहणका सूतक मध्याह्न बाद स्टे. टा. २।४४ पर लगेगा। सूतकमें भोजनादि करना निषिद्ध है । बाल, वृद्ध, रोगियोंके लिए सूतकमें भोजनादिका दोष नहीं है ।

ग्रहणका राशिफल—यह ग्रहण पुनर्वसु नक्षत्र और मिथुन राशिमें हो रहा है, अतः इस नक्षत्र-राशि वालोंके लिए विशेष नेष्ट है । कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालोंको अशुभ है । वृष, तुला, धनु, कुम्भ राशि वालोंको मध्यम है । मेष, सिंह, कन्या, मकर राशि वालोंको शुभ है ।

ग्रहणका फल—पौष मासमें चन्द्रग्रहण होनेसे बर्षाकी कमी रहे । गेहूँ चना आदिमें तेजी आवे । शनिवारका ग्रहण है अतः अलसी सरसों, तेल, पीले व लाल वस्त्र, ज्वार, बाजरा आदि संग्रहसे दो मासमें लाभ हो । मिथुन राशिमें ग्रहण होनेसे व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी होगी । पुनर्वसु नक्षत्रमें ग्रहण है अतः रुई, कपास, पाट, वारदाना, चावल, धान्य, गेहूँ, चना, जौ, मटर, अरहरका संग्रह तीन मासमें लाभ देगा ।

व्यापार वाणी

(माघ, फाल्गुन, चैत्र)

[लेखक :—श्री पं० शंकर लाल गौड़ "शंभु कवि दूरा–आगरा]

माघ मास सं० २०३८ वि०

माघमासका प्रारंभ रविवारको हुआ है इस मासमें पांच रविवार हैं तथा सोमवार पांच हैं, अतः मासका फल मिश्रित है। सोमवती अमावस्याका फल सुधारके पक्षमें है। राजनैतिक बढ़ता हुआ तनाव शीघ्र समाप्त होगा। पूर्वमें शुक्रका उदय कहीं-कहीं खण्ड वृष्टिकारक है तथा मावटके प्रायः अच्छे योग बनते हैं, फसलके लिए कोई हानिके योग नहीं बन रहे हैं। एक राशि पर शुक्र-बुधका होना धान्योंमें तेजी, विशेषतः चना, गेहूँ, मटर, दाल-वानामें विशेष तेजी आती है। पड़ौसी राष्ट्र बिष वमन उगलें तो कोई आश्चर्य न होगा। पर्वतीय भागोंमें हिमपात, सुदी पक्षमें तिथि ५ से १२ तक विशेष रूपमें होगा। वायुसंचार के भी योग बनते हैं। दिल्लीके आस पास विशेष शीत लहरसे जनवर्ग त्रस्त होगा। सुदी पक्षमें तिथिका क्षय दृश्य गणितानुसार हो रहा है अतः विशेष रूपमें हिंसा, अराजकता कहीं-कहीं देशमें भड़क उठेगी। सुदी पक्षमें हिमपात से तिथि ८ से १४ तक विशेष हानि फसलमें राजस्थान, मध्यदेश, उत्तरप्रदेशके पूर्वी भागों में दृष्टिगोचर होती है। कन्याका शनि वक्री है अतः राष्ट्रोंमें युद्ध संभावित होंगे, तथा दुर्भिक्षका भी सूचक है। वक्री धनु शुक्र भी संसारमें विश्वयुद्धकी चिनगारियां बड़े राष्ट्रों के द्वारा भड़काने वाला सिद्ध होता है। कहीं-कहीं उपल वृष्टिसे हानि भी संभव हो सकती है। तिथि १० से १४ तक वायुवेग सर्दीका विशेष बढ़ेगा। तथा बादल वर्षाके भी आक-स्मिक योग बनते हैं।

फाल्गुन मास सं० २०३८

फाल्गुन मासमें पांच मंगलवार तथा अमावस्या मंगलवारकी युद्धोन्मादकी स्थिति बनाती है। मुस्लिम राष्ट्रोंमें परस्पर विरोध तथा कहीं-कहीं युद्ध भी भयंकर हो सकते हैं। पाकके उच्च नेताओंका विवेक इस मासमें जाता रहेगा। अतः भारतके विरोध पक्षमें अपनी भूमिका निभायेंगे। मंगल शनि दोनों कन्या राशिमें इस मासमें वक्री हैं अतः रेल दुर्घटना तथा हिंसा चोरी डकैत भय कहीं-कहीं विशेष रूपमें दृष्टिगोचर होगा, तथा जनताको इन व्याधियोंसे इस मासमें छुटकारा न मिल सकेगा। शनि वक्रीसे महामारी, चौर डकैतों से मार्ग अवरुद्ध होता है यथा :—"शनिवक्रे महामारी रौरवं च भयं पथि। धनंधान्यं च वस्त्रं च रुण्ड मुण्डा च मेदिनी।।" गुरु वक्री भी इस मासमें है, अतः अनिष्ट फल प्राप्त होता है। इस मासमें संक्रान्ति फाल्गुन कृष्णा ४ शुक्रवार को लगी है अतः तिल तैल किराना वस्तुमें तेजीका वातावरण बनेगा। कृष्णपक्षमें मार्गी बुध शुक्रका होना घृत रसादि वस्तुमें मंदीका वातावरण आकस्मिक बनेगा। मंगलवारकी पूर्णिमा भी अशुभ तथा अनिष्ट सूचक है,

जनतामें नये उपद्रव राजनीतिसे पीड़ित होनेके कारण हो सकते हैं। इस मासके सुदि पक्षमें तिथिक्षय विशेषकर पश्चिमी राष्ट्रोंको अशुभ है।

चैत्रमास सं० २०३८-३६ वि०

चैत्र कृष्णपक्ष पंचमी रविवारको मीन का सूर्य होना रुई कपास ऊनी वस्त्र चांदी सोनाके भावोंमें कुछ गिरावट होगी। मासका प्रारंभ बुधवारको हुआ है तथा अमावस्या भी गुरुवारको शुभ है, तिथि १० शनिवारको सूर्य-देव उत्तर गोलेमें जा रहे हैं अतः आगामी वर्ष संवत् २०३६ वि० में भीषण गर्मी झंझावातके योग बनते हैं। विषूचिका, अतिसार, ज्वरादि की पीड़ासे प्रजा कष्ट उठायेगी।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जनवरी १९८२ ई०

ता. ९ शनिवार–पौषी पूर्णिमा माघ स्नान प्रयाग अर्धकुम्भ मेला प्रारम्भ, सत्यव्रत, खग्रास चन्द्रग्रहण।
१२ मंगलवार–संकटहरणी गणेशचौथ व्रत
१३ बुधवार–लोहड़ी महोत्सव पंजाबमें।
१४ गुरुवार–मकर संक्रान्ति पुण्यकाल गंगासागरयात्रा प्रयागअर्धकुम्भ प्रथम स्नान
१६ शनिवार–श्रीस्वामी विवेकानन्द जयन्ती
२० बुधवार–षट्तिला ११ व्रत।
२२ शुक्रवार–प्रदोषव्रत, मेरु १३ (जैन)
२३ शनिवार–श्रीसुभाषचन्द्रवसु नेताजी ज.
२५ सोमवार–सोमवती मौनी अमावस्या, प्रयागराज अर्धकुम्भपर्व मुख्यस्नान।
२६ मंगलवार–गणतन्त्रदिवस, चन्द्रदर्शन
३० शनिवार–वसन्तपंचमी सरस्वती ज. म. गांधीनिर्वाण दि. अर्धकुम्भ तृतीय स्नान

फरवरी १९८२ ई०

ता. ४ गुरुवार–जया ११ व्रत स्मार्त्त वैष्णव।
५ शुक्रवार–भीष्म १२ जया ११ निम्बार्क.
६ शनिवार–शनिप्रदोष व्रत।
७ रविवार–सत्यव्रत, रथयात्रा जैनपर्व, श्री रामचरणमहाप्रभु जयन्ती रामस्नेही सं.
८ सोमवार–माघी पूर्णिमा अर्धकुम्भ प्रयाग मेला समाप्त। श्रीरविदास जयन्ती।
११ गुरुवार–श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।२१
१२ शुक्रवार–कुम्भमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०
१७ बुधवार–श्री समर्थ रामदास ९
१९ शुक्रवार–विजया ११ व्रत सबका।
२१ रविवार–प्रदोषव्रत।
२२ सोमवार–श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत
२३ मंगलवार–अमावस्या पुण्यकाल।
२५ गुरुवार–चन्द्रदर्शन मु० ३० श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती।

मार्च १९८२ ई०

ता. २ मंगलवार–होलाष्टकारम्भअष्टाह्निकव्र.
५ शुक्रवार–आमला ११ व्रत स्मार्त्तोंका।
६ शनिवार–आमला ११ व्रत वैष्णव सं०
७ रविवार–प्रदोषव्रत।
९ मंगलवार–सत्यव्रत, होलिकादाह, हुताशनी पूर्णिमा, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयंती अष्टाह्निक जैनव्रत समाप्त।
१० बुधवार–धुलेण्डी होला १ मेला आनन्द.
११ गुरुवार–सन्त तुकाराम जयन्ती।
१३ शनिवार–श्रीगणेश ४ व्रत।
१४ रविवार–रंग ५ मीनमें सूर्यसंक्रान्ति
१७ बुधवार–श्रीशीतला सप्तमी पूजन।
२१ रविवार–पापमोचनी ११ व्रत सबका।
२२ सोमवार–सोमप्रदोषव्रत।
२४ बुधवार–चैत्री १४ मेला पृथूदकपिहोवा
२५ गुरुवार–अमावस्या पुण्यकाल।
२६ शुक्रवार–गुड़ीपड़वा, नववर्ष नवरात्रारम्भ
२८ रविवार–गणगौरी ३ पूजन।
३० मंगलवार–स्कन्द षष्ठी।

अप्रैल १९८२ ई०

ता. १ गुरुवार–श्रीदुर्गाष्टमी मेला मनसादेवी हरयाणा जैन ओली प्रारंभ।
२ शुक्रवार–श्रीरामनवमी व्रत।
४ रविवार–कामदा ११ व्रत सबका।
५ सोमवार–सोम प्रदोष व्रत।
६ मंगलवार–श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
७ बुधवार–सत्यव्रत।
८ गुरुवार–चैत्री १५ जैन ओली समाप्त।

त्रैमासिक व्यापार-दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन अर्घकाण्ड-वाचस्पति, मैंनपुरी उ० प्र०)]

[यह लेख बहुत विलम्बसे १७ दिसम्बर ८१ को मिला अत: संक्षेपमें छापना पड़ा। स्थानाभावके कारण 'चेतावनी' विज्ञापन भी न छप सका। भविष्यमें विद्वान् लेखक समयका ध्यान रक्खा करें। आगामी अंकके लिए सब लेख ८ फरवरी ८२ तक पहुँचने आवश्यक हैं।

—सम्पादक]

माघ मास

इस मासमें उ० प्र० हरयाना पंजाब राजस्थान म० प्र० में जहां भी जितनी जोरसे दक्षिणी वायु चलेगी, तदनुसार वहां वर्षा भी निश्चित रूपसे होती रहेगी। पूर्वी वायु चलने पर सरसोंमें कीड़ा लग जावेगा तथा लाल रंग के घोर बादल होनेसे उस क्षेत्रमें ओलापात तेजीका कारण होगा। १० जनवरीको १२ बजेसे कल तक तथा आज १।२४ बजे तक गुड़ खांडके साथ सभी वस्तुयें मन्दी, किन्तु ता० १३ को प्राय: सभी वस्तुयें तेज। ता० १४ को सब वस्तुयें बढ़े भावोंमें बेचना उचित होगा। ता० १७ को ३ बजेसे ता० २० तक तिलहन मन्दे, गुड़ खाँड सोना चांदी तेज। ता० १८-१९ को सभी वस्तुओंमें मन्दीका झटका। ता० २२ को रातसे ता० २८ तक तेज वस्तुयें बढ़े भावों बेचना। ता० २३ वस्तुओंकी चलती लाइनमें जबर्दस्त परिवर्तन, व्यापारकी सभी तेज वस्तुयें बढ़े भावोंमें बेचना। ता० २४ को सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन आलू सुपारी गुड़ खांड तेज। किन्तु ता० २५ को सभी खाद्य वस्तुओंमें भयानक मन्दी आनेकी आशंका है, अत: चलते रुखका उपयोग करना उचित होगा। ता० २८ शुक्ला ४ से रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कागज़ कालीमिर्च १ मासमें तेज, ता० १९ को २ बजे वस्तुओंके चलते रुखको अस्थायी रूपसे एकदम बदल देगा। शुक्ला ७ से ८ दिनमें जहां भी बादल वर्षा बूंदाबांदी जिस क्षेत्रमें होगी, वहां आगामी वर्षाकाल भी निश्चित रूपसे श्रेष्ठ रहेगा, परीक्षित है। १ फरवरीको शुक्ला ८ सोमवारी के क्षयसे घी तेलमें भयानक तेजी भी आ सकेगी। आज ही सवेरे सूर्य-बुधकी अन्तर्युति सभी वायदोंमें २४ जनवरीसे विपरीत जोरदार चाल देगी। ता० ३।४।५ को मन्दी, ता० ६ तेजी। ता० ७ को १२ फरवरी ६२ की भांति सरसोंमें भयानक मन्दी भी सम्भव, अन्य तिलहन भी प्रभावित होंगें। माघी पूर्णिमाको आश्लेषा नक्षत्र आगे तूफानी चाल देगा।

फाल्गुन मास

९ फरवरी को २ बजेसे ता० १२ तक तिलहन-दलहन मन्दे, ता० ११ को सभी वस्तुओंमें तेजी सम्भव, अथवा १ जनवरी ८२ से विपरीत चाल होगी। रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कागज कालीमिर्चमें मन्दा, अन्य सभी वस्तुओंमें भयानक चाल होगी। ता० १२ की रातसे तिलहन-दलहन ग्वार ज्वार बाजरा मसूरमें मन्दा, गुड़ खांड सोना चांदी सर्वधातु रुई चावल किराना लालमिर्च तेज

होगी। ता० १३ को १ बजे ता० ७-८ से चली लाइन बदले अथवा मन्दा भी हो सकेगा। प्रसंग देखिये। कृष्णा ६ चित्रा संयोगी तेज वस्तुयें बेचनेकी राय देता है ता० १४ को १ जनवरी ८२ की भांति पुनः मकर राशिमें बुध+शुक्र योगसे बादल वर्षा सम्भव किन्तु यहां पर यह योग सूर्यसे पीछे है अतः वहांसे चली लाइन यहां बदल भी सकेगी। गुड़ खांड सोना चांदी शेयर्स तिलहन-दलहन ज्वार बाजरा मक्का गुवार होली तक तेज हो सकेगा। ता० १७ को श्रवणे बुधसे गेहूँ तिलहन सोना चांदी मन्दे, गुड़ खांड चना चावल गुवार ज्वार बाजरा मक्का मसूर तेज, ता० १९।२० को सभी वस्तुयें तेज। ता० २१ को शनियुक्त वक्री भौम से आगे सभी वस्तुओंमें शिव-चतुर्दशीसे सदैव की भांति यहां अकल्पित तेजी-मन्दीसे व्यापारी वर्ग पर संकट आवेगा। १४ फरवरी ४६ को (फाल्गुनमें) गुड़का सट्टा बन्द होकर सभी वस्तुओंमें सोना चांदी समेत भयानक मन्दा चला था, अतः वायदेमें ता० २० को बन्द पर जी भरके दोनों गली लगादें। यहां मंगलवारी अमावसको "शनिअङ्गारक योग" महान् सङ्कट पूर्ण स्थिति लाकर व्यापारमें तहलका मचा देगा। सावधान! ता० २४ को दक्षिणी हिन्द में सभी खाद्य वस्तुयें तेज। उत्तरमें सुभिक्ष (मन्दा) किन्तु शुक्ला १ बुधवारी होनेसे गुड़ खांड गुआर चना हल्दी मेथी धनियां लाल-मिर्च सोंफ सोंठ अजवाइन आलू प्याज लहसुन विशेष तेज, पीछे कार्तिक शुक्ला १ बुधवारी, यहां भी यही योग होनेसे ४-५ मासमें रुई पाट सूती रेशमी धागा कपड़ा कालीमिर्च २०३५-३७ की भांति एकदम विशेष तेज, सुपरीक्षित योग है। आज ही ११ बजे गुरु वक्री (शनि-मंगल-गुरु तीन ग्रह वक्री) सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल एलमोनियम स्टैनलेस स्टील गेहूँ जौ चना मसूर ग्वार रुईके साथकी वस्तुयें—तम्बाकू किराना देशी घी तेल गुड़ खांडमें भी तेजीका दौर चले आश्चर्य नहीं, किन्तु शनिके साथ गुरु भी वक्री होनेसे रुईके साथकी वस्तुओंमें भयानक मन्दा भी सम्भव है। ता० २५ रुई तथा अन्न तिलहन-दलहन गुड़ खांड तेज, किन्तु ता० २६ से ता० २८ तक सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, ता० २७ को ढाई बजेसे तिलहन शेयर्स वायदे तेज, किन्तु सरकारी बजटका भी ध्यान रखिये।

१ मार्चको सवा दो बजेसे कल तक तिल-हन वायदे मन्दे, शेयर्स सोना-चांदी तेज। ता० २ को सवा दो बजेसे सभी वस्तुयें आज मन्दी। ता० ४ को चावल तेज सभी वस्तुयें मन्दी। ता० ५ को सभी वायदे तेज। ता० ८ को सभी वायदे मन्दे। ता० ९ को गुड़ खांड मसूर मटरमें अच्छा मन्दा। १ बजेसे सभी वायदे तेज, रातको मंगलवार पू०फा० नक्षत्रमें होलिका दहनका फल:—"मंगलवारी महिडुलै, बुद्धहिं परै अकाल। शनिवारी होरी जरै राजा बचै न राव।" मंगलवारी होली भूकम्प सूचक तो कभी-कभी उत्पातकी अधिकतासे पृथ्वी कम्पायमान हो जाती है। होली जलते समय उ० प्र० हरयाना पंजाब राजस्थान म० प्र० में जहां भी पूर्व-पश्चिम-पूर्वोत्तर कोण उत्तरकी वायु चले तो वहां आगामी वर्षाकाल श्रेष्ठ, पश्चिमोत्तर कोणकी चले तो वहां वायुका जोर। दक्षिण पश्चिमदक्षिण कोणकी चले तो वहां वर्षानाश, पूर्व-दक्षिण-पश्चिमोत्तर (प्रदक्षिण